ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
સસક / 1013 / 175 / છ, તા. 3-4-2013 - થી મંજૂર

संस्कृत

कक्षा 9

प्रतिज्ञापत्रम्

भारतं मम देशः ।
सर्वे भारतीयाः मम भ्रातरः भगिन्यः च सन्ति ।
मम मानसे देशस्पृहा अस्ति । समृद्धिसहितं
विविधतापरिपूर्णं तस्य संस्कृतिगौरवम् अनुभवामि ।
अहं सदा तत्पात्रं भवितुं यत्नं करिष्यामि ।
अहं मम पितरौ आचार्यान् गुरुजनान् च प्रति
आदरभावं धारयिष्यामि ।
प्रत्येकेन सह शिष्टव्यवहारं च करिष्यामि ।
अहं मम देशाय देशबान्धवेभ्यः च मम निष्ठाम् अर्पयामि ।
तेषां कल्याणे समृद्धौ च एव मम सुखम् अस्ति ।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

ગુજરાત રાજ્ય શાલા પાઠ્યપુસ્તક મંડલ
'વિદ્યાયન', સેક્ટર 10-એ, ગાંધીનગર-382010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं । इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की बिना लिखित अनुमति के प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

विषय-सलाहकार

श्री सुरेशचंद्र जे. दवे

लेखन-संपादन

डॉ. कमलेशकुमार छ. चोक्सी (कन्वीनर)

डॉ. मनसुख के. मोलिया

डॉ. मोहिनी डी. आचार्य

श्री पूर्णिमा एल. दवे

श्री महारुद्र के. शर्मा

श्री स्मिताबहन बी. जोषी

अनुवाद

श्री राजेशसिंह एस. क्षत्रिय

डॉ. नंदिता शुक्ला

डॉ. किशोरीलाल कलवार

समीक्षा

श्री महेशभाई बी. उपाध्याय

श्री विजयकुमार तिवारी

श्री जगन्नाथसिंह पी. चौहान

डॉ. महाकान्त जे. जोशी

चित्रांकन

श्री अंकुर सूचक

संयोजन

डॉ. क्रिष्ना दवे

(विषय-संयोजक : अंग्रेजी)

निर्माण-आयोजन

श्री हरेन शाह

(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया

(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन. सी. ई. आर. टी. तथा NCF-2005 के दस्तावेजों के अन्तर्गत नए अभ्यासक्रम की पाठ्यपुस्तक में तथा शिक्षण-प्रक्रिया में परिवर्तन लाना जरूरी होने का निर्देश किया गया है । इस सन्दर्भ में गुजरात राज्य माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड ने अभ्यासक्रम तैयार किया है । गुजरात सरकार द्वारा स्वीकृत हुए **कक्षा 9** के **संस्कृत** विषय के अभ्यासक्रम के आधार पर प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है । इस पाठ्यपुस्तक को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मंडल आनंद का अनुभव कर रहा है ।

इस पाठ्यपुस्तक में संस्कृत के भाषाकीय, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक वैविध्य को ध्यान में रखा गया है । आवश्यकतानुसार उसमें वयकक्षानुसार संपादन तथा स्वतंत्र पाठ की संरचना की गई है । संस्कृत संभाषण के सभी अंगों को पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है । संस्कृत भाषा का सघन परिचय कराने के लिए सभी पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी गई है । संस्कृत साहित्य के विविध स्वरूपों को प्रधानता दी गई है । प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक द्वारा विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता, विचार-शक्ति और तर्क-शक्ति को विकसित करने का तथा उसके अनुरूप सर्वांगीण विकास एवं अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध हो इस प्रकार पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है ।

इस पाठ्यपुस्तक को तैयार करने से पहले इसकी हस्तप्रति का अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षकों और विषय-विशेषज्ञों द्वारा हर दृष्टिकोण से समीक्षा करवाई है । शिक्षकों और विशेषज्ञों की सूचना के अनुसार हस्तप्रति में परिवर्तन और संवर्धन करने के बाद इसे प्रकाशित की है । इस पाठ्यपुस्तक की संरचना में जिन्होंने अथक प्रयत्न करके सम्पूर्ण सहयोग दिया है, उन सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं ।

पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी और क्षतिरहित बनाने में मंडल ने पूरी सावधानी रखी है, फिर भी शिक्षण में रुचि रखने वाले व्यक्तियों द्वारा पाठ्यपुस्तक की उत्कृष्टता का स्तर सुधारने हेतु आने वाले सुझावों का स्वागत है ।

पी. भारती (IAS)

नियामक

कार्यवाहक प्रमुख

दिनांक : 04-11-2019

गांधीनगर

प्रथम आवृत्ति : 2013, पुनःमुद्रण : 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से पी. भारती, नियामक

मुद्रक :

मूल कर्त्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह* –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

अनुक्रमणिका

1.	समर्चनम्	1
2.	कुलस्य आचार:	5
3.	परं निधानम् क:	9
4.	वलभी विद्यास्थानम्	14
5.	सुभाषितवैभव:	18
6.	सर्वं चारुतरं वसन्ते	21
7.	संहति: कार्यसाधिका	24
8.	काषायाणां कोऽपराध:	29
9.	उपकारहतस्तु कर्तव्य:	34
10.	दौवारिकस्य सेवानिष्ठा	38
11.	वेदितव्यानि मित्राणि	43
12.	सुभाषित–सप्तकम्	47
13.	दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तम्	50
14.	हनुमद्वर्णितरामवृत्तान्त:	56
15.	सुदुर्लभा सर्वमनोरमा वाणी	60
16.	अगेय स भविष्यति	64
17.	आचार्य: चरक:	67
18.	बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता	71
19.	विनोदपद्यानि	75
20.	संस्कृतभाषाया: वैशिष्ट्यम्	79
•	अभ्यास 1 : पुनरावर्तनम्	84
•	अभ्यास 2 : कारक–विभक्तिपरिचय:	86
•	अभ्यास 3 : क्रियापदानि	97
•	अभ्यास 4 : कृदन्तपदानि	107
•	अभ्यास 5 : समास–परिचय:	110
•	अभ्यास 6 : सन्धि:	113
•	अभ्यास 7 : अव्ययपदानि	115

•

1. समर्चनम्

[वेद भारत के प्राचीन समाज और धर्म के आधारभूत ग्रंथ हैं । वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद । वेद के वचन मंत्र कहलाते हैं । वेद मंत्रों में कभी स्तुति की गयी है, तो कभी प्रार्थना, तो कभी किसी का वर्णन है, तो कभी किसी तत्त्वज्ञान की गूढ़ बात । प्रस्तुत पाठ में स्तुति, प्रार्थना और पूजन-नमन के लिए मात्र तीन मंत्रों का समावेश किया गया है ।

वेद वगैरह से प्रेरणा लेकर अनेक स्तुति एवं प्रार्थनाओं की रचना अलग-अलग छंदों में की गयी है, जो लोकमानस के माध्यम से हम तक पहुँची है । ऐसे तीन स्तुति पद्य यहाँ प्रस्तुत हैं ।

ग्रंथ के प्रारंभ में मंगलाचरण करने की हमारी परम्परा है । इसी दृष्टि से इन मंत्रों तथा श्लोकों द्वारा संस्कृत के अध्ययन का मंगलाचरण करेंगे ।]

वैदिकम्

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥1॥

- ऋग्वेदः १:१:१

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥2॥

- यजुर्वेदः १:५

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥3॥

- यजुर्वेदः १६:४१

लौकिकम्

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः साङ्ग-पद-क्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥4॥

भयानां भयं भीषणं भीषणानां
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैःपदानां नियन्तृ त्वमेकं
परेषां परं रक्षकं रक्षकानाम् ॥5॥

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो
वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः ।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशम्
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥6॥

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : पुरोहितः यजमान का अभीष्ट अथवा संस्कार आदि कर्म करने वाला **यज्ञः** होम, हवन **रत्नधातमः** रत्नों को धारण करने वाला **व्रतपतिः** व्रत के स्वामी **शम्भवः** जिसके द्वारा 'शम्' - कल्याण या सुख प्रकट होता है वह **मयोभवः** जिससे 'मयस्' सुख उत्पन्न होता है **शङ्करः** जो 'शम्' - कल्याण करता है वह **मयस्करः** जो 'मयस्' सुख करता है वह **शिवतरः** अतिशय कल्याणकारी **स्तवः** स्तुति, गुणों का गान, प्रशंसा **साक्षिरूपः** साक्षी के रूप में रहने वाला **निरालम्बः** आलम्बन रहित, स्वयं पर आश्रित

सर्वनाम : तत् वह **यम्** जिसको **यस्य** जिसका **तस्मै** उसके लिए, उसे **त्वम्** तुम **एकम्** एक **परेषाम्** दूसरों का **वयम्** हम **त्वाम्** तुम्हें

विशेषण : दिव्य देवताओं से संबंधित **भीषण** भयंकर, डराने वाला, भयानक **पावन** पवित्र करने वाला **नियन्तृ** नियंत्रण करने वाला, वश में रखने वाला **पर** श्रेष्ठ, उत्तम **निधान** खजाना, भंडार

अव्यय : नमः प्रणाम हो ! नमस्कार

समास : वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः (वरुणः च इन्द्रः च रुद्रः च मरुतः च इति-वरुणेन्द्र....मरुतः, - इतरेतर द्वन्द्वः) सुरासुरगणाः (सुराः च असुराः च इति सुरासुराः, - द्वन्द्वः । सुरासुराणाम् गणाः सुरासुरगणाः - षष्ठी तत्पुरुष ।) देवताओं और असुरों का समूह, देवों और असुरों का गण (इस पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त समास विग्रह मात्र अध्यापन सहायता हेतु दिए गए हैं ।)

क्रियापद (प्रथमगण) : (परस्मैपद) **चर्** (**चरति**) आचरण करना **गै** (**गायति**) गाना, गान करना **दृश् - पश्य्** (**पश्यति**) देखना **स्मृ** (**स्मरति**) याद करना, स्मरण करना **भज्** (**भजति**) भजना, भक्ति करना **नम्** (**नमति**) नमन करना, झुकना **व्रज्** (**व्रजति**) जाना, प्राप्त करना

विशेष

(1) शब्दार्थ : ईळे (ईडे) मैं स्तुति करता हूँ **ऋत्विजम्** ऋत्विक कर्म करनेवाला **होतारम्** हवन करने वाले को **शकेयम्** सकता हूँ, समर्थ बन सकता हूँ **राध्यताम्** सिद्धि कराइए, सिद्ध कर दीजिए **उपैमि** पास में जाता हूँ, प्राप्त होता हूँ **स्तुन्वन्ति** स्तुति करते हैं, गुणगान करते हैं । **साङ्ग-पद-क्रमोपनिषदैः** छः वेदांगों का, पद पाठ, क्रमपाठ तथा उपनिषदों के द्वारा **गायन्ति** गान करते हैं **सामगाः** सामवेद के मंत्रों का गान करने वाले **ध्यानावस्थिततद्गतेन** ध्यान अवस्था में पहुँचे हुए **मनसा** मन के द्वारा **विदुः** जानते हैं, प्राप्त करते हैं **महोच्चैःपदानाम्** बड़े एवं ऊँचे पदों (को धारण करने वालों) का **नियन्तृ** नियंत्रण करने वाला, वश में रखने वाला **परेषाम्** उत्तमों का, श्रेष्ठों का **जगत्साक्षिरूपम्** जगत के साक्षी स्वरूप **एकम्** एकमात्र **भवाम्भोधिपोतम्** संसार रूपी सागर से पार करने वाली नाव **शरण्यम्** शरण में जाने योग्य, आश्रय लेने योग्य

(2) सन्धि : अग्निमीळे (अग्निमीडे) (अग्निम् ईळे) । तच्छकेयम् (तत् शकेयम्) । तन्मे (तत् मे) । इदमहमनृतात् (इदम् अहम् अनृतात्) । त्वमेकम् (त्वम् एकम्) । भजामो वयम् (भजामः वयम्) । सदेकम् (सत् एकम्) ।

[वेदों की भाषा सस्वर अर्थात् कि स्वर के साथ बोली जाती है और लिखी जाती है । स्वर तीन हैं : उदात्त, अनुदात्त और स्वरित । ऋग्वेद के मंत्रों को बोलते समय उदात्त स्वर थोड़े जोर से, अनुदात्त स्वर थोड़े धीमे से और स्वरित स्वर मध्यम लय से बोला जाता है । जबकि ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के मंत्रों को लिखते समय अनुदात्त स्वर बताने के लिए _ इस तरह अक्षर के नीचे आड़ी रेखा खींची जाती है । इसी तरह स्वरित स्वर बताने के लिए ˈ इस तरह अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा खींची जाती है । उदात्त स्वर बताने के लिए कोई चिह्न उपयोग नहीं किया जाता है ।]

स्वाध्याय

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) कम् पुरोहितम् ईडे ?

(2) यज्ञस्य देवः कः अस्ति ?

(3) अहं किं चरिष्यामि ?

(4) दिव्यैः स्तवैः के स्तुवन्ति ?

(5) वयं कं शरणं व्रजामः ?

2. प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत ।

(1) अहं ..... रत्नधातमम् ईळे । (अग्निम्, यज्ञम्, पुरोहितम्)

(2) इदम् अहम् ..... उपैमि । (अनृतात्, सत्यम्, व्रतम्)

(3) योगिनः ..... पश्यन्ति । (ज्ञानेन, चक्षुषा, मनसा)

(4) सुरासुरगणाः देवस्य ..... न विदुः । (स्वरूपम्, निवासम्, अन्तम्)

(5) वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं ..... । (भजामः, नमामः, स्मरामः)

3. प्रकोष्ठगतं पदं प्रयुज्य अधोलिखितानि वाक्यानि प्रश्नार्थस्वरूपे परिवर्तयत ।

(1) देवाय नमः । (कस्मै)

(2) साङ्ग-पद-क्रमोपनिषदैः वेदैः सामगाः गायन्ति । (के)

(3) योगिनः देवं पश्यन्ति । (कम्)

4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) अग्निदेव की कौन-कौन सी विशेषताएँ मंत्र में वर्णित की गई हैं ?

(2) अग्नि से कौन-सा व्रत लिया गया है ?

(3) योगी किसका दर्शन करते हैं ? किस प्रकार ?

(4) भक्त जिसकी शरण में जाते हैं, वह देवतत्त्व कैसा है ?

5. श्लोकपूर्तिं कुरुत ।

(1) अग्निमीळे ..... रत्नधातमम् ॥

(2) नमः शंभवाय ..... शिवतराय च ॥

(3) वयं त्वां स्मरामो ..... व्रजामः ॥

6. क-विभागं ख-विभागेन सह यथार्थरीत्या संयोजयत ।

क	ख
(1) अग्निम्	(1) नमः
(2) शिवाय	(2) पुरोहितम्
(3) दिव्यैः	(3) न विदुः
(4) अन्तम्	(4) प्राणिनाम्
(5) सामगाः	(5) स्तवैः
(6) गतिः	(6) गायन्ति
	(7) ब्रह्मा

प्रवृत्ति

- वेद की इन ऋचाओं तथा प्रार्थना के श्लोकों को कण्ठस्थ कीजिए ।
- इस प्रकार की अन्य ऋचाएँ तथा प्रार्थनाएँ सुवाच्य एवं सुन्दर रूप से लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए ।
- विद्यालय की प्रार्थना-सभा में मन्त्रों तथा श्लोकों का गान कीजिए ।

2. कुलस्य आचारः

[संस्कृत साहित्य में प्राणी कथाओं का प्रचलन अति प्राचीन काल से है । जातकमाला, पंचतंत्र या हितोपदेश हो, प्रत्येक ग्रंथ में प्राणियों को पात्र बनाकर तरह-तरह की कथाएँ परिकल्पित हैं ।

आज भी ऐसी प्राणीकथाओं का सर्जन होता रहता है । ऐसी ही एक प्राणी कथा यहाँ प्रस्तुत है । चातक नामक पक्षी हमेशा वर्षा का ही पानी पीता है । चातक कुल का यह आचार है । चातक पक्षी के यहाँ जन्म लेने वाला प्रत्येक शिशु आज भी इस कुलाचार का पालन करता है ।

एक बार प्यास से पीड़ित एक चातक शिशु अपनी माँ की बात नहीं मानता और वह अपने आदर्श के त्याग के लिए तत्पर बनता है, तभी उसे अचानक एक निर्धन किसान पिता-पुत्र का संवाद सुनाई देता है । इस निर्धन पिता-पुत्र से प्रेरणा लेकर माँ के पास लौटता है और अपने आदर्श का पालन करने के लिए तैयार हो जाता है ।

प्रस्तुत पाठ में परम्परा से चले आ रहे और जीवन को उन्नत बनाने वाले विविध आचरणों के पालन करने की प्रेरणा प्राप्त होती है । प्राणियों को निमित्त बनाकर अंत में तो मानव को ही उपदेश दिया गया है । इसी के साथ यहाँ उपयोग किए गए क्रियापदों और कारकपदों (विभक्तियों) का भी अध्ययन करना है ।]

एकः चातकशिशुः आसीत् । स एकदा तृषया पीडितः जनन्याः समीपं व्रजति वदति च, ''अम्ब ! तृषा मां पीडयति । अहं जलं पातुम् इच्छामि । सम्प्रति मेघजलं न मिलति, अतः तडागजलमेव पातुम् इच्छामि ।'' जननी वदति, ''बाल ! वयं तु मेघजलम् एव पिबामः, तडागजलं न पिबामः । एषः अस्माकं कुलस्य आचारः । अतः त्वं तडागजलं पातुम् न शक्नोषि'' - इति ।

चातकशिशुः कथयति, ''अम्ब ! महती मे तृषा । अधुना आकाशे मेघान् न पश्यामि । कदा मेघः वर्षिष्यति कदा च अहं मेघजलं पातुं शक्नोमि, इति न जानामि । अतः तृषया पीडितोऽहं तडागजलं पातुं गच्छामि ।''

जननी पुनरपि चातकशिशुं बोधयति, ''बाल ! न अयम् अस्माकं कुलाचारः । कुलाचारः सदैव रक्षितव्यः एव । अतः त्वं तडागजलं पातुं न अर्हसि । तृषायाः सहनं कृत्वा मेघस्य प्रतीक्षां कर्तुम् अर्हसि त्वम् ।''

जनन्याः कथनम् अश्रुत्वा चातकशिशुः तडागजलं पातुं तडागं गन्तुं निर्गच्छति । मार्गे परिश्रान्तः स यदा एकस्य कृषकस्य गृहस्य समीपे तिष्ठति तदा तातपुत्रयोः वार्तालापं शृणोति ।

कृषकः वृद्धः मरणासन्नः च आसीत् । तस्य समीपे स्थितः तस्य पुत्रः तस्मै कृषकाय कथयति, ''तात ! अद्य मार्गे मया धनस्यूतः प्राप्तः । तस्य दर्शनात् आनन्दः जातः । तेन मदीयं दारिद्र्यं नष्टं भविष्यति इति विचार्य धनस्यूतग्रहणाय अहं हस्तं प्रासारयम् । किन्तु तदैव मया भवदीयः उपदेशः स्मृतः - 'अन्यस्य धनस्य ग्रहणम् अस्माकं कुलाचारः न' इति । अतः अहं तं धनस्यूतं तत्रैव अत्यजम् ।''

चातकशिशुः सर्वं शृणोति । सः विचारयति - "अहो ! मरणासन्नस्य वृद्धस्य तत्पुत्रस्य च स्वकीयं कुलाचारं पालयितुं कीदृशी श्रद्धा । अहं तु कुलाचारं न पालयामि । वयं मेघजलमेव पिबामः इति अस्माकं कुलाचारः । तमहं त्यक्तुं प्रवर्ते । एतत् अनुचितमस्ति ।"

सः चिन्तयति –

पशवः पक्षिणश्चैव मानवाश्च सदाशयाः ।
रक्षन्ति स्वकुलाचारं रक्षामि कुलमात्मनः ॥

एवं विचिन्त्य सः मातरं प्रत्यागच्छति सर्वं वृत्तान्तं च कथयति । माता सन्तोषमनुभवति, शिशवे च आशीर्वादं ददाति । अल्पे एव काले मेघवृष्टिः भवति । मेघजलं पीत्वा चातकशिशोः तृषा शाम्यति ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : आचारः आचरण, परंपरागत किया जा रहा व्यवहार (वि अनाचारः) **तडागः** तालाब **कृषकः** किसान **स्यूतः** थैला

स्त्रीलिंग : तृषा प्यास **जननी** माता **वृष्टिः** बरसात

नपुंसकलिंग : शतम् एक सौ **पानम्** पीना, पीने की क्रिया

सर्वनाम : माम् मुझे **मे** मुझे (पु.) **मया** मुझसे **तेन** उसके द्वारा (पु.) **त्वया** तुझसे **तस्यै** उसे, उसके लिए (स्त्री.)

विशेषण : महती अधिक, अत्यधिक (स्त्री.) **परिश्रान्त** थका हुआ

अव्यय : सम्प्रति अब, अभी **अतः** इससे, इसीलिए **एव** ही **इति** इस तरह, इस प्रकार **अधुना** अब, अभी **कदा** कब **अद्य** आज **सम्यक्** अच्छी तरह **ततः** इसके पश्चात्, इसके बाद

समास : चातकशिशुः (चातकस्य शिशुः, षष्ठी तत्पुरुष) । मेघजलम् (मेघस्य जलम् । षष्ठी तत्पुरुष) । तडागजलम् (तडागस्य जलम्, षष्ठी तत्पुरुष) । कुलाचारः (कुलस्य आचारः । षष्ठी तत्पुरुष) । तातपुत्रयोः (तातः च पुत्रः च – तातपुत्रौ । तयोः । इतरेतर द्वन्द्व) मरणासन्नः (मरणम् आसन्नः । द्वितीया तत्पुरुष) । धनस्यूतः (धनस्य स्यूतः । षष्ठी ततुपुरुष) । धनस्यूतग्रहणाय (धनस्यूतस्य ग्रहणम् – धनस्यूतग्रहणम्, तस्मै । षष्ठी तत्पुरुष) । तत्पुत्रस्य (तस्य पुत्रः – तत्पुत्रः, तस्य । षष्ठी तत्पुरुष) । अनुचितम् (न उचितम् – अनुचितम्, नञ्तत्पुरुष) । मेघवृष्टिः (मेघस्य वृष्टिः । षष्ठी तत्पुरुषः) ।

कृदन्तपद : गत्वा (गम् + त्वा) । पातुम् (पा + तुम्) । कृत्वा (कृ + त्वा) । कर्तुम् (कृ + तुम्) । अश्रुत्वा (न > अ + श्रु + त्वा) । गन्तुम् (गम् + तुम्) । विचार्य (वि + चर् > चारि (प्रेरक) + त्वा > य) । श्रुत्वा (श्रु + त्वा) । रक्षितुम् (रक्ष् + तुम्) । त्यक्तुम् (त्यज् + तुम्) । विचिन्त्य (वि + चिन्त् + त्वा > य) । पीत्वा (पा + त्वा) । (समझने की यह पद्धति अध्यापन की सहायता के लिए है ।)

क्रियापद : प्रथमगण (परस्मैपद) वद् (वदति) बोलना, कहना **इष् > इच्छ् (इच्छति)** इच्छा करना, चाहना **मिल् (मिलति)** मिलना **पा > पिब् (पिबति)** पीना **अर्ह् (अर्हति)** योग्य होना, समर्थ होना **निर् + गम् > गच्छ् (निर्गच्छति)** निकलना **स्था > तिष्ठ् (तिष्ठति)** खड़े रहना, स्थिर रहना **भू (भवति)** होना **त्यज् (त्यजति)** त्याग करना, छोड़ना **आ + चर् (आचरति)** आचरण करना, अमल करना **मृ (मरिष्यति, लृट्लकार-भविष्यकाल)** मरना **वृष् (वर्षति)** बरसना **रक्ष् (रक्षति)** रक्षा करना **प्रति + आ + गम् > गच्छ् (प्रत्यागच्छति)** वापस आना, पीछे लौटना **अनु + भू (अनुभवति)** अनुभव करना

(आत्मनेपद) प्र + वृत् (प्रवर्तते) व्यवहार करना

चतुर्थ गण : शम् (शाम्यति) शांत होना

दशम गण : पीड् (पीडयति) पीड़ा देना, दुःख पहुँचाना **कथ् (कथयति)** कहना **पाल् (पालयति)** पालन करना **चिन्त् (चिन्तयति)** विचार करना, सोचना

विशेष

शब्दार्थ : पातुम् न शक्नोषि पी नहीं सकते **अम्ब** हे माता **वर्षिष्यति** बरसात होना **रक्षितव्यः** रक्षा की जानी चाहिए **सहनं कृत्वा** सहन करके **तातपुत्रयोः** पिता और पुत्र का **मरणासन्नः** मरण के समीप पहुँचा हुआ **धनस्यूतः** धन की थैली **दारिद्र्यम्** गरीबी, निर्धनता **हस्तम् प्रासारयम्** मैंने हाथ फैलाया । मैंने हाथ बढ़ाया **त्यक्तुं प्रवर्ते** त्यागने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ **अनुचितमस्ति** अनुचित है, अयोग्य है **भवादृशाः** आपके जैसा **कुलमात्मनः** अपने कुल का **ददाति** देता है । **अल्पे एव काले** थोड़े ही समय में **तृषा शाम्यति** प्यास शांत हो जाती है ।

सन्धि : पीडितोऽहम् (पीडितः अहम्) । पुनरपि (पुनः अपि) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितं पदम् चित्वा लिखत ।

(1) तृषापीडितः शिशुः कस्य समीपं गच्छति ?

(क) जनन्याः (ख) नीडस्य (ग) जलस्य (घ) गगनस्य

(2) 'मेघ' शब्दस्य पर्यायः कः ?

(क) जलम् (ख) वृष्टिः (ग) जलदः (घ) गगनम्

(3) सर्वैः किं रक्षितव्यम् ?

(क) तडागः (ख) कुलाचारः (ग) मेघः (घ) शिशुः

(4) वृद्धः कीदृशः आसीत् ?

(क) अन्धः (ख) विकलः (ग) मरणासन्नः (घ) स्वस्थः

(5) शिशुः कस्य प्रतीक्षां करोति ?

(क) मेघस्य (ख) मेघाय (ग) मेघम् (घ) मेघेन

(6) 'पुनरपि' शब्दस्य उचितं सन्धिविच्छेदं दर्शयत !

(क) पुन + रपि (ख) पुनो + अपि (ग) पुनः + अपि (घ) पुनर् + पि

(7) 'वत्स ! कुलस्य आचारं रक्षितुं त्वया सम्यक् आचरितम् ।' एतत् वाक्यं कः वदति ?

(क) जननी (ख) वृद्धः (ग) कृषकपुत्रः (घ) चातकः

(8) अहं तडागजलं पातुम् ..... ।

(क) इच्छति (ख) इच्छसि (ग) इच्छामि (घ) इच्छतु

2. संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) कः तृषया पीडितः आसीत् ?

(2) चातकशिशुः किं पातुं न अर्हति ?

(3) कृषकपुत्रस्य दारिद्र्यं केन नष्टं भविष्यति ?

(4) कृषकपुत्रेण मार्गे किं प्राप्तम् ?

(5) शिशोः तृषा केन नष्टा ?

3. रेखाङ्कितपदानां स्थाने कोष्ठकात् पदं प्रस्थाप्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कः, का, कुत्र, कीदृशः, किम्, कस्यै)

(1) जननी शिशुं बोधयति ।

(2) मार्गे परिश्रान्तः सः तिष्ठति ।

(3) कृषकः वृद्धः आसीत् ।

(4) धनस्यूतः मार्गे प्राप्तः ।

(5) सः तस्यै सर्वं वृत्तान्तं कथयति ।

4. निर्देशानुसारं धातुरूपाणां परिचयं लिखत ।

	धातुरूपम्	धातुः	काल:/लकारः	पदम्	पुरुषः	वचनम्
(1)	इच्छामि	.....	.....	.....	.....	.....
(2)	गच्छति	.....	.....	.....	.....	.....
(3)	अर्हसि	.....	.....	.....	.....	.....
(4)	कथयति	.....	.....	.....	.....	.....
(5)	वदति	.....	.....	.....	.....	.....

5. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) कुलाचार अर्थात् क्या ?

(2) माता चातक शिशु से क्या न करने के लिए कहती है ? किस लिए ?

(3) निर्धन होने पर भी कृषकपुत्र ने धनस्यूत का स्पर्श क्यों नहीं किया ?

(4) चातक शिशु ने तालाब का जल क्यों नहीं पिया ?

प्रवृत्ति

- शाला में किए जाने वाले विभिन्न आचरणों की सूची बनाइए ।
- आपके परिवार में किए जाने वाले विविध कुलाचारों की सूची बनाइए ।
- 'प्यासा चातकशिशु' – इस शीर्षक से इस कहानी को अपनी मातृभाषा में लिखिए ।
- अपने वर्ग के सहपाठी मित्र को उसके जन्मदिवस पर 'शतं जीव शरदः' यह वाक्य सुन्दर अक्षरों में लिखकर भेंट कीजिए ।

3. परं निधानम् कः

[ई.स. ग्यारहवीं शताब्दी में मालव प्रदेश (वर्तमान में मध्यप्रदेश) में राजा भोज का शासन था । धारानगरी में रहते हुए राजा भोज ने उस समय जो कीर्ति प्राप्त की थी, वह आज भी वैसी ही है । उनकी सुंदर राज्यव्यवस्था, जटिल प्रसंगों में भी न्याय देने की कुशलता तथा विद्वानों की गुणवत्ता की परख संबंधी कई रोचक कथाएँ आज भी लोगों में प्रचलित हैं । ऐसी कथाओं का संस्कृत में एक संग्रह 'भोजप्रबन्धः' के नाम से प्रसिद्ध है । इसमें राजा भोज को केन्द्र में रखकर अनेक घटनाओं का वर्णन किया गया है, जिसमें काव्यात्मक चमत्कृतियों से पूर्ण अनेक पद्य हैं ।

इसके उपरांत अलग-अलग समय दौरान अनेक संस्कृत कवियों ने अपनी बात प्रस्तुत करने के लिए राजा भोज को पात्र के रूप में लिया है । भोज को लक्ष्य करके रचित ऐसी ही एक संवादात्मक कथा यहाँ प्रस्तुत है । राजा भोज और युवक पंडित के इस संवाद में एक की अपेक्षा दूसरे पदार्थ की शक्तिमत्ता को उभारने का उपक्रम है । क्रमशः आगे बढ़ता हुआ यह संवाद अंत में संतोष की बात आने के साथ रुक जाता है । इस तरह यह संवाद संतोष का महत्त्व बताता है ।

इस पाठ का अध्ययन करते समय क्रिया और कर्तृकारक के समन्वय की व्यवस्था को समझना है । साथ ही, विविध विभक्तियों में संज्ञारूप कैसा परिवर्तन करते हैं और क्रियापदों के रूप कैसे होते हैं, उसका भी यहाँ अध्ययन करना है ।]

भोजः नाम नृपतिः विद्याप्रियः, कलाप्रियः, प्रजाप्रियश्च आसीत् । अतः तस्य राजसभायां दूरदेशात् अनेके विद्याविशारदाः पण्डिताः समागच्छन्ति स्म ।

एकदा भोजः प्रासादस्य गवाक्षे उपविष्टः आसीत् । सः मार्गे एकं नवागन्तुकम् अनभिज्ञं युवकं पश्यति । तस्य परिचयं ज्ञातुं सः तं प्रासादे आह्वयति । ततस्तयोः मध्ये एवं वार्तालापः संजातः ।

भोजः : भवान् कः वर्तते ?

युवकः : अहं घटपण्डितः अस्मि ।

भोजः : घटपण्डितः ? किं नाम घटपण्डितः इति ?

युवकः : यथा घटे परिपूर्णं जलं तिष्ठति, तथैव मयि परिपूर्णं ज्ञानं वर्तते । अतः अहं स्वात्मानं घटपण्डितं मन्ये ।

भोजः : (युवकस्य गर्वपूर्णाम् उक्तिं श्रुत्वा स्वात्मानं ततोऽप्यधिकं मत्वा अहङ्कारेण सह) यदि त्वं घटः असि, तर्हि अहं मुद्गरत्वेन वर्ते । मुद्गरः स्वकीयेन प्रहारेण घटं विनाशयति । अहमपि घटरूपं भवन्तं विनाशयामि ।

युवकः : यदि भवान् मुद्गरत्वेन वर्तिष्यते, तर्हि अहम् अग्निः भवामि । दहनकर्मा अग्निः भूत्वा मुद्गरं भस्म करिष्यामि ।

भोजः : त्वं यदि वह्नित्वेन वर्तिष्यसे, तर्हि अहं वृष्टिः भविष्यामि । वृष्टेः पुरतः वह्निः स्थातुं न शक्नोति, तथा त्वमपि मम पुरतः स्थातुं न शक्नोषि ।

युवकः : वृष्टिं तु वायुः स्वबलेन यत्र कुत्रापि वाहयितुमर्हति । वृष्टिरूपं भवन्तमहं वायुः भूत्वा इतः ततः वहिष्यामि ।

भोजः : यदि भवान् वातत्वेन वर्तिष्यते, तर्हि अहं वायुभक्षकः भुजगः भविष्यामि । भुजगः सन् सततं वायुरूपं भवन्तं भक्षयिष्यामि ।

युवकः : भवान् यदि सर्पः भविष्यति, तर्हि अहं सर्पभक्षको गरुडो भवामि ।

भोजः : (वाक्केलीं वर्धयन्) त्वं यदि गरुडः असि, तर्हि अहं चक्रधारकः विष्णुः । विष्णुः गरुडारूढः भवति ।

युवकः : (मनसा विष्णुं प्रणम्य च पाण्डित्यं प्रदर्शयन् अग्रे वदति ।) यदि भवान् चक्रधरः विष्णुः, तर्हि अहं भवतः मस्तकस्य उपरि शोभमानं मुकुट् अस्मि । मुकुटं सदा मस्तकस्य उपरि एव संतिष्ठते ।

भोजः : (युवकस्य पाण्डित्यम् अनुभूय) तर्हि मुकुटस्य उपरि शोभमानं पुष्पमहम् । एवमहं अधुना तवोपरि स्थास्यामि ।

युवकः : भवान् यदि पुष्पं भविष्यति, तर्हि अहमपि भ्रमरो भूत्वा तव पुष्पस्योपरि स्थास्यामि ।

भोजः : एवं भवान् द्विरेफः तर्हि अहं सूर्यः । पुष्पस्य अन्तः स्थितः भ्रमरः सूर्यास्तकाले बन्दी भवति, अहमपि त्वं बन्दिनं करिष्यामि ।

युवकः : अहो ! भवान् सूर्यस्तर्हि अहं महाप्रभावी राहुः । राहुस्तु सूर्यं ग्रसते ।

भोजः : (किञ्चित् उच्चैः) भवान् राहुश्चेत् अहं राहुरूपाय तुभ्यं दानं दास्यामि । दानग्रहणेन तवायं गर्वः निश्चयेन शान्तः भविष्यति ।

युवकः : (विहस्य चातुर्येण) यदि भवान् दानी तर्हि अहं सन्तुष्टः । भवतः दानस्य प्रयासः निष्फलः भविष्यति । सर्वतः अलुब्धः अहं भवतः दानं न ग्रहीष्यामि ।

एवमुत्तरोत्तरं विवादरतयोः भोजयुवकयोः मध्ये यदा सन्तोषस्य विषयः समुपस्थितः तदा 'समागते संतोषे सर्वं शान्तं भवति' इति वचनानुसारं विवादोऽपि स्वयमेव शान्तः ।

अन्ते चतुरं ज्ञानेन गुणेन च उपेतं तं पण्डितं युवकं प्रणम्य धाराधिपतिः भोजराजः अवदत् ''अयि घटपण्डित ! गुणपूजके धारादेशे भवतः स्वागतमस्ति । भवान् विजयी जातः । सन्तुष्टं जनं न कोऽपि पराजेतुमर्हति । यतो हि सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानं वर्तते ।''

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : नृपतिः राजा **प्रासादः** महल **गवाक्षः** झरोखा **मुद्गरः** हथौड़ा, लकड़ी का हथौडा, वजन में भारी एक साधन (व्यायाम करने के लिए एक साधन) **वह्निः** अग्नि **वायुभक्षकः** वायु को खाने वाला **वातः** पवन **भुजगः** साँप **द्विरेफः** भंवरा

(स्त्रीलिंग) : वृष्टिः बरसात **वाक्केली** शब्दों का खेल, वाणी का खेल

(नपुंसकलिंग) : निधानम् खजाना, भंडार

सर्वनाम : तस्य उसका (पुं.) **सः** वह (पुं.) **अनेके** अनेक, बहुत से **तम्** उसको (पु.) **तयोः** उन दोनों का (पुं.) **भवान्** आप, तुम **मयि** मुझमें **मम** मेरा **भवन्तम्** आपको **तव** तुम्हारा **तुभ्यम्** तुम्हारे लिए, तुम्हें **भवतः** आपका

विशेषण : विशारद चतुर, कुशल, जानकार **कोविद** अनुभवी, कुशल **धुरंधर** धुरा को धारण करने वाला, अग्रणी, मुख्य **अनभिज्ञ** अंजाना, अपरिचित **शोभमान** शोभता हुआ

अव्यय : एकदा एक बार **उपरि** ऊपर की ओर **अतः** इसलिए **ततः** इसलिए **यदि** यदि **तर्हि** तो **पुरतः** सामने **यत्र** जहाँ, जिस स्थान पर है वही **कुत्रापि** कहीं भी **इतः** यहाँ से **ततः** वहाँ से **सदा** हमेशा **अधुना** अभी **मध्ये** बीच में **अयि** अरे, संबोधन करने के लिए प्रमुख शब्द है । **यतो हि** क्योंकि

समास : राजसभायाम् (राज्ञः सभा – राजसभा, तस्याम् । षष्ठी तत्पुरुष) । विद्याविशारदः (विद्यासु विशारदः – विद्याविशारदः । सप्तमी तत्पुरुष) । वार्तालापः (वार्तायाः आलापः । षष्ठी तत्पुरुष) भोजयुवपण्डितयोः (भोजः च युवपण्डितः च – भोजयुवपण्डितौ, तयोः । इतरेतर द्वन्द्व) । गर्वपूर्णाम् (गर्वेण पूर्णा – गर्वपूर्णा, ताम् । तृतीया तत्पुरुष) वायुभक्षकः (वायोः भक्षकः । षष्ठी तत्पुरुष) गरुडारूढः (गरुडम् आरूढः । द्वितीया तत्पुरुष) सूर्यास्तकाले (सूर्यस्य अस्तकालः – सूर्यास्तकालः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) दानग्रहणेन (दानस्य ग्रहणम् – दानग्रहणम्, तेन । षष्ठी तत्पुरुष) भोजयुवकयोः (भोजः च युवकः च भोजयुवकौ, तयोः । इतरेतर द्वन्द्वः) । धाराधिपतिः । (धारायाः अधिपतिः । षष्ठी तत्पुरुष)

प्रथमगण (परस्मैपद) **सम् + आ + गम् > गच्छ् (समागच्छति)** आना **आ + ह्वे > ह्वय् (आह्वयति)** बोलना **अर्ह् (अर्हति)** हो सकना, योग्य होना **वह् (वहति)** वहन करना, ले जाना **सम् + स्था – तिष्ठ् (संतिष्ठते)** खड़े रहना **वृत् (वर्तते)** होना **ग्रस् (ग्रसते)** निगलना, मुख में लेना

विशेष

(1) शब्दार्थ : विद्याविशारदाः अनेक विद्याओं में कुशल **उपविष्टः** बैठा हुआ **नवागन्तुकम्** नये आने वाले को **निम्नानुसारम्** निम्नानुसार **घटपण्डितः** घड़े की भांति भरा हुआ विद्वान, पूर्ण ज्ञानी **परिपूर्णम्** संपूर्ण भरा हुआ **गर्वपूर्णाम् उक्तिम्** गर्व से भरी हुई युक्ति या वचन को **मुद्गरत्वेन** मुद्गर के रूप में **प्रहारेण** प्रहार के द्वारा, प्रहार से **वर्तिष्यते** व्यवहार करोगे **दहनकर्मा** दहन करने का कर्म करने वाला, जलाने वाला **वाहयितुमर्हति** बहा सकता है, उड़ा सकता है **वृष्टिरूपम्** वृष्टि रूपी **इतः ततः** इधर–उधर **वहिष्यामि** बह जाऊँगा, उठाकर ले जाऊँगा **पाण्डित्यं प्रदर्शयन्** पांडित्य का प्रदर्शन करता हुआ **शोभमानम्** शोभायमान होता हुआ, सुशोभित होने वाले को **अनुभूय** अनुभव करके **स्थास्यामि** खड़ा रहूँगा **ग्रहीष्यामि** ग्रहण करूँगा **बन्दी** कैदी, कैद किया हुआ **महाप्रभावी** महान प्रभाववाला **निश्चयेन** निश्चित रूप से, निश्चित **विहस्य** हँसकर **चातुर्येण** चालाकी से, चतुराई से **अलुब्धः** लोभरहित, निर्लोभी **एवमु त्तरोत्तरम्** इस तरह उत्तरोत्तर, इस प्रकार आगे–आगे **विवादरतयोः** विवाद में रत, विवाद में लगे हुए **वचनानुसारम्** वचन के अनुसार, वचन का अनुसरण करके **अन्ते** अन्त में **उपेतम्** युक्त, साथ का **गुणपूजके** गुणों की पूजा करने वाला **धारादेशे** धारा देश में **विजयी जातः** विजयी हुआ, जीता **पराजेतुमर्हति** हरा सकता है ।

(2) संधि : प्रजाप्रियश्च (प्रजाप्रियः च) । ततस्तयोः (ततः तयोः) । तथैव (तथा एव) । ततोऽप्यधिकम् (ततः अपि अधिकम्) । कुत्रापि (कुत्र अपि) । तवोपरि (तव उपरि) । भ्रमरो भूत्वा (भ्रमरः भूत्वा) । सूर्यस्तर्हि (सूर्यः तर्हि) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) अहं घटपण्डितः ..... ।

(क) स्मः (ख) अस्मि (ग) अस्ति (घ) सन्ति

(2) 'वायुः' इति शब्दस्य पर्यायशब्दः कः ?

(क) वाक् (ख) वा (ग) वातः (घ) वह्निः

(3) 'गवाक्षः' शब्दस्य अर्थः कः ?

(क) शिखर (ख) छत (ग) दरबार (घ) झरोखा

(4) भूपालः मार्गे सुवर्णखण्डम् ..... ।

(क) अक्षिपन् (ख) अक्षिपसः (ग) अक्षिपत् (घ) अक्षिपम्

(5) संसारे कीदृशं जनं पराजेतुं कोऽपि न अर्हति ?

(क) धनिकम् (ख) सन्तुष्टम् (ग) वाचालम् (घ) बलिष्ठम्

(6) अहं दानं ..... ।

(क) करिष्यति (ख) करिष्यामि (ग) करिष्यसि (घ) करिष्यन्ति

(7) कस्य शिखरे मुकुटं सदा तिष्ठति ?

(क) मस्तके (ख) मस्तकस्य (ग) मस्तकं (घ) मस्तकात्

2. संस्कृत भाषया उत्तरं लिखत ।

(1) अग्निः कं भस्म करोति ?

(2) राहुः केन शान्तः भवति ?

(3) सन्तोष एव कस्य परं निधानम् ?

(4) भ्रमरः कुत्र बन्दी भवति ।

3. उदाहरणानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं लिखत ।

	शब्दरूपम्	मूलशब्दः	अन्तः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
उदाहरणम् –	जनाः	जन	अकारान्तः	पुल्लिंगम्	प्रथमा	बहुवचनम्
(1)	प्रासादस्य	.....	.....	.....	.....	.....
(2)	गवाक्षे	.....	.....	.....	.....	.....

(3) वृष्टेः ....

(4) पण्डितम् ....

(5) विवादरतयोः ....

4. वचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

उदा. वर्तते वर्तेते वर्तन्ते ।

(1) ..... तिष्ठतः ..... ।

(2) अर्हति .... ।

(3) ग्रहीष्यामि .... ।

(4) ..... भविष्यतः ..... ।

5. शीर्षकानुरूपं धातुरूपाणां परिचयं लिखत ।

	धातुरूपम्	धातुः	काल:/लकार:	पदम्	पुरुषः	वचनम्
उदा.	सेवन्ते	सेव्	वर्तमान	आत्मनेपद	अन्य	बहुवचनम्
(1)	अपश्यत्	.....	.....	.....	.....	.....
(2)	तिष्ठति	.....	.....	.....	.....	.....
(3)	भविष्यति	.....	.....	.....	.....	.....
(4)	स्थास्यामि	.....	.....	.....	.....	.....

6. कोष्ठकेषु प्रदत्तानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत ।

(1) राजा युवक को देखता है । (नृप, युवक, दृश्–पश्य्)

(2) लोग सभा में जाते हैं । (जन, सभा, गम्–गच्छ्)

(3) धारा देश में गुणों की पूजा होती है । (धारादेश, गुण, पूजा, भू)

(4) भोज प्रजा–प्रिय थे । (भोज, प्रजा, प्रिय, भू)

(5) अग्नि मुद्गर को जलाती है । (वह्नि, मुद्गर, दह्)

7. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) राजा भोज कैसे थे ?

(2) युवक स्वयं को घटपंडित क्यों मानता है ?

(3) राजा भोज और युवक का विवाद कब रुक जाता है ? क्यों ?

(4) धारा देश की क्या विशेषता थी ?

प्रवृत्ति

- **परं निधानम्** गद्यपाठ की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।
- भोजप्रबंध में वर्णित कोई एक कथा कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

4. वलभी विद्यास्थानम्

[प्राचीनकाल में भारत में विद्या का व्यापक प्रचार और प्रसार था । प्राचीन बृहद् भारत के अनेक महानगरों में बड़े-बड़े विद्यास्थान थे और उनमें देश-विदेश से विद्यार्थी आकर विद्याध्ययन करते थे । ऐसा ही एक विद्यास्थान हमारे गुजरात प्रदेश में भी था ।

प्रस्तुत पाठ में उसका परिचय करवाया गया है । मुख्यत: ऐसे विद्यालयों की पठन-पाठन व्यवस्था और विषयों का ख्याल आए, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह पाठ तैयार किया गया है ।

पाठ की विषयवस्तु भूतकाल से जुड़ी होने के कारण इस पाठ के वाक्यों में भूतकाल के क्रियापदों का प्रयोग सिखाने का लक्ष्य भी रखा गया है । पाठ की भाषा सरल होने से क्रियापदों के अध्ययन के साथ-साथ संज्ञा पदों के रूपों तथा समास का भी अध्ययन कराया जा सकेगा ।]

सम्प्रति विविधा: विश्वविद्यालया: सुप्रसिद्धा: सन्ति । तेषु केचन एतादृशा: सन्ति यत्र अध्ययनार्थं प्रवेशं प्राप्य छात्र: स्वात्मानं धन्यं मन्यते । एवमेव पुराकालेऽपि अस्माकं भारते देशे एतादृशा: बहव: विश्वविद्यालया: आसन् । तत्र विद्याध्ययनाय दूरात् देशात् समागत्य प्रवेशं लब्ध्वा छात्रा: स्वात्मानं धन्यं मन्यन्ते स्म । एषु एकतम: वलभी विश्वविद्यालय: । मगधराज्ये यथा नालंदा आसीत् तथैव अत्र गुर्जरप्रदेशे वलभी आसीत् । अत्रापि सुदूरात् देशात् जना: अध्ययनाय आगच्छन्ति स्म । अद्यत्वे अस्मदीये गुर्जरप्रदेशे वर्तमाने भावनगरे जनपदे वलभीनामकं यदेकम् उपनगरं वर्तते, तत्रैव प्राचीनकाले वलभी विश्वविद्यालय: आसीत् ।

वस्तुतस्तु इदम् उपनगरं प्राचीनकालादेव अध्ययन-अध्यापनस्य केन्द्रमासीत् । पूर्वमत्र अष्टादशविद्याया: पठनं पाठनं च भवति स्म । एतासु विद्यासु चत्वारो वेदा:, षट् वेदाङ्गानि, पुराणम्, न्याय:, मीमांसा, स्मृति:, आयुर्वेद-धनुर्वेद-गन्धर्ववेद-अर्थवेदा: चत्वार: उपवेदा: च समाविष्टा: सन्ति । तत: बौद्धदर्शनस्य जैनदर्शनस्य च इदं केन्द्रं सञ्जातम् । ख्रिस्तस्य चतुर्थ्यां शताब्द्याम् ऋग्वेदस्य भाष्यकार: स्कन्दस्वामी सञ्जात: । स: अत्रैव अवसत् । एतत् सूचयति यत् गुप्तकाले अत्र वेदाध्ययनमपि प्रचलति स्म । ख्रिस्तस्य चतुर्थ्यां शताब्द्यामेव सुप्रसिद्धौ बौद्धाचार्यौ स्थिरमतिगुणमती, जैनाचार्य: श्रीमल्लवादी सूरि: च अत्रैव विद्याव्यासंगं कुर्वन्ति स्म ।

एतत् सूचयति यदत्र जैन-बौद्धदर्शनानामपि अध्ययनं प्रचलति स्म । अत्र यथारुचि यथामति छात्राः अपठन् । प्रवेशार्थमत्र प्रवेशपरीक्षापि भवति स्म । तामुत्तीर्य एव अत्र छात्रस्य प्रवेशः शक्यः आसीत् ।

ख्रिस्तस्य पञ्चम्यां शताब्द्याम् इदमुपनगरं मैत्रकाणां राजधानी आसीत् । मैत्रकाणां व्यवस्थानुसारम् अध्ययनस्य समाप्त्यनन्तरं वादसभायां शास्त्रार्थः भवति स्म । शास्त्रार्थे विभिन्नानां मत-मतान्तराणां खण्डन-मण्डनपूर्वकं विमर्शः भवति स्म । अनेकस्मै विजयिजनाय राजा पारितोषिकरूपेण भूमिम् अयच्छत् । कदाचित् विजयिजनानां नामानि विद्यापीठस्य द्वारे उट्टंकितानि अभवन् ।

ख्रिस्तात् पूर्वं प्रायः पञ्चमशताब्द्यां भगवतः महावीरस्य जन्म अभवत् । तस्मिन् काले भगवता महावीरेण यः उपदेशः प्रदत्तः स आगम-नाम्ना प्रसिद्धः वर्तते । अयम् आगमः वर्षपञ्चशतं यावत् मौखिकपरम्परायां सुरक्षितः आसीत् । एवं हि श्रूयते यत् ख्रिस्तस्य तृतीयायां शताब्द्यां नागार्जुननाम्ना प्रसिद्धस्य विदुषः अध्यक्षतायाम् एका जैनसाधूनां समितिः मिलिता । अस्याम् आगमग्रन्थानां लेखनस्य प्रस्तावोऽभवत् । अत्र लेखबद्धा वाणी वलभीवाचना नाम्ना प्रसिद्धा जाता ।

ख्रिस्तस्य नवम्यां शताब्द्यां वलभीनगरस्य विनाशः अभवत् । परन्तु तस्य अवशेषाः अद्यापि तस्य समृद्धिं सूचयन्ति । एवं भारतस्य प्राचीनेषु विद्याकेन्द्रेषु वलभी एकतमम् आसीत्, इतिहासे च अद्यापि वर्तते ।

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) भाष्यकारः टीकाकार, आलोचक **विजयिजनः** विजयी व्यक्ति, विजय प्राप्त करने वाला व्यक्ति **आगमः** आगम (जैन धर्म का एक ग्रन्थ) **अवशेषः** अवशेष, बचा हुआ अंश

(स्त्रीलिंग) शताब्दी सदी, सौ साल

(नपुंसकलिंग) जनपदम् शहर (जिला) **उपनगरम्** (छोटा शहर), नगर

विशेषण : एतादृश इस प्रकार का, ऐसा **धन्य** भाग्यशाली **अस्मदीय** हमारा, अपना

अव्यय : सम्प्रति अभी, अब **पुरा** पहले **यथा-तथा** जैसे-तैसे कैसे भी, **पूर्वम्** पहले **अनन्तरम्** बाद में **यावत्** जब तक

समास : समाप्त्यनन्तरम् (समाप्तेः अनन्तरम् । पंचमी तत्पुरुष)

क्रियापद : (आत्मनेपद) चौथा गण **मन् (मन्यते)** मानना

(परस्मैपद) दशवाँ गण **सूच् (सूचयति)** सूचित करना

विशेष

शब्दार्थ : केचन कुछ **स्वात्मानम्** अपने आप, स्वयं को **समागत्य** आकर **लब्ध्वा** पाकर, प्राप्त करके **एकतमः** अनेकों में से एक, उनमें से एक **अष्टादश** अठारह **समाविष्टाः** समाहित **विद्याव्यासंगम्** विद्याभ्यास **यथारुचि** रुचि के अनुसार **यथामति** बुद्धि के अनुसार **उत्तीर्य** उत्तीर्ण होकर, पास होकर **मैत्रकाणाम्** मैत्रक राजाओं का **मतमतान्तराणाम्** मतमतान्तरों का **खण्डनमण्डनपूर्वकम्** भिन्न-भिन्न मतों के, खंडन एवं मंडन पूर्वक, खंडन और मंडन के साथ सामने वाले का मत तोड़ना यानी खंडन और अपने मत का समर्थन करना, उसकी स्थापना करना यानी मंडन **विमर्शः** विचार, चिन्तन **उट्टङ्कितानि** अंकित किया हुआ, नक्काशी किया हुआ **प्रदत्तः** दिया हुआ **विदुषाम्** विद्वानों की **मिलिता** मिली **जाता** हुई

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) प्राचीनसमये गुर्जरराज्ये कः विश्वविद्यालयः आसीत् ?

(क) नालन्दाविश्वविद्यालयः (ख) तक्षशिलाविश्वविद्यालयः

(ग) गुजरातविश्वविद्यालयः (घ) वलभीविश्वविद्यालयः

(2) उपवेदाः कति सन्ति ?

(क) अष्टादश (ख) चत्वारः (ग) सप्त (घ) पञ्च

(3) भाष्यकारः स्कन्दस्वामी कस्यां शताब्द्यां सञ्जातः ?

(क) नवम्याम् (ख) चतुर्थ्याम् (ग) सप्तम्याम् (घ) पञ्चम्याम्

(4) वलभी केषां राजधानी आसीत् ?

(क) क्षत्रपाणाम् (ख) मैत्रकाणाम् (ग) द्राविडानाम् (घ) गुप्तानाम्

(5) महावीरस्य उपदेशः केन नाम्ना प्रसिद्धः वर्तते ?

(क) आगम (ख) निगम (ग) स्मृति (घ) मीमांसा

(6) वलभीनगरे मिलितायाः जैनसाधूनां समितेः अध्यक्षः कः आसीत् ?

(क) नागार्जुनः (ख) स्थिरमतिः (ग) मैत्रकः (घ) गुणमतिः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तराणि प्रदत्त ।

(1) प्राचीनकालात् वलभी कस्य केन्द्रमासीत् ?

(2) वेदाङ्गानि कति सन्ति ?

(3) श्रीमल्लवादी सूरिः कः आसीत् ?

(4) भगवतः महावीरस्य जन्म कदा अभवत् ?

(5) जैनसाधूनां समितौ कस्य लेखनस्य प्रस्तावः अभवत् ?

3. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कुत्र, केन, कः, कदा, केषाम्, कस्य)

(1) ऋग्वेदस्य भाष्यकारः <u>स्कन्दस्वामी</u> आसीत् ।

(2) <u>महावीरस्य</u> उपदेशः आगमनाम्ना प्रसिद्धः वर्तते ।

(3) <u>जैनसाधूनां</u> समितिः मिलिता ।

(4) <u>नवम्यां शताब्द्यां</u> वलभीनगरस्य विनाशः अभवत् ।

(5) लेखबद्धः उपदेशः <u>वलभीवाचना</u> नाम्ना प्रसिद्धः जातः ।

4. वचनानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	<u>एकवचनम्</u>	<u>द्विवचनम्</u>	<u>बहुवचनम्</u>
(1)	आगमम्	.....	.....
(2)	जनपदे	.....	.....
(3)	.....	.....	केन्द्रेषु

5. 'स्म'-प्रयोगं कुरुत ।

(1) छात्राः यथारुचि अपठन् ।

(2) स्कन्दस्वामी अत्रैव अवसत् ।

(3) राजा भूमिम् अयच्छत् ।

6. रेखाङ्कितानां पदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) वादसभायां शास्त्रार्थं भवति स्म ।

(2) स्थिरमतिगुणमती बौद्धाचार्यौ आस्ताम् ।

(3) अत्र प्रवेशपरीक्षा भवति स्म ।

7. प्रदत्तानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत ।

(1) वलभी मैत्रकों की राजधानी थी ।

वलभी मैत्रक राजधानी अस्

(2) दूर-दूर देश से लोग पढ़ने के लिए आते थे ।

सुदूर देश जन अध्ययन आ + गम्

(3) नागार्जुन सुप्रसिद्ध विद्वान थे ।

नागार्जुन प्रसिद्ध पंडित अस्

(4) वेद चार हैं ।

वेद चतुर् अस्

(5) वलभी का विनाश हुआ ।

वलभी विनाश भू (भव्)

8. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) वलभी में कौन-सी अठारह विद्याओं का पठन-पाठन होता था ?

(2) वेद और उपवेद कितने हैं ?

(3) मैत्रक शासन के समय में अध्ययन की व्यवस्था किस प्रकार की थी ?

(4) वलभी में कौन-कौन से आचार्य हुए ?

प्रवृत्ति

- विश्वविद्यालय की मुलाकात कीजिए ।
- अन्य प्राचीन विश्वविद्यालयों के बारे में जानकारी तथा चित्र एकत्रित कीजिए ।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद जैसे ग्रन्थ शिक्षक की सहायता से प्राप्त करें ।
- 'स्म' वाले और 'स्म' बिना के वाक्यों का चार्ट बनाइए ।
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म के स्थापकों के बारे में जानकारी प्राप्त करें ।

5. सुभाषितवैभवः

[संस्कृत साहित्य में बड़े काव्य को 'महाकाव्य' और छोटे काव्य को 'मुक्तक' के रूप में जाना जाता है । जिस तरह एक छोटा मोती बहुमूल्य होता है, उसी तरह ऐसे छोटे मुक्तक भी बहुमूल्य हैं । ऐसे मुक्तक सुभाषित होते हैं । संस्कृत साहित्य का यह सुपरिचित और सुललित काव्यरूप अपने चार चरणों में जीवन के बहुमूल्य पाथेय को कलात्मक ढंग से परोसने की एक अनोखी विशेषता रखता है । इन सुभाषितों में से आदर्श जीवन और समझदारी का बोध प्राप्त होता है । ऐसे ही कुछ बहुमूल्य मुक्तकों के सुभाषितों का संग्रह करके यह पाठ तैयार किया गया है ।

प्रस्तुत पाठ में चुने गए सुभाषितों में किसी एक विभक्ति के प्रयोग को देखा जा सकता है । ऐसे विभक्ति प्रयोग एक तरफ संस्कृत भाषा को सीखने के लिए उपयोगी होंगे, तो दूसरी तरफ उन सुभाषितों में उपदेशित पाठक के गुण, चलायमान जगत में कीर्ति की चिरंजीविता, सभी पापों का मूल लोभ, स्वजन और सच्चे मित्र की परख तथा सज्जन एवं दुर्जन की लाक्षणिकता जैसी बातों को प्रस्तुत करके ये सुभाषित आपके व्यक्तित्त्व को उज्जवल तथा चरित्रवान बनाने के लिए पर्याप्त प्रेरणा देंगे ।]

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः ।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः ॥1॥

चलं वित्तं चलं चित्तं चले जीवितयौवने ।
चलाचलमिदं सर्वं कीर्तिरेव हि जीवति ॥2॥

मक्षिकाः व्रणमिच्छन्ति धनमिच्छन्ति पार्थिवाः ।
नीचाः कलहमिच्छन्ति शान्तिमिच्छन्ति साधवः ॥3॥

गावो गन्धेन पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः ।
चारैः पश्यन्ति राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः ॥4॥

दरिद्राय धनं देयं ज्ञानं देयं जडाय च ।
पिपासिताय पानीयं क्षुधिताय च भोजनम् ॥5॥

लोभात्क्रोधः प्रभवति लोभात्कामः प्रजायते ।
लोभान्मोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य कारणम् ॥6॥

तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकायाश्च मस्तके ।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे सर्वाङ्गे दुर्जनस्य तत् ॥7॥

उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुविप्लवे ।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः ॥8॥

टिप्पणी

नाम (पुल्लिंग) : पाठकः वाचक, पढ़ने वाला **पार्थिवः** राजा **कलहः** झगड़ा **चारः** गुप्तचर **जडः** अज्ञानी, मूर्ख **कामः** इच्छा, कामना **तक्षकः** नाग, उस नाम का साँप **वृश्चिकः** बिच्छू **दुर्भिक्षः** अकाल **विप्लवः** युद्ध, संग्राम

(स्त्रीलिंग) : मक्षिका मक्खी

(नपुसकलिंग) : वित्तम् धन, पैसा **चित्तम्** मन, चित्त **व्रणम्** घाव, जख्म **व्यसनम्** संकट, कठिनाई, आपत्ति

विशेषण : सुस्वर अच्छे स्वरवाला **पिपासित** प्यासा, पीने की इच्छा वाला **क्षुधित** भूखा **गुह्य** छिपाने लायक

सर्वनाम : इतरे अन्य, दूसरा

समास : जीवितयौवने (जीवितं च यौवनं च - जीवितयौवने । इतरेतर द्वन्द्वः) । चलाचलम् (चलं च अचलं च - चलाचलम् । समाहार द्वन्द्व) । सर्वाङ्गे (सर्वम् च तत् अङ्गं च सर्वाङ्गम्, तस्मिन् । कर्मधारय तत्पुरुष)। शत्रुविप्लवे (शत्रूणां विप्लवः शत्रुविप्लवः, तस्मिन्। षष्ठी तत्पुरुष) । राजद्वारे (राज्ञः द्वारम् राजद्वारम्, तस्मिन्। षष्ठी तत्पुरुष) ।

क्रियापद : प्रथमगण (परस्मैपद) जीव् (जीवति) जीना **नि + गूह् (निगूहति)** छिपाना, छुपाना

(आत्मनेपद) : प्र + जन् > जा (प्रजायते) जन्म लेना, उत्पन्न होना

विशेष

(1) शब्दार्थ : माधुर्यम् मधुरता, मिठास **अक्षरव्यक्तिः** अक्षर की अभिव्यक्ति, अक्षर का स्पष्ट उच्चारण **पदच्छेदः** पदों का विग्रह, पद का विभाग **धैर्यम्** धैर्य **लयसमर्थम्** लय के अनुरुप **गावः** गाय, गौ **देयम्** देना, देना चाहिए

(2) संधि : पदच्छेदस्तु (पदच्छेदः तु) । षडेते (षट् एते) । चलाचलमिदम् (चल-अचलम् इदम्) । कीर्तिर्यस्य (कीर्तिः यस्य) । राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे (राजानः चक्षुर्भ्याम् इतरे) । लोभान्मोहश्च नाशश्च (लोभात् मोहः च नाशः च)। मक्षिकायाश्च (मक्षिकायाः च)। यस्तिष्ठति (यः तिष्ठति) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

(1) चलाचले संसारे किं निश्चलम् ? ◯

(क) यौवनम् (ख) कीर्तिः (ग) वित्तम् (घ) चित्तम्

(2) के शान्तिम् इच्छन्ति ? ◯

(क) धनिकाः (ख) पार्थिवाः (ग) साधवः (घ) नीचाः

(3) राजानः कैः पश्यन्ति ? ◯

(क) वेदैः (ख) शास्त्रैः (ग) चारैः (घ) नेत्रैः

(4) पापस्य कारणं किम् ? ◯

(क) अज्ञानम् (ख) क्रोधः (ग) लोभः (घ) कामः

(5) तक्षकस्य विषं कुत्र भवति ? ◯

(क) पुच्छे (ख) सर्वाङ्गे (ग) मस्तके (घ) दन्ते

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

(1) जडाय किं देयम् ?

(2) लोभात् किं प्रभवति ?

(3) वृश्चिकस्य विषं कुत्र भवति ?

3. उदाहरणानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् : ज्ञानाय (ज्ञान, अकारान्त-नपुंसकलिङ्गम्, चतुर्थी, एकवचनम्)

(1) गुणाः .....

(2) मक्षिका .....

(3) दरिद्राय .....

(4) लोकात् .....

(5) उत्सवे .....

4. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) पाठक के कितने गुण होते हैं ?

(2) गरीब को क्या देना चाहिए ?

(3) कवि मित्र किसे मानता है ?

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) चलाचलमिदम् ।

(2) व्रणमिच्छन्ति ।

(3) पदच्छेदस्तु ।

6. श्लोकानां पूर्तिः करणीया ।

(1) चलं चित्तं ..... स जीवति ॥

(2) दरिद्राय धनं ..... च भोजनम् ॥

प्रवृत्ति

- सुभाषितों की अन्ताक्षरी का आयोजन कीजिए ।
- सुभाषित लिखकर चार्ट तैयार कीजिए और सुभाषितों का हस्तलिखित अंक तैयार कीजिए ।
- सुभाषित में प्रयुक्त विभक्ति पहचानिए ।

6. सर्वं चारुतरं वसन्ते

[महाकवि कालिदास संस्कृत और समग्र विश्व के सुप्रसिद्ध कवि हैं । उनकी कुल सात रचनाएँ हैं, जिनमें मालविकाग्निमित्र, विक्रमोवर्शीय और अभिज्ञानशाकुन्तल नामक तीन नाटक, रघुवंश और कुमारसंभव दो महाकाव्य तथा ऋतुसंहार और मेघदूत ये दो खंडकाव्य हैं ।

महाराजा विक्रमादित्य के राजदरबार के नौ रत्नों में कालिदास भी एक थे, ऐसी मान्यता है । इसके आधार पर कालिदास का समय विक्रम की पहली शताब्दी (अर्थात् आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व) माना जाता है ।

ये महाकवि प्रकृति और उपमा के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं । एक तरफ अभिज्ञानशाकुन्तल में उन्होंने प्रकृतिगत अनेक पदार्थों को पात्र बनाया है तो दूसरी तरफ मेघदूत और ऋतुसंहार में हूबहू अद्वितीय प्रकृति वर्णन किया है ।

प्रस्तुत पाठ में ऋतुसंहार में से वसंत का वर्णन करने वाले पाँच श्लोकों का अध्यय करेंगे । इसमें किसी वस्तु का वर्णन किस तरह हो सकता है, इस बात को सीखने के साथ-साथ तत्पुरुष समास के कुछ प्रयोगों का भी अध्ययन करेंगे ।]

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः ।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः
सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते ॥1॥

वापीजलानां मणिमेखलानां
शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम् ।
आम्रद्रुमाणां कुसुमानतानां
ददाति सौभाग्यमयं वसन्तः ॥2॥

कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं
चलेषु नीलेष्वलकेष्वशोकम् ।
शिखासु पुष्पं नवमल्लिकायाः
प्रयान्ति कान्तिं प्रमदाजनानाम् ॥3॥

गुरूणि वासांसि विहाय तूर्णं
तनूनि लाक्षारसरञ्जितानि ।
सुगन्धिकालागुरुधूपितानि
धत्ते जनः काममदालसाङ्गः ॥4॥

किं किंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्न भिन्नं
किं कर्णिकारकुसुमैर्न हतं मनोजैः ।
यत्कोकिलः पुनरयं मधुरैर्वचोभिः
यूनां मनः सुवदनानिहितं निहन्ति ॥5॥

– ऋतुसंहारे

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : द्रुमः वृक्ष, पेड़ **प्रदोषः** रात्रि, रात्रि का प्रारंभिककाल **प्रमदाजनः** स्त्रियाँ, महिलाएँ **आम्रद्रुमः** आम का पेड़

(नपुंसकलिंग) : सलिलम् पानी **किंशुकम्** पलाश के पुष्प

सर्वनाम : सर्वम् सब

विशेषण : चारुतर अतिशय सुन्दर, अधिक सुन्दर, अधिक आनंददायक **चल** चलो, चलने वाला **गुरु** बड़ा, मोटा

अव्यय : तूर्णम् जल्दी, शीघ्र, झटपट

समास : वापीजलानाम् (वापीनाम् जलानि-वापीजलानि, तेषाम् । षष्ठी तत्पुरुष) । मणिमेखलानाम् (मणीनाम् मेखलाः-मणिमेखलाः, तेषाम् । षष्ठी तत्पुरुष) । आम्रद्रुमाणाम् (आम्रस्य द्रुमाः-आम्रद्रुमाः, तेषाम् । षष्ठी तत्पुरुष) । कुसुमानतानाम् (कुसुमैः आनताः-कुसुमानताः, तेषाम् । तृतीया तत्पुरुष) । लाक्षारसरञ्जितानि (लाक्षायाः रसः-लाक्षारसः, षष्ठी तत्पुरुष, लाक्षारसेन रंजितानि-लाक्षारसरंजितानि, तृतीया तत्पुरुष) । कर्णिकारकुसुमैः (कर्णिकारस्य कुसुमानि-कर्णिकारकुसुमानि, तैः । षष्ठी तत्पुरुष) । सुवदनानिहितम् (सुवदनासु निहितम् । सप्तमी तत्पुरुष)

विशेष

(1) शब्दार्थ : सपुष्पाः फूलों के साथ **सपद्मम्** कमलोंवाला **सकामाः** कामनावाली, प्रेमयुक्त **वापीजलानाम्** वावडियों के जल का **मणिमेखलानाम्** मणियों के कमरबन्ध वाली **शशाङ्ककभासाम्** चन्द्र जैसी कान्तिवाली **कुसुमानतानाम्** फूलों से झुका, बौर से झुका हुआ **ददाति** देता है **नवकर्णिकारम्** ताजा कनैर का फूल **अलकेषु** बालों में **कान्तिं प्रयान्ति** शोभा प्राप्त करता है, सुन्दरता प्राप्त करता है **वासांसि** वस्त्र **विहाय** (वि + हा + त्वा > य) छोड़कर **तनूनि** पतले **सुगन्धि-कालागुरु-धूपितानि** सुगन्धयुक्त काले अगरू के धूपवाले **धत्ते** धारण करता है **काम-मद-अलस-अङ्गः** प्रेम के आवेग से आलसी शरीर वाला **शुक-मुखच्छविभिः** तोते की चोंच जैसी कान्तिवाला, **वचोभिः** वचनों से कलरव से **सुवदना-निहितम्** सुन्दर मुखवाली स्त्रियों में रहे हुए को **निहन्ति** मारते हैं, दमन करते हैं नष्ट करते हैं **यूनाम्** युवकों के

(2) सन्धि : पुनरयम् (पुनः अयम्) । दिवसश्च (दिवसः च) । शुकमुखच्छविभिर्न (शुकमुखच्छविभिः न) । (कर्णिकारकुसुमैर्न, मधुरैर्वचोभिः जैसे शब्दों में भी ऐसी ही सन्धि है ।)

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

(1) वसन्ते पवनः कीदृशो भवति ? ◯

(क) सुगन्धिः (ख) कठोरः (ग) मृदुः (घ) उष्णः

(2) कः मधुरैः वचोभिः मनः निहन्ति ? ◯

(क) मयूरः (ख) वायसः (ग) कोकिलः (घ) चटकः

(3) रेखाङ्कितपदस्य समासनाम लिखत । - वापीजलानां सौभाग्यं ददाति । ◯

(क) तत्पुरुषः (ख) षष्ठीतत्पुरुषः (ग) द्वन्द्वः (घ) इतरेतरद्वन्द्वः

(4) 'पद्म' शब्दस्य अर्थः कः ? ◯

(क) कमल (ख) पैर (ग) पादुका (घ) पवित्र

(5) 'वदनम्' शब्दस्य पर्यायशब्दं चित्वा लिखत । ◯

(क) वादः (ख) मुखम् (ग) वादनम् (घ) वाद्यम्

2. अधोलिखितानां प्रश्नानां संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) वसन्तः सौभाग्यरसं कस्मै ददाति ?

(2) अलकाः कीदृशाः सन्ति ?

(3) लाक्षारसरञ्जितानि वासांसि कीदृशानि सन्ति ?

(4) यूनां मनः कः हन्ति ?

(5) वसन्ते जलं कीदृशं भवति ?

3. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) वसन्त ऋतु किस-किस को क्या देती है ?

(2) काव्य के आधार पर वसंतऋतु विषय पर पाँच वाक्य लिखिए ।

4. क-विभागं ख-विभागेन सह यथार्थरीत्या संयोजयत ।

क	ख
(1) सलिलम्	(1) अलकेषु
(2) प्रदोषाः	(2) विहाय
(3) प्रमदाजनानाम्	(3) तनूनि वासांसि
(4) गुरूणि वासांसि	(4) सपद्मम्
(5) जनः धत्ते	(5) सुखाः
	(6) पवनः

प्रवृत्ति

- संस्कृत साहित्य में अन्यत्र प्राप्त वसन्त ऋतु के वर्णनों को एकत्र कीजिए तथा उसमें आलेखित शब्द-चित्रों को प्रकट कीजिए ।

7. संहतिः कार्यसाधिका

[हितोपदेश संस्कृत का प्रसिद्ध कथाग्रंथ है । उसके रचयिता पंडित नारायण हैं । ऐसा माना जाता है कि इसकी रचना ईसवी सन् के नवें शतक में हुई है । इसमें नीतिबोध कराने वाली विविध प्राणी कथाएँ हैं । जिनमें से एक कथा यहाँ प्रस्तुत है ।

इस कथा में संगठन की महिमा का वर्णन है । लेकिन उसकी पृष्ठभूमि पर अलग ढंग से विचार किया गया है । सभी जगह शंका करें तो खाना-पीना भी नहीं मिल सकता है । इस कारण किसी भी प्रकार की शंका किए बिना साहसपूर्वक कार्य करना चाहिए । इस तरह कार्य करते समय जब लोभ या ऐसे ही किसी दूसरे कारण से व्यक्ति मुसीबत में पड़ता है तब उस मुसीबत से बाहर निकलने के लिए संहति अर्थात् संगठन उपयोगी सिद्ध होता है, यही बात कथा द्वारा बताई गई है ।

प्राणीजगत यदि संहति बनाए रख सकता हो, तो विचार करें कि मानव समुदाय को भी इस संहति को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए । ऐसी सलाह भी यहाँ है । प्रस्तुत कहानी का नीतिशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन करने के साथ-साथ यहाँ प्रयोग किए गए भूतकाल के क्रियापदों के रूपों का भी अध्ययन करना है ।]

अस्ति गोदावरीतीरे विशालः शाल्मलीतरुः । विविधेभ्यः देशेभ्यः समागताः बहवः विहगाः तत्र रात्रौ निवसन्ति । तेषु लघुपतनकनामा वायसः अपि एकतमः अस्ति । अथ कदाचित् प्रभातकाले स वायसः कृतान्तं द्वितीयम् इव अटन्तं व्याधमपश्यत् । तमवलोक्य सोऽचिन्तयत्, 'अद्य प्रातरेव अनिष्टदर्शनं संजातम्, न जाने तत् किमनभिप्रेतं दर्शयिष्यति ।' इति विचिन्त्य स व्याकुलः संजातः ।

अथ तेन व्याधेन तण्डुलकणान् विकीर्य जालं विस्तीर्णम् । स च वृक्षस्य पृष्ठभागे प्रच्छन्नो भूत्वा अतिष्ठत् । तस्मिन्नेव काले चित्रग्रीवनामा कपोतराजः परिवारेण सह गगने व्यसर्पत् । भूमौ विकीर्णान् तण्डुलकणान् दृष्ट्वा कपोताः लुब्धाः अभवन् । ततः स कपोतराजः तण्डुलकणलुब्धान् कपोतान् अकथयत्, 'कुतोऽत्र निर्जने वने तण्डुलकणानां सम्भवः ? तन्निरूप्यताम् तावत् । भद्रमिदं न पश्यामि । अनेन तण्डुलकणलोभेन अस्माकं महदनिष्टमपि भवितुमर्हति । अतः सर्वथा अविचारितं कर्म न कर्तव्यम् । यतः -

सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः
सुशासिता श्रीः नृपतिः सुसेवितः ।
सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृतं
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम् ।।

एतद्वचनं श्रुत्वा कश्चित् कपोतः सदर्पमवदत्, "आः ! किमेवमुच्यते ?

वृद्धानां वचनं ग्राह्यम् आपत्काले ह्युपस्थिते ।
सर्वत्रैवं विचारेण भोजनेप्यप्रवर्तनम् ॥

उक्तं च –

शङ्काभिः सर्वमाक्रान्तमन्नं पानं च दुर्लभम् ।
प्रवृत्तिः कुत्र कर्तव्या जीवितव्यं कथं नु वा ।।"

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सर्वे कपोताः तत्र जाले उपाविशन् । अनन्तरं ते सर्वे जालेन बद्धाः अभवन् ।

अथ जालबद्धाः ते यस्य वचनेन तत्र समपतन् तस्य कपोतस्य तिरस्कारं कुर्वन्ति स्म । तस्य तिरस्कारं श्रुत्वा चित्रग्रीवः अवदत्, "विपत्काले विस्मय एव कापुरुषलक्षणम् । तदत्र धैर्यमवलम्ब्य इदानीमेवं क्रियताम् । सर्वैः एकचित्तीभूय जालमादाय उड्डीयताम् । यतः –

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैः बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥"

इति विचिन्त्य सर्वे कपोताः जालमादाय उत्पतिताः । ततः स व्याधः तान् जालापहारकान् अवलोक्य पश्चात् धावति । परन्तु तान् सुदूरं गतान् दृष्ट्वा व्याधः प्रतिनिवृत्तः । लुब्धकं निवृत्तं दृष्ट्वा चित्रग्रीवः अवदत्, "हिरण्यकनामकस्य मम मित्रस्य मूषकराजस्य समीपे वयं गच्छामः । स अस्मान् बन्धनात् मुक्तान् करिष्यति ।" ततः ते मूषकराजस्य समीपं समगच्छन् । चित्रग्रीवस्य मित्रेण मूषकराजेन स्वकीयैः तीक्ष्णैः दन्तैः सर्वेषां बन्धनानि छिन्नानि । चित्रग्रीवोऽपि हिरण्यकस्य आभारं मत्वा सपरिवारः यथेष्टदेशान् समगच्छत् ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : शाल्मलीतरुः सेमल का वृक्ष **विहगः** पक्षी **वायसः** कौआ **कृतान्तः** यमराज, मृत्यु के देव **व्याधः** शिकारी **तण्डुलकणः** चावल का कण, दाना **कपोतः** कबूतर **कापुरुषः** कायर पुरुष **विस्मयः** आश्चर्य, ताजुब **प्रतीकारः** सामना **मूषकराजः** चूहों का राजा, मुख्य चूहा

(स्त्रीलिंग) : श्रीः लक्ष्मी **विक्रिया** विकार **संहतिः** संगठन **कार्यसाधिका** कार्य को सिद्ध करने वाला

(नपुंसकलिंग) : जालम् जाल **भद्रम्** कल्याण, शुभ **अनिष्टम्** इष्ट इच्छित न हो, बुरा अहित **गुणत्वम्** रस्सी रूप, रस्सी का स्वरूप

सर्वनाम : तेषु उनमें (बहुवचन) **सः** वह (पुल्लिंग) **अनेन** इसके द्वारा **अस्माकम्** हमारा, अपना **एतत्** यह, (नपुँसकलिंग) **सर्वे** सब **ते** वे (पुल्लिंग) **यस्य** जिसका **तस्य** उसका **सर्वैः** सबके द्वारा **तान्** उनको (पुल्लिंग) **मम** मेरा **वयम्** हम **सर्वेषाम्** सबका, सभी का

विशेषण : समागत आया हुआ **एकतम** अनेकों में एक **विकीर्ण** फैला हुआ **महत्** बड़ा **अविचारित** बिना सोचे समझे **सुजीर्णम्** अच्छी तरह पचने योग्य **सुविचक्षण** कुशल, बुद्धिमान, होशियार

सुशासित अच्छी तरह से शासित, काबू में रखा गया **सुसेवितः** अच्छी तरह पोषित किया गया **अल्प** थोड़ा, कम **कर्तव्य** करने योग्य, **ग्राह्य** ग्रहण करने योग्य **लभ्य** प्राप्त करने योग्य **आक्रान्त** घिरा हुआ **लुब्ध** लोभी **आपन्न** प्राप्त हुई **मत्त** अभिमानी **छिन्न** कटा हुआ **उक्त** कहा गया है ।

अव्यय : अस्ति है (हयाती अस्तित्व को दर्शाता है) **अपि** भी **प्रातरेव** सबेरे ही **तावत्** उतना, वैसा, अतः इसलिए, इस वजह से **सर्वथा** हर प्रकार से **आः** अरे (क्रोध, दुःख और विरोध दर्शाता है) **सर्वत्र** हर जगह **कुत्र** कहाँ, किसी जगह **कथम्** किसलिए, कैसे **नु** निश्चित् **वा** अथवा **तत्र** वहाँ, उस जगह **अथ** प्रारम्भ का सूचक अव्यय, अब **तदत्र** इसलिए यहाँ **इदानीम्** अभी, इस समय **एवम्** इसप्रकार **इति** समाप्ति का सूचक, इस तरह से, इस प्रकार ।

समास : गोदावतीतीरे (गोदावर्याः तीरम् - तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । शाल्मलीतरुः (शाल्मल्याः तरुः । षष्ठी तत्पुरुष) । प्रभातकाले (प्रभातस्य कालः - प्रभातकालः, तस्मिन्, षष्ठी तत्पुरुष) । अनिष्टदर्शनम् (अनिष्टस्य दर्शनम्, षष्ठी तत्पुरुष) । तण्डुलकणान् (तण्डुलस्य कणाः, तान् । षष्ठी तत्पुरुष) । पृष्ठभागे (पृष्ठस्य भागः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । कपोतराजः (कपोतनाम् राजा, कपोतराजः । षष्ठी तत्पुरुष) । तण्डुलकणलुब्धान् (तण्डुलकणैः लुब्धाः । तण्डुलकणलुब्धाः, तान् । तृतीया तत्पुरुष) । तण्डुलकणलोभेन (तण्डुलकणानां लोभः, तेन । षष्ठी तत्पुरुष) । आपत्काले (आपदः कालः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । जालबद्धाः (जालेन बद्धाः । तृतीया तत्पुरुष) । विपत्काले (विपदः कालः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । कापुरुषलक्षणम् (कापुरुषस्य लक्षणम् । षष्ठी तत्पुरुष) । कार्यसाधिका (कार्यस्य साधिका । षष्ठी तत्पुरुष) । मूषकराजम् (मूषकानां राजा, मूषकराजः, तम् । षष्ठी तत्पुरुष) ।

कृदन्त : अवलोक्य (अव + लुक् + त्वा > य) । विचिन्त्य (वि + चिन्त् + त्वा > य) । भूत्वा (भू + त्वा) । सुचिन्त्य (सु + चिन्त् + त्वा > य) । सुविचार्य (सु + वि + चर् > चार् + त्वा > य) । श्रुत्वा (श्रु + त्वा) । अवलम्ब्य (अव + लम्ब् + त्वा > य) । एकचित्तीभूय (एकचित्त + भू + त्वा > य) । आदाय (आ + दा + त्वा > य) । दृष्ट्वा (दृश् + त्वा) । मत्वा (मन् + त्वा) ।

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) **नि + वस् (निवसति)** निवास करना, रहना **वि + सृप् (विसर्पति)** सरकना, आ पहुँचना **उप + विश् (उपविशति)** पास में बैठना **सम् + पत् (सम्पतति)** गिरना **गम् - गच्छ् (गच्छति)** जाना

विशेष

(1) शब्दार्थ : कृतान्तमिव अटन्तम् यमराज की तरह घूमते हुए **अनभिप्रेतम्** न चाहना, चाह न हो वह, इच्छा न हो वह **दर्शयिष्यति** दिखाएगा, बताएगा **विस्तीर्णम्** चौड़ा, फैला हुआ **प्रच्छन्नो भूत्वा** छिपकर, छुपकर **तन्निरूप्यताम्** उसके बारे में विचार कीजिए, उसका निर्णय या निश्चय कीजिए **भद्रमिदं न पश्यामि** मैं इसे कल्याण-शुभ या अच्छा नहीं देखता हूँ **न याति विक्रियाम्** उत्पन्न नहीं होता **सदर्पम्** अभिमान से युक्त **किमेवमुच्यते** ऐसा क्यों कहते हैं ? **भोजनेप्यप्रवर्तनम्** भोजन भी नहीं हो सकता **शङ्काभिः** शंकाओं से, संदेह से **सर्वमाक्रान्तम्** सभी ओर से घिरा हुआ **तिरस्कारम्** अवहेलना, निन्दा को **विपत्काले** विपत्ति के समय में **विस्मय एव कापुरुषलक्षणम्** विस्मय होना ही कायर पुरुष का लक्षण है । कायर पुरुष ही विस्मय व आश्चर्य करता है । **एकचित्तीभूय** एकचित्त होकर **आदाय** लेकर **उड्डीयताम्** उड़ जाओ **तृणैर्गुणत्वमापन्नैः** तिनकों से बनी हुई रस्सी के द्वारा **बध्यन्ते** बांधा जाता है, बंधता है **मत्तदन्तिनः** मदोन्मत्त हाथियों का **जालापहारकान्** जाल को ले जाने वालों को **प्रतिनिवृत्तः** वापस आया **यथेष्टदेशान्** पसंदगी के स्थान पर, मनपसंद स्थान ।

(2) सन्धि : सोऽचिन्तयत् (सः अचिन्तयत्) । प्रातरेव (प्रातः एव) । तन्निरूप्यताम् (तत् निरूप्यताम्) । सुदीर्घकालेऽपि (सुदीर्घकाले अपि) । ह्युपस्थिते (हि उपस्थिते) । सर्वत्रैवम् (सर्वत्र एवम्) । भोजनेप्यप्रवर्तनम् (भोजने अपि अप्रवर्तनम्) । तृणैर्गुणत्वमापन्नैः (तृणैः गुणत्वम् आपन्नैः) । चित्रग्रीवोऽपि (चित्रग्रीवः अपि) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

(1) प्रभातकाले वायसः कम् अपश्यत् ?

(क) कपोतम् (ख) व्याधम् (ग) वृक्षम् (घ) मूषकम्

(2) गगने कः सपरिवारः व्यसर्पत् ?

(क) वायसः (ख) पक्षिराजः (ग) चित्रग्रीवः (घ) मयूरः

(3) विपत्काले किं करणीयम् ?

(क) विस्मयस्य अवलम्बनम् (ख) प्रतीकारः

(ग) पलायनम् (घ) धैर्यस्य अवलम्बनम्

(4) तृणैर्गुणत्वमापन्नैः के बध्यन्ते ?

(क) मत्तदन्तिनः (ख) सिंहाः (ग) कपोताः (घ) मूषकाः

(5) मूषिकराजेन कपोतानां बन्धनानि केन छिन्नानि ?

(क) दन्तैः (ख) मुखेन (ग) अस्त्रेण (घ) शस्त्रेण

(6) सः तीक्ष्णै दन्तैः जालं ..... प्रायतत ।

(क) छित्त्वा (ख) छेदनीयं (ग) छेत्तुम् (घ) छिन्नं

(7) 'दन्ती' शब्दस्य अर्थः कः ?

(क) हाथी (ख) एक दाँत वाला (ग) कुदाली (घ) गणेश

(8) 'वयम्' पदस्य एकवचनम् किम् ?

(क) अहम् (ख) त्वम् (ग) सः (घ) आवाम्

(9) रेखाङ्कितपदस्य समासनाम लिखत । – व्याधेन तण्डुलकणान् विकीर्य जालं विस्तीर्णम् ।

(क) षष्ठीतत्पुरुषः (ख) द्वन्द्वः (ग) द्वितीयातत्पुरुषः (घ) समाहारद्वन्द्वः

(10) 'स्म' प्रयोगं कुरुत ।

विहगाः तत्र न्यवसन् ।

(क) न्यवसन्ति स्म (ख) निवसन्ति स्म (ग) निवसति स्म (घ) निवसन् स्म

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

(1) तण्डुलकणान् अवलोक्य कपोताः कीदृशाः अभवन् ?

(2) बद्धाः कपोताः कं तिरस्कुर्वन्ति स्म ?

(3) अल्पानां वस्तूनां संहतिः कीदृशी भवति ?

(4) जालेन सह उत्पतिताः विहगाः कुत्र गच्छन्ति ?

(5) भूतले शङ्खाभिः किम् आक्रान्तं भवति ?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत ।

(कदा, केन, कस्य, कम्, किं कृत्वा, कुत्र, किम्)

(1) गोदावरीतीरे विशालः शाल्मलीतरुः अस्ति ।

(2) व्याधेन जालं विस्तीर्णम् ।

(3) व्याधेन तण्डुलकणान् विकीर्य जालं विस्तीर्णम् ।

(4) वायसः प्रभातकाले व्याधम् अपश्यत् ।

(5) चित्रग्रीवस्य मित्रं मूषकराजः अस्ति ।

4. घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत ।

(1) अनन्तरं ते सर्वे जालेन बद्धाः अभवन् ।

(2) मूषकराजेन स्वकीयैः तीक्ष्णैः दन्तैः सर्वेषां बन्धनानि छिन्नानि ।

(3) वायसः कृतान्तम् इव द्वितीयम् अटन्तं व्याधम् अपश्यत् ।

(4) तदत्र धैर्यमवलम्ब्य इदानीमेवं क्रियताम् ।

(5) वृद्धानां वचनम् आपत्काले ग्राह्यम् एव ।

(6) इति विचिन्त्य कपोताः सर्वे जालमादाय उत्पतिताः ।

5. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) शिकारी को देखकर कौए ने क्या सोचा ?

(2) चावल के दानों से ललचाए हुए कबूतरों को चित्रग्रीव ने क्या कहा ?

(3) घमंडी कबूतर ने वृद्धों के वचन के बारे में कैसा प्रतिभाव दिया ?

(4) कबूतर जाल में से कैसे मुक्त हुए ?

6. मातृभाषायाम् अनुवादं कुरुत ।

(1) विविधेभ्यः देशेभ्यः समागताः विहगाः तत्र रात्रौ निवसन्ति ।

(2) चित्रग्रीवनामा कपोतराजः परिवारेण सह गगने व्यसर्पत् ।

(3) तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सर्वे कपोताः तत्र जाले उपाविशन् ।

(4) व्याधः तान् जालापहारकान् अवलोक्य पश्चात् धावति ।

(5) तीक्ष्णैः दन्तैः बन्धनानि छिन्नानि ।

प्रवृत्ति

- हितोपदेश की अन्य कोई एक कहानी अपने शब्दों में लिखिए ।
- संपूर्ण पाठ का हिन्दी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

8. काषायाणां कोऽपराधः

[महात्मा गांधी के साथ काका साहब कालेलकर ने काफी समय तक काम किया था । अनेक वर्षों तक उन्हें महात्मा गांधी के साथ रहने, घूमने तथा विचारविमर्श करने का अवसर मिला था ।

ऐसे विविध अवसरों पर घटित कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं को काका कालेलकर ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा से अलग ढंग से साकार किया है । उनमें से कई घटनाएँ आज भी हमें प्रेरणा देती हैं । काका साहब द्वारा गुजराती भाषा में लिखी एक घटना का सरल संस्कृत में अनुवाद तथा आवश्यक संपादन कार्य करके प्रस्तुत पाठ तैयार किया गया है ।

इस घटना का मुख्य उपदेश है कि सेवाकार्य में मनुष्य की अपनी प्रतिष्ठा बाधक न बने, इसका सदैव ध्यान रखना चाहिए । यह भी सबको समझाना चाहिए कि मन में स्थित धर्म के साथ वस्त्रों का स्थायी संबंध नहीं होता है ।]

महात्मा गान्धिमहोदयः स्वातन्त्र्यान्दोलनं प्रारभत । अस्यान्दोलनस्य निखिलोऽपि व्यवहारः प्रारम्भेषु दिवसेषु साबरमती-आश्रमे एव प्राचलत् । एकस्मिन् दिवसे स्वामी सत्यदेवः आश्रमम् आगच्छत् । सः देशस्य स्वतन्त्रतार्थं कार्यरतस्य गान्धिमहोदयस्य कार्येण अतीव प्रभावितः प्रसन्नः चासीत् । सः गान्धिमहोदयायाकथयदहं भवतः आश्रमे प्रवेशं निवासं च इच्छामि । देशस्य स्वतन्त्रतायै कार्यं कर्तुं ममापि महतीच्छा वर्तते ।

सत्यदेवस्य प्रस्तावं गान्धिमहोदयः स्वीकृत-वान् । गान्धिमहोदयः अकथयत् – ''साधु, स्वागतमत्र भवतः । आश्रमोऽयं भवत एव, किन्तु आश्रमप्रवेशात् पूर्वं भवता काषायवस्त्राणां त्यागः करणीयः ।'' गान्धिमहोदयस्य आदेशं श्रुत्वा आश्चर्यान्वितः स्वामिसत्यदेवः मनसि अकुप्यत् । किन्तु सः गान्धिमहोदयस्य पुरतः निजरोषं नाप्रकटयत् । सोऽकथयत्, ''कथं काषायवस्त्राणां त्यागः ? काषायवस्त्राणां कोऽपराधः ? अहं संन्यासिजनः । संन्यासिनः काषायवस्त्राणि परिधारयन्ति । अहं काषायवस्त्राणां त्यागं कर्तुं कथं प्रवृत्तो भवामि ।''

स्वामिसत्यदेवस्य वचनं श्रुत्वा शान्तस्वरेण गान्धिमहोदयः अकथयत्, ''भवता यदुक्तं तत्सत्यमस्ति । किन्तु भवान् संन्यासस्य त्यागं करोतु इति न ममाशयः । केवलं काषायवस्त्राणां त्यागं कर्तुं वदामि ।''

गान्धिमहोयदस्य कथनतात्पर्यमजानानः सत्यदेवः विचारमुद्रायां स्थितः, मौनं चावलम्बितवान् ।

तस्य तादृशीं मनोदशाम् अवगम्य गान्धिमहोदयः स्वकीयमाशयं स्पष्टं कर्तुं शान्तभावेन मृदुभाषया च सत्यदेवायाकथयत् । – "शृणोतु भवान् सावधानेन मनसा । वयं अन्येषां सेवां कर्तुं प्रवृत्ताः स्मः । एतदेवास्माकं ध्येयमस्ति । भवान् जानात्येव यदस्माकं देशे जनाः काषायवस्त्रधारिणः संन्यासिनः सेवां कर्तुं सदैव समुत्सुकाः भवन्ति । यदा भवान् सेवाकार्याय प्रवृत्तः भविष्यति तदा काषायवस्त्रधारिणं भवन्तं दृष्ट्वा एकतः ते भवतः सेवाकार्यं न अङ्गीकरिष्यन्ति, अपरतः ते भवतः सेवां कर्तुं प्रवृत्ताः भविष्यन्ति । अनेन किमस्माकं ध्येयस्य हानिः न भविष्यति ? संन्यासस्तु मनोगतः सङ्कल्पः एव । तस्य परिधानेन सह सम्बन्धः कयापि दृष्ट्या न योग्यः । अहं निश्चितं मन्ये यत् काषायवस्त्राणां त्यागेन संन्यासत्यागः नैव भविष्यति । अतः विचारयतु भवान्, तदनन्तदरं यद्योग्यम् तत्करोतु ।"

गान्धिमहोदयस्य एतादृशं वचनं श्रुत्वा स्वामिसत्यदेवस्य संशयः तस्मिन्नेव क्षणे व्यपगतः । सः काषायवस्त्राणां त्यागं कृत्वा सेवाकार्ये आत्मानं योजयितुं सन्नद्धोऽभवत् ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : निजरोषः अपना क्रोध **अपराधः** गुनाह, दोष **सङ्कल्पः** निश्चय (संकल्प), मनसूबा, इरादा

(स्त्रीलिंग) : विचारमुद्रा विचार की मुद्रा **मनोदशा** मन की दशा **हानिः** नुकसान

(नपुंसकलिंग) : आन्दोलनम् हलचल मचाना जिससे **काषायवस्त्रम्** गेरुआ वस्त्र, संन्यासियों के वस्त्र गेरुए रंग के होते हैं **मौनम्** मौन, चुप रहने के अर्थ में **ध्येयम्** ध्यान करने योग्य, लक्ष्य

सर्वनाम : एकस्मिन् एकबार **भवतः** आपका (पुं.) **अन्येषाम्** दूसरों का, अन्य का **अस्माकम्** हमारा **भवन्तम्** तुम्हें, आपको

विशेषण : निखिल सम्पूर्ण, पूरा **कार्यरत** काम में लगा हुआ **प्रसन्न** खुश, प्रसन्नचित्त **महती** बड़ी **स्वकीय** अपना **मनोगत** मन में रहा हुआ **सन्नद्ध** तैयार, सुसज्ज

अव्यय : अतीव अत्यन्त **साधु** ठीक, स्वीकृत वाचक उद्‌गार **एकतः** एक तरफ **अपरतः** दूसरी तरफ

समास : स्वातन्त्र्यान्दोलनम् (स्वातन्त्र्यस्य आन्दोलनम् । षष्ठी तत्पुरुष) । कार्यरतस्य (कार्येषु रतः – कार्यरतः, तस्य । सप्तमी तत्पुरुष) । आश्रमप्रवेशात् (आश्रमस्य प्रवेशः – आश्रमप्रवेशः, तस्मात् । (षष्ठी तत्पुरुष) । निजरोषम् (निजस्य रोषः निजरोषः, तम् । षष्ठी तत्पुरुष) । कथनतात्पर्यम् कथनस्य तात्पर्यम् । षष्ठी तत्पुरुष) । विचारमुद्रायाम् (विचारस्य मुद्रा विचारमुद्रा, तस्याम् । षष्ठी तत्पुरुष) । मनोदशाम् (मनसः दशा, मनोदशा, ताम् । षष्ठी तत्पुरुष) । सेवाकार्याय (सेवायाः कार्यम् सेवाकार्यम्, तस्मै । षष्ठी तत्पुरुष) । मनोगतः (मनः गतः, द्वितीया तत्पुरुष) । संन्यासत्यागः (संन्यासस्य त्यागः । षष्ठी तत्पुरुष) ।

कृदन्त : कर्तुम् (कृ + तुम्) । श्रुत्वा (श्रु + त्वा) । अवगम्य (अव + गम् + त्वा > य) । दृष्ट्वा (दृश् + त्वा) योजयितुम् (युज्-(प्रेरक) + तुम्) ।

क्रियापद : प्रथम गण : (परस्मैपद) **प्र + चल् (प्रचलति)** चलना **आ + गम् > गच्छ् (आगच्छति)** आना **इष्-इच्छ् (इच्छति)** इच्छा करना

(आत्मनेपद) **प्र + आ + रभ्** (**प्रारभते**) प्रारम्भ करना, शुरू करना

चतुर्थ गण : (परस्मैपद) **कुप्** (**कुप्यति**) आग बबूला होना, क्रोधित होना

दशम गण : (परस्मैपद) **वि + चर्** (**विचारयति**) सोचना

विशेष

(1) शब्दार्थ : प्रभावितः प्रभावित हुआ **प्रसन्नः** खुश **प्रस्तावम्** प्रस्तावना, दरखास्त **स्वीकृतवान्** स्वीकार किया **करणीयः** करना चाहिए **आश्चर्यान्वितः** आश्चर्य चकित **मनसि** मन में **न अप्रकटयत्** प्रकट नहीं किया **संन्यासिजनाः** संन्यासी लोग **परिधारयन्ति** पहनते हैं, धारण करते हैं **सन्** होकर **मम आशयः** मेरा आशय, मेरा इरादा **अजानानः** नहीं जानता, अनजाना **मौनम् अवलम्बितवान्** मौन का आधार लिया, मौन धारण किया **प्रवृत्ताः स्मः** प्रवृत्त हुए है **समुत्सुकाः** उत्सुक, तैयार **न अङ्गीकरिष्यन्ति** स्वीकार नहीं करेंगे **परिधानेन सह** पहनावे के साथ, वेशभूषा के साथ **कयापि दृष्ट्या** किसी भी दृष्टि से, किसी भी तरह **विचारयतु भवान्** आप सोचें **तदनन्तरम्** इसके बाद **तत्करोतु** वैसा करो **व्यपगतः** दूर हो गया । चला गया ।

(2) संधि : अस्यान्दोलनस्य (अस्य आन्दोलनस्य) । निखिलोऽपि (निखिलः अपि) । गान्धिमहोदयायाकथयदहम् (गान्धिमहोदयाय अकथयत् अहम्) । ममापि (मम अपि) । महतीच्छा (महती इच्छा) । नाप्रकटयत् (न अप्रकटयत्) । प्रवृत्तो भवामि (प्रवृत्तः भवामि) । एतदेवास्माकम् (एतत् एव अस्माकम्) । जानात्येव (जानाति एव) । संन्यासस्तु (संन्यासः तु) । यद्योग्यम् (यत् योग्यम्) ।

स्वाध्याय

1. निम्नप्रश्नानाम् उत्तराणि समुचितं विकल्पं चित्वा लिखत ।

(1) स्वातन्त्र्यान्दोलनस्य व्यवहारः आरम्भदिनेषु कुत्र प्राचलत् ? ◯

(क) साबरमती–आश्रमे (ख) वर्धा–आश्रमे (ग) दांडीसमीपे (घ) पालडी–ग्रामे

(2) गान्धिमहोदयस्य कार्येण कः प्रभावितः प्रसन्नः च आसीत् ? ◯

(क) सत्यदेवः (ख) महादेवः (ग) निपुणस्वामी (घ) जवाहरलालः

(3) गान्धिमहोदयस्य पुरतः किं कर्तुं सत्यदेवः समर्थः न अभवत् ? ◯

(क) सेवाकार्यम् (ख) रोषं प्रकटयितुम् (ग) रोषं गोपयितुम् (घ) आश्रमं गन्तुम्

(4) सत्यदेवस्य वचनं श्रुत्वा गान्धिमहोदयः कथम् अवदत् ? ◯

(क) शान्तस्वरेण (ख) क्रुद्धस्वरेण (ग) श्रान्तस्वरेण (घ) दृढसंकल्पेन

(5) संन्यासः कीदृशः सङ्कल्पः वर्तते । ◯

(क) मननीयः (ख) मोहगतः (ग) मनोगतः (घ) काषायपरिधानस्य

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) सत्यदेवः कः आसीत् ?

(2) गान्धिमहोदयस्य ध्येयं किम् आसीत् ?

(3) जनाः कस्य सेवां न अङ्गीकुर्वन्ति ?

(4) कस्य त्यागेन संन्यासस्य त्यागः न भवति ?

(5) स्वामिसत्यदेवः किमर्थं सन्नद्धः अभवत् ?

3. अधोलिखितानि क्रियापदानि वर्तमानकालस्य (लट्लकारस्य) रूपत्वेन परिवर्तयत ।

(1) प्रारभत (2) आगच्छत् (3) अकथयत्

(4) भविष्यन्ति (5) अकुप्यत्

4. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितपदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(के, केषाम्, कीदृशेन, कस्य, कः, कथम्)

(1) सत्यदेवस्य प्रस्तावं गान्धिमहोदयः स्वीकृतवान् ।

(3) संन्यासिजनाः काषायवस्त्राणि परिधारयन्ति ।

(4) केवलं काषायवस्त्राणां त्यागं कर्तुं वदामि ।

(5) शृणोतु भवान् सावधानेन मनसा ।

(6) ते भवतः सेवाकार्यं न अङ्गीकरिष्यन्ति ।

5. शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	.....	.....	दिवसेषु
(2)	कार्यरतस्य	.....	.....
(3)	.....	.....	स्वरैः
(4)	.....	त्यागाभ्याम्	.....
(5)	देशे	.....	.....

6. उदाहरणानुसारं धातुरूपाणां परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् :

	धातुरूपम्	कालः	पदम्	पुरुषः	वचनम्
	मन्ये	वर्तमानकालः	आत्मनेपदम्	उत्तमपुरुषः	एकवचनम्
(1)	भविष्यन्ति	.....	.....	.....	.....

(2) प्राचलत् ....

(3) अकथयत् ....

(4) भवामि ....

7. प्रदत्तान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) एक दिन आश्रम में आए ।

एक दिवस आश्रम आ + गम् ।

(2) कार्य से अत्यन्त प्रभावित थे ।

कार्य अतीव प्रभावित अस् ।

(3) त्याग करने के लिए कैसे प्रवृत्त होऊँ ?

त्याग कृ+तुम् कथम् प्रवृत्त भू ।

(4) सिर्फ काषायवस्त्रों का त्याग करने के लिए कहता हूँ ।

केवल काषायवस्त्र त्याग वद् ।

8. कृदन्त-प्रकारं लिखत ।

(1) विकीर्य ..... ।

(2) भवितुम् ..... ।

(3) आदाय ..... ।

(4) छेत्तुम् ..... ।

(5) धृत्वा ..... ।

9. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) साबरमती आश्रम में क्या हो रहा था ?

(2) स्वामी सत्यदेव आश्रम में प्रवेश क्यों चाहते थे ?

(3) गांधीजी ने शांत स्वर में क्या कहा ?

(4) संन्यासियों के साथ हमारे देश के लोग कैसा व्यवहार करते हैं ?

(5) गांधीजी की बात सुनकर अन्त में स्वामी सत्यदेव ने क्या किया ?

प्रवृत्ति

- साबरमती आश्रम की मुलाकात कीजिए ।
- स्वतंत्रता आन्दोलन के सत्याग्रहों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।
- गांधीजी की आत्मकथा 'सत्यशोधनम्' (सत्य के प्रयोग) प्राप्त करके पढ़िए ।

9. उपकारहतस्तु कर्तव्यः

['मृच्छकटिकम्' महाकवि शूद्रक रचित - प्रकरण प्रकार का रूपक है । इस रूपक में समाज के सामान्य स्तर के पात्रों को लेकर कवि ने कथावस्तु की कल्पना की है । नायक के रूप में कल का धनवान और आज का दरिद्र चारुदत्त है । नायिका वसन्तसेना एक धनिक गणिका है । इन दोनों के अद्‌भुत प्रणय की यह कल्पित कथा संस्कृत साहित्य की बेजोड़ कथा है ।

'मृच्छकटिकम्' के अंतिम दसवें अंक में से यह नाट्यांश लिया गया है । राजा का साला शकार वसनन्सेना को दम घोटकर मार डालता है । खुद के द्वारा की गई हत्या का आरोप वह चारुदत्त पर लगाता है । चारुदत्त को फाँसी की सजा होती है । भाग्यवश वसन्तसेना जीवित होती है और संयोगवश राजसत्ता बदलती है । अब, चारुदत्त ने नहीं बल्कि शकार ने उसकी हत्या का प्रयत्न किया था, यह सत्य प्रकाश में आता है । अतः अब सामान्य नागरिक बन चुके शकार को गिरफ्तार कर लिया जाता है । गिरफ्तार शकार को क्या सजा दी जाय, उस संदर्भ में जो संवाद लिखे गए हैं, उन्हें संपादित करके यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

सत्ता पर बैठे दुष्ट लोग कुछ समय के लिए भले ही निर्दोष को दुःख पहुँचा सकते हैं, परन्तु अंत में तो स्वयं दुःखी होते हैं । सज्जन व्यक्ति सत्ता पर आने के बाद अपना बुरा चाहने वाले के प्रति बदले की भावना नहीं रखता, बल्कि क्षमा तथा उपकार की भावना रखता है, यह बोध इस संवाद से मिलता है । साथ ही, अपने मन में रहे भावों को व्यक्त करने के लिए संस्कृत में अव्यय पदों का जिस तरह उपयोग किया जाता है, उसका भी यहाँ अध्ययन करेंगे ।]

(नेपथ्ये - अरे रे राष्ट्रियश्यालक । एहि एहि । स्वस्य अविनयस्य फलमनुभव ।)

(ततः प्रविशति पुरुषैरधिष्ठितः पश्चाद्‌बाहुबद्धः शकारः ।)

शकारः : (दिशोऽवलोक्य) समन्ततः उपस्थितः एष राष्ट्रियबन्धः । तत्कमिदानीम् अशरणः शरणं व्रजामि । (विचिन्त्य) भवतु, तमेव शरणवत्सलं गच्छामि । (इत्युपसृत्य) आर्यचारुदत्त । परित्रायस्व परित्रायस्व । (इति पादयोः पतति ।)

(नेपथ्ये - आर्यचारुदत्त ! मुञ्च मुञ्च । व्यापादयाम एनम् ।)

शकारः : (चारुदत्तं प्रति) भो अशरणशरण परित्रायस्व ।

चारुदत्तः : (सानुकम्पम्) अहह । अभयम् अभयं शरणागतस्य ।

शर्विलकः : (सावेगम्) आः अपनीयताम् अयं चारुदत्तपार्श्वात् । (चारुदत्तं प्रति) ननूच्यतां किमस्य पापस्य अनुष्ठीयतामिति ।

आकर्षन्तु सुबद्ध्वैनं श्वभिः संखाद्यताम् अथ ।
शूले वा तिष्ठतामेष पाट्यतां क्रकचेन वा ।।

चारुदत्तः : किमहं यद् ब्रवीमि तत् क्रियते ।

शर्विलकः : कोऽत्र संदेहः ।

शकारः : भट्टारक चारुदत्त शरणागतोऽस्मि । तत् परित्रायस्व । यत्तव सदृशं तत्कुरु । पुनर्न ईदृशं करिष्यामि ।

(नेपथ्ये) (पौराः व्यापादयत । किंनिमित्तं पातकी जीव्यते ।)

शर्विलकः : अरे रे अपनयत । आर्यचारुदत्त आज्ञाप्यताम् किमस्य पापस्य अनुष्ठीयताम् ।

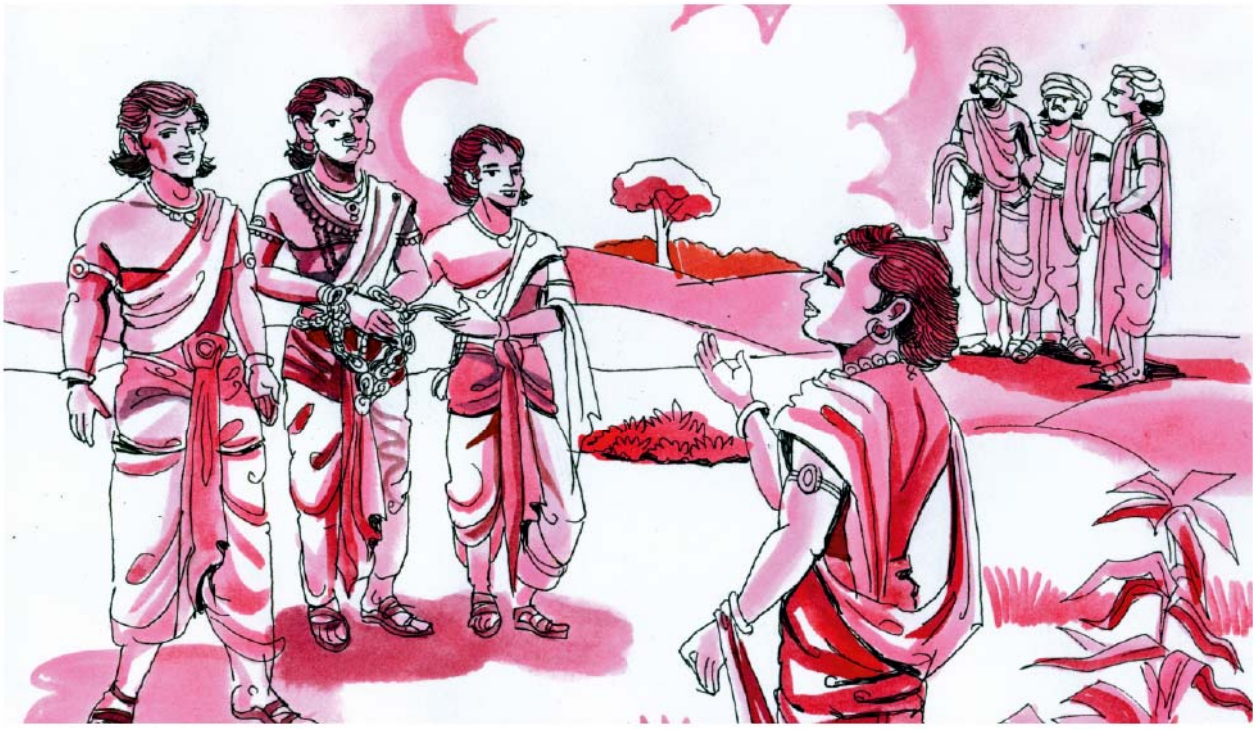

चारुदत्तः : किमहं यद् ब्रवीमि तत्क्रियते ।

शर्विलकः : कोऽत्र संदेहः ।

चारुदत्तः : सत्यम् ।

शर्विलकः : सत्यम् ।

चारुदत्तः : यद्येवं शीघ्रमयम्....।

शर्विलकः : किं हन्यताम् ।

चारुदत्तः : नहि नहि । मुच्यताम् ।

शर्विलकः : किमर्थम् ।

चारुदत्तः : **शत्रुः कृतापराधः शरणमुपेत्य पादयोः पतितः ।**
शस्त्रेण न हन्तव्यः

शर्विलकः : एवम् । तर्हि श्वभिः खाद्यताम् ।

चारुदत्तः : नहि । ..... **उपकारहतस्तु कर्तव्यः ॥**

शर्विलकः : अहो आश्चर्यम् । किं करोमि । वदत्वार्यः ।

चारुदत्तः : तन्मुच्यताम् ।

शर्विलकः : मुक्तो भवतु ।

शकारः : आश्चर्यम् । प्रत्युज्जीवितोऽस्मि । (इति पुरुषैः सह निष्क्रान्तः ।)

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : राष्ट्रियश्यालकः राजा का साला **शकारः** 'श' कार (वह 'स' कार के बदले 'श' कार ही बोलता है, अतः उसका नाम शकार हो गया है ।) **राष्ट्रियबन्धः** राजा का बन्धु, राजा का साला **भट्टारक** सेठ **शूलः** सूली, फाँसी देने का स्तंभ, वधस्तंभ **क्रकचः** आरी

(नपुंसकलिंग) : फलम् फल, परिणाम् **शस्त्रम्** हथियार (हाथ से पकड़कर उपयोग में लिया जाए वह शस्त्र और फेंक कर उपयोग में लिया जाए वह अस्त्र)

विशेषण : अशरणः जिस की कोई शरण न हो, शरणरहित **शरणागतः** शरण में आया हुआ **पापः** पापी **पातकी** पाप करने वाला पालक

सर्वनाम : स्वस्य अपना **एषः** यह (पुल्लिंग) **एनम्** इसे **अयम्** यह **यत्** जो (नपुंसकलिंग) **तत्** वह (नपुंसकलिंग)

अव्यय : अरे रे (आश्चर्य के साथ संबोधन हेतु प्रयुक्त होता है ।) **समन्ततः** चारों ओर **तत्** इसलिए **इदानीम्** अभी **प्रति** की ओर, के प्रति **भोः** किसी को संबोधन करने के लिए प्रयुक्त अव्यय अभिमुख करने के लिए प्रयोग में आने वाला शब्द **अहह** दया प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में आता है । अनुकंपा–कृपाभाव दर्शाने के लिए उद्‌गार **आः** गुस्सा या तिरस्कार प्रदर्शित करने के लिए, क्रोध दर्शाने का उद्‌गार **ननु** आज्ञा पाने का इरादा व्यक्त करने के लिए उपयोग में आने वाला **शीघ्रम्** जल्दी में **नहि** न **तर्हि** तो **अहो** आश्चर्य सूचित करने के लिए, आश्चर्य का उद्‌गार

कृदन्त : अवलोक्य (अव + लोक् + त्वा > य) । **सुबद्ध्वा** (सु + बन्ध् + त्वा) । **उपसृत्य** (उप + सृ + त्वा > य)

समास : शरणागतस्य (शरणम् आगतः, तस्य । द्वितीया तत्पुरुष) । चारुदत्तपार्श्वात् (चारुदत्तस्य पार्श्वम् तस्मात् । षष्ठी तत्पुरुष) उपकारहतः (उपकारेण हतः । तृतीया तत्पुरुष) ।

क्रियापद : छठा गण (परस्मैपद) **प्र + विश्** **(प्रविशति)** प्रवेश करना, दाखिल होना

विशेष

(1) शब्दार्थ : पुरुषैरधिष्ठितः व्यक्तियों द्वारा रक्षित, राजा के व्यक्तियों द्वारा पकड़ा गया **पश्चाद्‌बाहुबद्धः** जिसके हाथ पीछे बँधे हुए हैं ऐसा वह **अभ्युपपन्नशरणवत्सलम्** शरण में आए हुए के प्रति स्नेहभाव रखने वाले को **परित्रायस्व** बचाओ **मुञ्च** छोड़ दो **अशरणशरण** जिसका कोई शरण नहीं उसका शरण **व्यापादयामः** हम मार डालते हैं । **सानुकम्पम्** अनुकंपा या दया के साथ **सावेगम्** आवेग या क्रोध के साथ **अपनीयताम्** दूर ले जाइए, दूर हटाइए **किम् अनुष्ठीयताम्** क्या किया जाय ? **आकर्षन्तु** खींचा जाय **श्वभिः** कुत्तों से **संखाद्यताम्** फाड़कर खिला दिया जाए **तिष्ठताम्** खड़ा किया जाए **पाट्यताम्** कटवा दिया जाए **तत् क्रियते** वह किया जाए **तत्कुरु** वह करो **पौराः** शहर में रहने वाले, नगरजन **व्यापादयत** मार डाला **जीव्यते** जीवित रखा है **अपनयत** दूर ले जाओ **आज्ञाप्यताम्** आज्ञा दीजिए, आदेश कीजिए **किं हन्यताम्** क्या मार दिया जाए **मुच्यताम्** छोड दो, मुक्त करो **कृतापराधः** जिसने अपराध किया है वह, अपराधी **प्रत्युज्जीवितोऽस्मि** जिन्दा रहा हूँ, जीवनदान प्राप्त है ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) पुरुषैरधिष्ठितः शकारः कीदृशः आसीत् ?

(क) पाशबद्धः (ख) पश्चाद्‌बाहुबद्धः (ग) प्रसन्नः (घ) दुःखितः

(2) 'किमहं यद् ब्रवीमि तत् क्रियते' इति वचनम् कस्य ?

(क) नगरजनस्य (ख) शर्विलकस्य (ग) शकारस्य (घ) चारुदत्तस्य

(3) 'एवम् तर्हि श्वभिः खाद्यताम् ।' एतद् वाक्यं कः वदति ?

(क) शूद्रकः (ख) चारुदत्तः (ग) शर्विलकः (घ) शकारः

(4) शकारः – आश्चर्यम् ..... अस्मि ।

(क) जीवितः (ख) प्रत्युज्जीवितः (ग) उज्जीवितः (घ) मुक्तः

(5) कः ..... सन्देहः ?

(क) ततः (ख) यतः (ग) अत्र (घ) इतः

(6) सः ..... सह निर्गच्छति ।

(क) पुरुषैः (ख) पुरुषं (ग) पुरुषस्य (घ) पुरुषः

(7) शर्विलकः ..... प्रति पश्यति ।

(क) चारुदत्ताय (ख) चारुदत्तं (ग) चारुदत्तेन (घ) चारुदत्तात्

(8) यदि एवं ..... श्वभिः खाद्यताम् ।

(क) तदा (ख) यत्र (ग) तत्र (घ) तर्हि

2. रेखाङ्कितपदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) अहह । अभयम् अभयं शरणागतस्य ।

(2) आः अपनीयताम् अयं चारुदत्तपार्श्वात् ।

(3) उपकारहतः कर्तव्यः ।

3. संस्कृतभाषयाम् उत्तरं लिखत ।

(1) शकारः चारुदत्तम् उपसृत्य किं कथयति ?

(2) नेपथ्ये पौराः किं कथयन्ति ?

(3) कृतापराधः शत्रुः यदि शरणमुपेत्य पादयोः पतितः तदा किं करणीयम् ?

(4) उपकारेण कः हतः ?

4. उदाहरणानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

उदाहरणम् :

	पुरुषेण	पुरुषाभ्याम्	पुरुषैः
(1)	पापस्य	.....	.....
(2)	.....	पादयोः	.....
(3)	.....	.....	पौराः
(4)	आर्यचारुदत्तम्	.....	.....
(5)	मुक्तः	.....	.....

5. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) शकार को किसका फल भोगना है ?

(2) शकार अब चारुदत्त को किस रूप में देखता है ?

(3) शर्विलक शकार को कैसा दंड देना चाहता है ?

प्रवृत्ति

- मृच्छकटिक की कथावस्तु पढ़िए ।
- कक्षा में इस नाट्यांश का अभिनय के साथ वाचन कीजिए ।

10. दौवारिकस्य सेवानिष्ठा

[पंडित अंबिकादत्त व्यास का आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान है । उनका जन्म राजस्थान में और विद्याध्ययन वाराणसी में हुआ था । वे अध्ययन के पश्चात् स्थायी रूप से वाराणसी के निवासी बन गए । वे अपने आधुनिक उपन्यास **शिवराजविजय** नामक रचना से प्रसिद्ध हुए हैं । संस्कृत में लिखे गए इस उपन्यास की शैली रसमय होने के बावजूद गंभीर है । उसका कथा प्रवाह सतत प्रवाहित होते हुए पाठक को आदि से अंत तक पकड़े रहता है ।

इस रचना में छत्रपति शिवाजी महाराज की अनेक साहसिक पराक्रमों की कथा है । इसमें समय-समय पर प्राप्त उनकी विविध विजय गाथाओं को भी शामिल किया गया है । शिवाजी की इन सभी विजय के पीछे अनेक परिबल कार्यरत थे । विशेष करके तो उनका छोटा से छोटा सेवक भी प्रामाणिक, निष्ठावान और स्वामिभक्त था । इस बात का समर्थन प्रस्तुत अंक करता है । एक सामान्य कर्तव्य निभाने वाला द्वारपाल किसी भी लोभ, लालच या प्रलोभन से दूर रह करें अपने स्वामी के प्रति वफादार रहता है । यह द्वारपाल आज भी प्रामाणिकता का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है ।

विद्यार्थियों में सेवाभावना के साथ प्रामाणिकता के मूल्यों का सिंचन हो, यही इस पाठ का उद्देश्य है । पाठ में आए क्रियापदों के आधार पर कर्तृपद के साथ वर्तमान काल के क्रियापदों का समन्वय करते समय ध्यान में रखने योग्य पुरुष-व्यवस्था का भी यहाँ अध्ययन करना है ।]

(एकदा दौवारिकः भव्यमूर्तिं संन्यासिनम् अपश्यत् । ततः तयोः एवं वार्तालापः अभवत् ।)

संन्यासी : कथं अस्मान् संन्यासिनः अपि तिरस्करोषि ।

दौवारिकः : भगवन् प्रणमामि । परन्तु स्वकीयं परिचयम् अदत्वा न कश्चित् प्रवेष्टुम् अर्हति ।

संन्यासी : सत्यम् । क्षान्तः अयं ते अपराधः । किन्तु अद्य प्रभृति त्वं संन्यासिनः पण्डितान् ब्रह्मचारिणः स्त्रियः बालाः च न अवरोद्धुं शक्नोषि ।

दौवारिकः : संन्यासिन् बहूक्तम् । विरम । वयं दौवारिकाः ब्रह्मणः अपि आज्ञां न प्रतीक्षामहे ।

संन्यासी : साधु । मार्गम् आदेशय । महाराजनिकटे गन्तुम् इच्छामि ।

दौवारिकः : न शक्यम् । प्रभाते महाराजस्य सन्ध्योपासनकाले प्रवेशं कर्तुम् अर्हसि । न तु रात्रौ ।

संन्यासी : किम् कोऽपि रात्रौ न प्रविशति ।

दौवारिकः : आहूतान् परिचितान् च परित्यज्य न कोऽपि । विशेषस्तु भवादृशाः ये खलु तुम्बीधारकाः द्वारात् द्वारं भ्रमन्ति ।

संन्यासी : (स्वगतम्) सर्वथा सुयोग्यः अयं दौवारिकः । पुनः इमं परीक्षितुं प्रयतिष्ये । (प्रकाशम्) दौवारिक, अत्र आगच्छ । किमपि कथयितुम् इच्छामि ।

दौवारिकः : (उपसृत्य) कथयतु भवान् ।

संन्यासी : त्वं तु दौवारिकः असि । कदापि धनिकः न भविष्यसि । वनेषु कन्दरासु च वयं विचरामः । सर्वं रसायनतत्त्वं जानीमः ।

दौवारिकः : भवतु नाम । अग्रे अग्रे ।

संन्यासी : यदि मम प्रवेशं त्वं न अवरोधयसि तर्हि तुभ्यं यथेष्टं रसायनं दास्यामि । तेन पञ्चाशत्-तुलापरिमितं ताम्रं सुवर्णं भविष्यति ।

दौवारिकः : आः कपटिन्, विश्वासघातम्

उपदिशसि ? न वयं तादृशाः । कथय कः त्वम् । कुतः आगच्छसि । अहं त्वां कस्यचित् गुप्तचरं मन्ये । दुर्गाध्यक्षं निवेद्य त्वां दण्डयिष्यामि । सः त्वां विज्ञाय यथोचितं करिष्यति ।

संन्यासी : परित्यज परित्यज । नाहं पुनः आगमिष्यामि । नैवं पुनः कथयिष्यामि ।

(दौवारिकः तत् विगण्य तं हस्तेन गृहीत्वा नयति ।)

संन्यासी : (प्रबलप्रकाशदीपस्य समीपे) दौवारिक, अपि जानासि माम् ।

दौवारिकः : (निपुणं निरीक्ष्य) अये आर्यः खलु भवान् । आर्य, क्षन्तुम् अर्हति माम् ।

संन्यासी : (तस्य पृष्ठे हस्तं विन्यस्य) दौवारिक मया ते परीक्षा कृता । त्वं योग्यस्थाने नियुक्तः असि । उत्कोचाय अलोलुपाः त्वादृशाः प्रभूणां पुरस्कारभाजनं भवन्ति । अहं तव प्रामाणिकतां प्रभुसन्निधौ कथयिष्ये । कुत्र वर्तते श्रीमान् । किम् अनुतिष्ठति सम्प्रति सः ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : दौवारिकः द्वारपाल **कन्दरः** गुफा **गुप्तचरः** जासूस **दुर्गः** किला **उत्कोचः** घूस, रिश्वत **वार्तालापः** बातचीत, संवाद

(स्त्रीलिंग) : तुम्बी तुमड़ी (सन्यासी इस तुमड़ी को अपने साथ रखते हैं और उसका भिक्षापात्र के रूप में इस्तेमाल करते हैं ।) **वञ्चना** ठगाई **तुला** तोला, एक माप, वजन **सन्निधिः** निकटता

(नपुंसकलिंग) : परिचयपत्रम् पहचानपत्र **ताम्रम्** तांबा **पृष्ठम्** पीठ **भाजनम्** पात्र, योग्य

विशेषण : आहूत बुलवाया हुआ **पञ्चाशत्** पचास **परिमित** मर्यादित **त्वादृश** उसके जैसा

अव्यय : प्रभृति से लेकर, इत्यादि **सर्वथा** हर तरह से **कुतः** कहाँ से

समास : महाराजनिकटे (महाराजस्य निकटे महाराजनिकटे । षष्ठी तत्पुरुष) । सन्ध्योपासनकाले (सन्ध्याः उपासनम् - सन्ध्योपासनम् । षष्ठी तत्पुरुष । सन्ध्योपासनायाः कालः सन्ध्योपासनाकालः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) तुलापरिमितम् (तुलया परिमितम् तुलापरिमितम् । तृतीया तत्पुरुष) दुर्गाध्यक्षम् (दुर्गस्य अध्यक्षः दुर्गाध्यक्षः, तम् । षष्ठी तत्पुरुष) । पुरस्कारभाजनम् (पुरस्कारस्य भाजनम् पुरष्कारभाजनम् । षष्ठी तत्पुरुष) प्रभुसन्निधौ (प्रभोः सन्निधिः प्रभुसन्निधिः, तस्याम् । षष्ठी तत्पुरुष) ।

क्रियापद : प्रथम गण : (परस्मैपद) **प्र + नम् (प्रणमति)** प्रणाम करना **वि + रम् (विरमति)** ठहरना, रुकना, अर्ह् (अर्हति) योग्य होना **वि + चर् (विचरति)** घूमना, विचरण करना

(आत्मनेपद) **प्रति + ईक्ष् (प्रतीक्षते)** प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना **परि + ईक्ष् (परीक्षते)** परीक्षा करना, परीक्षा लेना

विशेष

(1) शब्दार्थ : भव्यमूर्तिम् भव्य आकारवाले को **संन्यासिनः** संन्यासियों की **क्षान्तः अयं ते अपराधः** तुम्हारे इस अपराध को माफ किया **ब्रह्मचारिणः** ब्रह्मचारियों को **प्रतिरोधनीयाः** रोकना चाहिए **ब्रह्मणः** ब्रह्मजी की **उक्तम्** कहा **विहाय** छोड़कर (यहाँ, सिवाय) **आदेशय** बताइए **विशेषतः** खासकर **भवादृशाः** आपके जैसे **तुम्बीधारिणः** तुमड़ी धारण करने वाले **प्रकाशम्** जोर से (सब सुन सके ऐसी उक्ति बोलने की सूचना के लिए शब्द) **उपसृत्य** नजदीक जाकर **जानीमः** हम जानते हैं **भवतु** हो सकता है, ठीक है **पञ्चाशत्-तुला-परिमितम्** करीब पचास तोला **शिक्षयसि** तू सिखाता है ? **विज्ञाय** पहचानकर, जानकर **विगण्य** अवगणना करके **गृहीत्वा** पकड़कर **प्रबलप्रकाशदीपस्य** अधिक प्रकाशवान दीप की **विन्यस्य** रखकर **नियुक्तः** नियुक्ति प्राप्त, नियुक्त **कथय** तू कह, बोल

(2) संधि : कोऽपि (कः अपि) । विशेषस्तु (विशेषः तु) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) दौवारिकाः कस्य आज्ञाम् अपि न प्रतीक्षन्ते ? ◯

(क) संन्यासिनः (ख) ब्रह्मणः (ग) सेनापतेः (घ) नृपतेः

(2) दौवारिकः कम् अपश्यत् ? ◯

(क) संन्यासिनम् (ख) गुप्तचरम् (ग) नृपम् (घ) मन्यते

(3) अहं त्वां गुप्तचरं ..... ।

(क) मन्ये (ख) मन्यन्ते (ग) मन्यसे (घ) दुर्गाध्यक्षम्

(4) त्वं कदापि धनिकः न ..... ।

(क) भविष्यसि (ख) भविष्यथ (ग) भविष्यति (घ) भविष्यन्ति

(5) 'क्षन्तुम् अर्हति माम्' इति कः वदति ?

(क) दौवारिकः (ख) संन्यासी (ग) गुप्तचरः (घ) दुर्गाध्यक्षः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) संन्यासी कुत्र गन्तुम् इच्छति ?

(2) कीदृशाः जनाः प्रभूणां पुरस्कारभाजनानि भवन्ति ?

(3) द्वारात् द्वारं के भ्रमन्ति ?

(4) दौवारिकेन कः दृष्टः ?

(5) संन्यासी कस्य प्रामाणिकतां कथयिष्यति ?

3. निम्नलिखितानां कृदन्तानां प्रत्ययनिर्देशपूर्वकं प्रकारं लिखत ।

(1) क्षन्तुम् ....

(2) गन्तुम् ....

(3) उपसृत्य ....

(4) परित्यज्य ....

4. अधस्तनानि वाक्यानि ह्यस्तनभूतकाले (लङ्लकारे) परिवर्तयत ।

(1) त्वं धनिकः भवसि ।

(2) वयं वनेषु वसामः ।

(3) कः अपि रात्रौ न प्रविशति ।

(4) अहं त्वां गुप्तचरं मन्ये ।

5. रेखाङ्कितपदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) दौवारिकस्य सेवानिष्ठा उत्तमा आसीत् ।

(2) दुर्गाध्यक्षः निर्णयं करिष्यति ।

(3) संन्यासीनः महाराजनिकटे गन्तुम् इच्छति ।

(4) प्रामाणिकजनाः पुरस्कारभाजनां भवन्ति ।

6. उदाहरणानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् : पण्डिताः (पण्डित, अकारान्तः, पुल्लिङ्गम्, प्रथमा-बहुवचनम्)

शब्दरूपम्					
(1) कन्दरेषु	.....	.....	.....	.....	.....
(2) गुप्तचरम्	.....	.....	.....	.....	.....
(3) उत्कोचाय	.....	.....	.....	.....	.....
(4) दौवारिकेन	.....	.....	.....	.....	.....

7. सूचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	.....	शिक्षयथः	.....
(2)	कथयिष्यामि	.....	.....
(3)	.....	.....	प्रतीक्षामहे
(4)	अभवत्	.....	.....
(5)	.....	अयच्छताम्	.....

8. प्रदत्तान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) छात्र गुरुजी को प्रणाम करते हैं ।

छात्र, गुरु, प्र+नम्

(2) माली फूलों की माला बनाता है ।

मालाकार, पुष्पमाला, रच्

(3) गणेश कलम से लिखता है ।

गणेश, कलम (लेखनी), लिख्

(4) फूल बाग में (सबेरे) खिलते हैं ।

कुसुम, उद्यान (प्रभात), वि+कस्

(5) द्वारपाल राजमहल में प्रवेश करता है ।

दौवारिक, राजप्रासाद, प्र+विश्

9. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि त्रीभिः चतुर्भिः वा वाक्यैः मातृभाषया लिखत ।

(1) संन्यासी किस-किस को रोकने के लिए मना करते हैं ?

(2) रात्रि में महाराज से मिलने के लिए कौन-कौन लोग जा सकते हैं ?

(3) प्रवेश के लिए संन्यासी द्वारपाल को क्या लालच देता है

(4) द्वारपाल की प्रामाणिकता के बारे में संक्षेप में लिखिए ।

प्रवृत्ति

- प्रस्तुत पाठ का संवाद अभिनय के साथ प्रस्तुत कीजिए ।
- सेवा, निष्ठा तथा प्रामाणिकता दर्शाने वाले अन्य प्रसंगों का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।
- अपने दैनिक कार्यों के प्रति अपनी ईमानदारी और निष्ठा के संदर्भ में डायरी लिखिए ।

11. वेदितव्यानि मित्राणि

[संसार के साहित्यिक जगत में सबसे विशालकाय कृति रूप में महाभारत प्रसिद्ध है, जिसके रचयिता महर्षि व्यास हैं । इस समय महाभारत ग्रंथ में लगभग एक लाख श्लोक प्रमाणित हैं ।

महाभारत में 18 पर्व हैं । प्रथम पर्व का नाम आदिपर्व है, जबकि सबसे अंतिम पर्व स्वर्गारोहण पर्व है । बारहवें शांतिपर्व में जीवन की अनेक समस्याओं का निरूण किया गया है ।

शांतिपर्व में कुल मिलाकर 365 अध्याय हैं । इन सभी अध्यायों को राजधर्मानुशासन पर्व (1 से 130), आपद्धर्म पर्व (131 से 173) और मोक्षधर्म पर्व (174 से 365) ऐसे आंतरिक पर्वों में विभाजित किया गया है । इनमें से आपद्धर्म पर्व में भीष्म और युधिष्ठिर का संवाद है, और उसमें राजनीति का उपदेश है । ऐसे ही एक प्रसंग पर हर व्यक्ति को अपने मित्र रखने चाहिए ऐसा बोध युधिष्ठिर को दिया गया है । इस उपदेश के द्वारा यह भी बताया गया है कि मित्र कैसे हो सकते हैं, वे किस तरह बनते हैं और किस तरह वे हम पर उपकार करते हैं ।]

वेदितव्यानि मित्राणि विज्ञेयाश्चापि शत्रवः ।
एतत् सुसूक्ष्मं लोकेऽस्मिन् दृश्यते प्राज्ञसम्मतम् ॥1॥
शत्रुरूपा हि सुहृदो मित्ररूपाश्च शत्रवः ।
सन्धितास्ते न बुध्यन्ते कामक्रोधवशं गताः ॥2॥

नास्ति जातु रिपुर्नाम मित्रं नाम न विद्यते ।
व्यवहाराच्च जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥3॥
यो यस्मिन् जीवति स्वार्थं पश्येत् पीडां न जीवति ।
स तस्य मित्रं तावत् स्याद् यावन्न स्याद् विपर्ययः ॥4॥

मित्रं च शत्रुतामेति कस्मिंश्चित् कालपर्यये ।
शत्रुश्च मित्रतामेति स्वार्थो हि बलवत्तरः ॥ 5॥
तन्मित्रं कारणं सर्वं विस्तरेणापि मे शृणु ।
कारणात् प्रियतामेति द्वेष्यो भवति कारणात् ॥6॥
प्रियो भवति दानेन प्रियवादेन चापरः ।
मन्त्रहोमजपैरन्यः कार्यार्थं प्रीयते जनः ॥ 7॥
उत्पन्ना कारणे प्रीतिरासीन्नौ कारणान्तरे ।
प्रध्वस्ते कारणस्थाने सा प्रीतिर्विनिवर्तते ॥ 8॥
आत्मरक्षणतन्त्राणां सुपरीक्षितकारिणाम् ।
आपदो नोपपद्यन्ते पुरुषाणां स्वदोषजाः ॥ 9॥
शत्रून् सम्यग् विजानाति दुर्बला ये बलीयसः ।
न तेषां चाल्यते बुद्धिः शास्त्रार्थकृतनिश्चया ॥10॥

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : लोकः जगत, लोक **व्यवहारः** व्यवहार, आचरण **स्वार्थः** स्वार्थ, गरज **विपर्ययः** उल्टा, विलोम **कालपर्ययः** समय का बदलाव, कालपरिवर्तन **प्रियवादः** प्रिय लगे ऐसी वाणी, वचन

(स्त्रीलिंग) : पीडा दुःख, कष्ट **शत्रुता** दुश्मनी **मित्रता** मैत्री, दोस्ती **प्रीतिः** प्रेम, स्नेह

(नपुंसकलिंग) : कारणम् कारण, हेतु, उद्देश्य, निमित्त

सर्वनाम : एतत् यह (नपुं.) **अस्मिन्** इसमें (पुं. या नपुं.) **यस्मिन्** जिसमें (पु. या नपुं.) **मे** मेरा **ये** जो (पुं.) **तेषाम्** उनका, उन सबका (पु. या नपुं.)

विशेषण : वेदितव्य जानने योग्य **विज्ञेय** जानने लायक **सुसूक्ष्म** अतिसूक्ष्म **सम्मत** मान्य, स्वीकृत **सन्धित** जुड़ा हुआ, संधियुक्त **बलवत्तर** अधिक बलवान **द्वेष्य** द्वेष के पात्र **अपर** अन्य **प्रध्वस्त** नष्ट हुआ है वह, ध्वस्त

अव्यय : हि सचमुच **जातु** कभी

समास : प्राज्ञसम्मतम् (प्राज्ञानां सम्मतम् प्राज्ञसम्मतम् । षष्ठी तत्पुरुष) । कामक्रोधवशम् । (कामः च क्रोधः च इति कामक्रोधौ, (इतरेतर, द्वन्द्व) । कामक्रोधयोः वशः कामक्रोधवशः, तम् । षष्ठी तत्पुरुष) कालपर्यये (कालस्य पर्ययः कालपर्ययः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । मन्त्रहोमजपैः (मन्त्रः च होमः च जपः च मन्त्रहोमजपाः, तैः । इतरेतर द्वन्द्व) । आत्मरक्षणतन्त्राणाम् (आत्मनः रक्षणम् आत्मरक्षणम् (षष्ठी तत्पुरुष) । आत्मरक्षणस्य तन्त्रम् आत्मरक्षणतन्त्रम्, तेषाम् । षष्ठी तत्पुरुष) । स्वदोषजाः (स्वस्य दोषः स्वदोषः (षष्ठी तत्पुरुष) । स्वदोषात् जायन्ते इति स्वदोषजाः, उपपद तत्पुरुष) ।

क्रियापद : प्रथम गण : (आत्मनेपद) **वि+नि+वृत्** (विनिवर्तते) निवृत्त होना

चतुर्थ गण : (आत्मनेपद) **विद् (विद्यते)** होना **जन् (जायते)** उत्पन्न होना **उप+पद् (उपपद्यते)** उत्पन्न होना, सम्पन्न होना

विशेष

(1) शब्दार्थ : वेदितव्यानि जानने योग्य, जानना चाहिए **दृश्यते** दृष्टिगोचर होता है **आपद्** आपत्ति **शत्रुरूपाः** शत्रु लगने वाले **मित्ररूपाः** मित्र लगने वाले **न बुध्यन्ते** समझा नहीं जा सकता **जीवति** जीवित हो तब **स्यात्** हो, बने **एति** जाता है, प्राप्त करता है **कस्मिंश्चित्** किसी में **प्रियवादेन** प्रिय बोलने के कारण **कार्यार्थम्** कार्य के लिए, कार्य पूरा करने के लिए **प्रीयते** खुश होते हैं **कारणान्तरे** अन्य प्रयोजन सिद्ध करने में **आत्मरक्षणतन्त्राणाम्** अपनी रक्षा के लिए स्वाधीन लोगों का **सुपरीक्षितकारिणाम्** अच्छी तरह से जाँच कर कार्य करने वालों का **आपदः** आपत्तियाँ, कठिनाइयाँ **नोपपद्यन्ते** उत्पन्न नहीं होती, नहीं आती **विजानाति** जानता है, विशेष रूप से जानते है **बलीयसः** बलवानों को **चाल्यते** चलित किया जाता है **शास्त्रार्थकृतनिश्चया** शास्त्र का अर्थप्रयोजन के आधार पर तय किया गया ।

(2) सन्धि : विज्ञेयाश्चापि (विज्ञेयाः च अपि) । लोकेऽस्मिन् (लोके अस्मिन्) । शत्रुरूपा हि (शत्रुरूपाः हि) । सुहृदो मित्ररूपाश्च (सुहृदः मित्ररूपाः च) । सन्धितास्ते (सन्धिताः ते) । नास्ति (न अस्ति) । रिपुर्नाम (रिपुः नाम) । व्यवहाराच्च (व्यवहारात् च) । रिपवस्तथा (रिपवः तथा) । यो यस्मिन् (यः यस्मिन्) । स तस्य (सः तस्य) । स्याद् यावन्न (स्यात् यावत् न) । स्याद् विपर्ययः (स्यात् विपर्ययः) । शत्रुतामेति (शत्रुताम् एति) । शत्रुश्च (शत्रुः च) । मित्रतामेति (मित्रताम् एति) । स्वार्थो हि (स्वार्थः हि) । तन्मित्रम् (तत् मित्रम्) । विस्तरेणापि (विस्तरेण अपि) । प्रियतामेति (प्रियताम् एति) । द्वेष्यो भवति (द्वेष्यः भवति) । प्रियो भवति (प्रियः भवति) । मन्त्रहोमजपैरन्यः (मन्त्रहोमजपैः अन्यः) । प्रीतिरासीन्न (प्रीतिः आसीत् न) । प्रीतिर्विनिवर्तते (प्रीतिः विनिवर्तते) । आपदो नोपपद्यन्ते (आपदः न उपपद्यन्ते) । दुर्बला ये (दुर्बलाः ये) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कस्मात् मित्राणि रिपवः च जायन्ते ?

(क) शास्त्रज्ञानात् (ख) व्यवहारात् (ग) दैवात् (घ) बुद्धिबलात्

(2) प्रध्वस्ते कारणस्थाने सा प्रीतिः ..... ।

(क) विनिवर्तते (ख) जायते (ग) वर्धते (घ) दृश्यते

(3) आत्मरक्षणतन्त्राणां पुरुषाणां किं न उपपद्यते ?

(क) आपत्तिः (ख) सुखम् (ग) सम्पत्तिः (घ) स्वार्थम्

(4) शत्रुमित्रसम्बन्धे कः बलवत्तरः ?

(क) स्वदोषः (ख) स्वार्थः (ग) प्रियालापः (घ) लोकः

(5) मित्रं कदा शत्रुताम् एति ?

(क) भाग्यक्षये (ख) मृत्युकाले (ग) कालविपर्यये (घ) धनागमे

2. अधोलिखितानां प्रश्नानां संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) किं रूपाः सुहृदः शत्रवः च ?

(2) मित्राणि रिपवः च कथं जायन्ते ?

(3) जनः कस्मात् प्रियताम् एति ?

(4) कीदृशानां पुरुषाणाम् आपदः न उपपद्यन्ते ?

(5) यः शत्रून् सम्यग् विजानाति तस्य किं भवति ?

3. समासप्रकारं लिखत ।

(1) प्राज्ञसम्मतम् .....

(2) कालपर्यये .....

(3) कामक्रोधौ .....

(4) मन्त्रहोमजपैः .....

4. उदाहरणानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

उदाहरणम् :

	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
(1)	पीडाम्	.....	.....
(2)	.....	.....	लोकेषु
(3)	दानेन	.....	.....
(4)	कारणात्	.....	.....

5. उदाहरणानुसारं प्रदत्तान् शब्दान् आधृत्य वाक्यरचनां कुरुत ।

उदाहरणम् : बच्चे फल खाते हैं । (बाल, फल, खाद्) – बालाः फलानि खादन्ति ।

(1) मेघना पानी पीती है । (मेघना, जल, पा–पिब्)

(2) अधीश पुस्तक पढ़ता है । (अधीश, पुस्तक, पठ्)

(3) साँप बिल में घुसता है । (सर्प, बिल, गम्–गच्छ्)

(4) अनिला अमित को बुलाती है । (अनिला, अमित, आ+ह्वे–ह्वय्)

(5) आर्ष गुरूजी को प्रणाम करता है । (आर्ष, गुरु, नम्)

6. मातृभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) वेदव्यासजी ने शत्रु और मित्र होने के क्या कारण बताए हैं ?

(2) मित्र भी शत्रु क्यों हो जाता है ?

(3) आपत्ति में भी किसकी बुद्धि विचलित नहीं होती ?

7. श्लोकपूर्तिं कुरुत ।

(1) नास्ति जातु ..... रिपवस्तथा ।

(2) आत्मरक्षणतन्त्राणां ..... स्वदोषजाः ।

प्रवृत्ति

- महाभारत के प्रसंगों का वाचन कीजिए ।
- महाभारत का परिचय प्राप्त करने के लिए दृश्य–श्राव्य माध्यमों का उपयोग कीजिए ।

12. सुभाषित-सप्तकम्

[सुभाषित अर्थात् सुंदर उक्ति अथवा बोधवचन । संस्कृत के सुभाषितों की अनेक विशेषताएँ हैं । एक तो ये सुभाषित गागर में सागर भर देने वाले लघु पद्य होते हैं । इसलिए जन-जन के कंठ से गाये जाने के कारण सतत जीवंत रहते हैं । सुभाषित व्यक्ति के जीवन को पाथेय देते हैं । संस्कृत सुभाषित वैश्विक भावना के पोषक और तोषक हैं तथा भारतीय संस्कृति के उदात्त विचारों और संस्कारों के प्रवाहक भी हैं ।

हमारे पूर्वज विद्वानों ने अपनी दीर्घदृष्टि से समय-समय पर जिन जीवन मूल्यों की प्राप्ति की थी, उन्हें आगामी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए सुभाषितों की रचना की है और वे प्रजा में प्रसिद्ध भी हुए हैं ।

प्राचीन काल के ये सुभाषित आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं । आज भी वे बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति को आदर्श और आनंदप्रद जीवन जीने का मार्ग दिखाते हैं ।

गीर्वाण गिरा के अनमोल रत्न समान सात सुभाषितों का यहाँ अध्ययन करेंगे और साथ-साथ इन सुभाषितों द्वारा जो बोध प्राप्त होता है, उन्हें अपने जीवन में निष्ठापूर्वक उतारने का शुभ संकल्प करेंगे ।]

शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः ।। 1 ।।
शीलं शौर्यमनालस्यं पाण्डित्यं मित्रसङ्ग्रहः ।
अचौरहरणीयानि पञ्चैतान्यक्षयो निधिः ।। 2 ।।
संहतिः श्रेयसी पुंसां विगुणेष्वपि बन्धुषु ।
तुषैरपि परिभ्रष्टा न प्ररोहन्ति तण्डुलाः ।। 3 ।।
नास्ति मेघसमं तोयं नास्ति चात्मसमं बलम् ।
नास्ति चक्षुःसमं तेजो नास्ति धान्यसमं प्रियम् ।। 4 ।।

सत्यं तपो ज्ञानमहिंसतां च
विद्वत्प्रणामं च सुशीलतां च ।
एतानि यो विदधाति स विद्वान्
न ह्येकपक्षो विहगः प्रयाति ।। 5 ।।
काष्ठादग्निः जायते मथ्यमानात्
भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति ।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां
मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति ।। 6 ।।
पात्रं न तापयति नैव मलं प्रसूते
स्नेहं न संहरति नैव गुणान्क्षिणोति ।
द्रव्यावसानसमये चलतां न धत्ते
सत्पुत्र एष कुलसद्मनि कोऽपि दीपः ।। 7 ।।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : पन्थाः रास्ता, मार्ग **निधिः** भंडार, खजाना **तुषः** धान का छिलका, चावल के ऊपर के आवरण (छिलके) **तण्डुलः** चावल **विहगः** पक्षी **स्नेहः** स्नेह, स्निग्धता

(स्त्रीलिंग) : कन्था चीथरों से बनी हुई गुदड़ी **संहतिः** संगठन, एकता **सुशीलता** सज्जनता

(नपुंसकलिंग) : शीलम् चारित्र्य **तोयम्** पानी **धान्यम्** अनाज, अन्न **मलम्** गंदगी, कचरा

विशेषण : अक्षय जिसका क्षय (नाश) न हो सके ऐसा **मथ्यमान** मंथन किया हुआ, मंथन किया जाता हुआ **खन्यमान** खुदता हुआ, खोदा जाता हुआ **मार्गारब्ध** सही दिशा में शुरु किया

अव्यय : शनैः धीरे-धीरे

समास : पर्वतलङ्घनम् (पर्वतस्य लङ्घनम्, षष्ठी तत्पुरुष) । मित्रसङ्ग्रहः (मित्राणां सङ्ग्रहः - मित्रसङ्ग्रहः । षष्ठी तत्पुरुष) मेघसमम् (मेघेन समम् मेघसमम् । तृतीया तत्पुरुष) आत्मसमम् (आत्मना समम् - आत्मसमम् । तृतीया तत्पुरुष) चक्षुःसमम् (चक्षुर्भ्यां समम् चक्षुःसमम् , तृतीया तत्पुरुष) धान्यसमम् (धान्येन समम् धान्यसमम् , तृतीया तत्पुरुष) कर्महीनम् (कर्मणा हीनम् कर्महीनम्, तृतीया तत्पुरुष)

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) : **प्र + रुह् (प्ररोहति)** उगना (अंकुर फूटना) **फल् (फलति)** फल देना, सफल होना **सम् + हृ (संहरति)** हर लेना, नाश करना

विशेष

(1) शब्दार्थ : अचौरहरणीयानि जिसे चुराया न जा सके, जिसे चोर न ले जा सके ऐसा **श्रेयसी** कल्याणकारी **पुंसाम्** मनुष्यों का **विगुणेषु** विरोधी गुण वालों में **परिभ्रष्टाः** अलग हुआ, भ्रष्ट हुए **विदधाति** धारण करता है **वेदविद्** वेदों का जानकार **प्रयाति** जाता है **एकपक्षः** एक पंख वाला **तापयति** तपाता है **प्रसूते** उत्पन्न करता है **क्षिणोति** क्षीण करता है **चलतां न धत्ते** चलित नहीं होता **कुलसद्मनि** कुलरूपी भवन में **मथ्यमानात्** मंथन किये जाने से, घिसा हुआ

(2) सन्धि : विगुणेष्वपि (विगुणेषु अपि) । तुषैरपि (तुषैः अपि) । द्वयोरेव (द्वयोः एव) । ह्येकपक्षः (हि एकपक्षः) । कोऽपि (कः अपि) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत :

(1) पुंसां श्रेयसी का ?

(क) संनिधिः (ख) संहतिः (ग) संगतिः (घ) संमतिः

(2) न ह्येकपक्षो ..... प्रयाति ।

(क) रथः (ख) अश्वः (ग) विहगः (घ) मत्स्यः

(3) मेघसमं किं न अस्ति ?

(क) तोयम् (ख) बलम् (ग) तेजः (घ) धान्यम्

(4) कुलसद्मनि कः दीपः ?

(क) सत्पुत्रः (ख) शिक्षितपुत्रः (ग) आत्मजः (घ) शूरपुत्रः

(5) केषां नराणां कृते किमपि असाध्यम् नास्ति ?

(क) साहसिकानाम् (ख) नास्तिकानाम् (ग) सोत्साहानाम् (घ) धनिकानाम्

(6) 'विहग:' शब्दस्य पर्यायशब्द: क: ?

(क) विटप: (ख) तथाऽपि (ग) खग: (घ) एकपक्ष:

(7) इस पाठ में पानी के लिए कौन-से शब्द का उपयोग किया है ?

(क) तोयम् (ख) वारि (ग) जलम् (घ) सलिलम्

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) कानि पञ्च शनै: शनै: भवन्ति ?

(2) कीदृशा: तण्डुला: न प्ररोहन्ति ?

(3) खन्यमान्या भूमि: किं ददाति ?

(4) पात्रं क: नैव तापयति ?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, क:, किम्, किमर्थम्)

(1) खन्यमाना भूमि: तोयं ददाति ।

(2) सत्पुत्र: द्रव्यावसानसमये चलतां न धत्ते ।

(3) एकपक्षो विहग: न प्रयाति ।

4. वर्गसहितम् अनुनासिकपदं लिखत ।

उदाहरणम् : पंडित: ट वर्ग: पण्डित:

	वर्ग:	अनुनासिकप्रयोग:
(1) लंघनम्	....	....
(2) पंच	....	....
(3) बंधु:	....	....
(4) तंडुल:	....	....

5. श्लोकपूर्तिं कुरुत ।

(1) शनै: पन्था: .... शनै: शनै: ॥

(2) नास्ति मेघसमम् .... धान्यसमं प्रियम् ॥

6. मातृभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) पाँच अक्षयनिधियाँ कौन-कौन सी हैं ?

(2) 'एक पंख से पक्षी उड़ नहीं सकता'-इस कथन के द्वारा कवि क्या समझाना चाहते हैं ?

(3) सत्पुत्र को दीपक क्यों कहा है ?

7. अनुवादं कृत्वा अर्थविस्तारं बोधं च लिखत ।

(1) शनै: पन्था: शनै: कन्था शनै: पर्वतलङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनै: शनै: ।।

(2) सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणाम् ।
मार्गारब्धा: सर्वयत्ना: फलन्ति ।

प्रवृत्ति

- सुभाषित-गान-स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।
- अपने मनपसंद सुभाषित कंठस्थ करके प्रार्थना सभा में उनका गान कीजिए ।

•

13. दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तम्

[महाकवि भास विरचित त्रिअंकी नाटक पंचरात्र में से यह नाट्यांश लिया गया है । भास की इस नाट्यरचना में महाभारत के महान विध्वंसक युद्ध को महत्त्व नहीं दिया गया है । पांडवों का अज्ञातवास पूरा होने वाला है, उसी समय दुर्योधन एक यज्ञ करता है । इस यज्ञ में आचार्य के रूप में गुरु द्रोण होते हैं । गुरु द्रोण दुर्योधन से यज्ञ की दक्षिणा के रूप में पांडवों को आधा राज्य देने के लिए कहते हैं । वैसे तो दुर्योधन को यह बात स्वीकार्य न थी, फिर भी शकुनि की एक शर्त को आगे रखकर दुर्योधन यह दक्षिणा देने के लिए तैयार हो जाता है । शर्त यह होती है कि पाँच ही दिन में पांडवों का पता चल जाना चाहिए ।

इस पृष्ठभूमि में भीष्म पितामह के कहने से किसी कारण वश कौरव विराटनगर की तरफ कूच करते हैं और राजा विराट की गायों को हाँक ले जाते हैं । इस गोग्रहण को रोकने के लिए राजा विराट के यहाँ अज्ञात वेश में बल्लव नाम से भीम और वृहन्नला नाम से रह रहे अर्जुन सक्रिय हो जाते हैं तथा कौरव सेना को खदेड़ देते हैं । साथ ही साथ वे अभिमन्यु को पकड़ लाते हैं ।

इस समय विराट के दरबार में जो दृश्य उपस्थित होता है, उसका संपादित अंश यहाँ प्रस्तुत है । वेश बदलकर साथ में रहे पिता अर्जुन तथा चाचा भीम को अभिमन्यु पहचान नहीं पाता । दोनों बुजुर्ग अभिमन्यु को चिढ़ाने के इरादे से जो संवाद करते हैं, वे अत्यंत हास्यपूर्ण हैं । यह संवाद इतना मजेदार है कि किसी भी प्रेक्षक को हास्य रस से तृप्त कर देगा ।

यहाँ अभिमन्यु के बहाने राजा विराट तथा सभी को पांडवों की वास्तविक पहचान होती है । दूसरी तरफ पाँच रात्रि में इस तरह पांडवों का पता चल जाने से गुरु द्रोण के कहने से दुर्योधन अपना आधा राज्य पांडवों को दे देता है । इस तरह यहाँ युद्ध की घटना को टाला गया है ।

संपूर्ण घटना मात्र पाँच रात्रि में संपन्न होने से, इसे पंचरात्र नाम दिया गया है ।]

(प्रविश्य)

भटः : जयतु महाराजः । प्रियं निवेदये महाराजाय । अवजितं गोग्रहणम् । अपयाताः धार्तराष्ट्राः ।

राजा : अपूर्व इव ते हर्षः । ब्रूहि केनासि विस्मितः ।

भटः : अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रो ग्रहणं गतः ।

राजा : कथमिदानीं गृहीतः ?

भटः : रथमासाद्य निःशङ्कं बाहुभ्यामवतारितः ।

राजा : केन ।

भटः : यः किलैष नरेन्द्रेण महानसे विनियुक्तो बल्लवः, तेन ।

राजा : तेन हि सत्कृत्य प्रवेश्यताम् अभिमन्युः । बृहन्नले, प्रवेश्यताम् अभिमन्युः ।

बृहन्नला : यदाज्ञापयति महाराजः । (निष्क्रान्ता ।)

(ततः प्रविशति अभिमन्युः बृहन्नला बल्लवः च ।)

बृहन्नला : इतः इतः कुमार । अभिमन्यो ।

अभिमन्युः : अभिमन्युर्नाम । कथं कथम् । अभिमन्युः नामाहम् । भोः किं नामभिः अभिभाष्यन्ते क्षत्रियाः अत्र ।

बृहन्नला : अभिमन्यो, सुखम् आस्ते ते जननी ?

अभिमन्युः : कथं कथम् । जननी नाम ।

किं भवान् धर्मराजो मे भीमसेनो धनञ्जयः ।

यन्मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां पृच्छसे कथाम् ।।

बृहन्नला : अभिमन्यो, अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः ।

अभिमन्युः : कथं तत्रभवन्तम् अपि नाम्ना । अथ किम् । अथ किम् । कुशली भवतः संसृष्टः ।

(उभौ परस्परम् अवलोकयतः ।)

अभिमन्युः : कथम् इदानीं सावज्ञम् इव मां हस्यते ?

बृहन्नला : न खलु किञ्चित् । त्वं तु पार्थपुत्रः । जनार्दनः तव मातुलः । त्वं च तरुणः । तथापि तेन पदातिना गृहीतः ।

अभिमन्युः : अलं स्वच्छन्दप्रलापेन । अस्माकं कुले आत्मश्लाघा उचिता नास्ति । रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य । मां विना नामान्तरं न भविष्यति ।

बृहन्नला : (आत्मगतम्) सम्यक् आह कुमारः । (प्रकाशम्) एवं वाक्यशौण्डीर्यम् । किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः ?

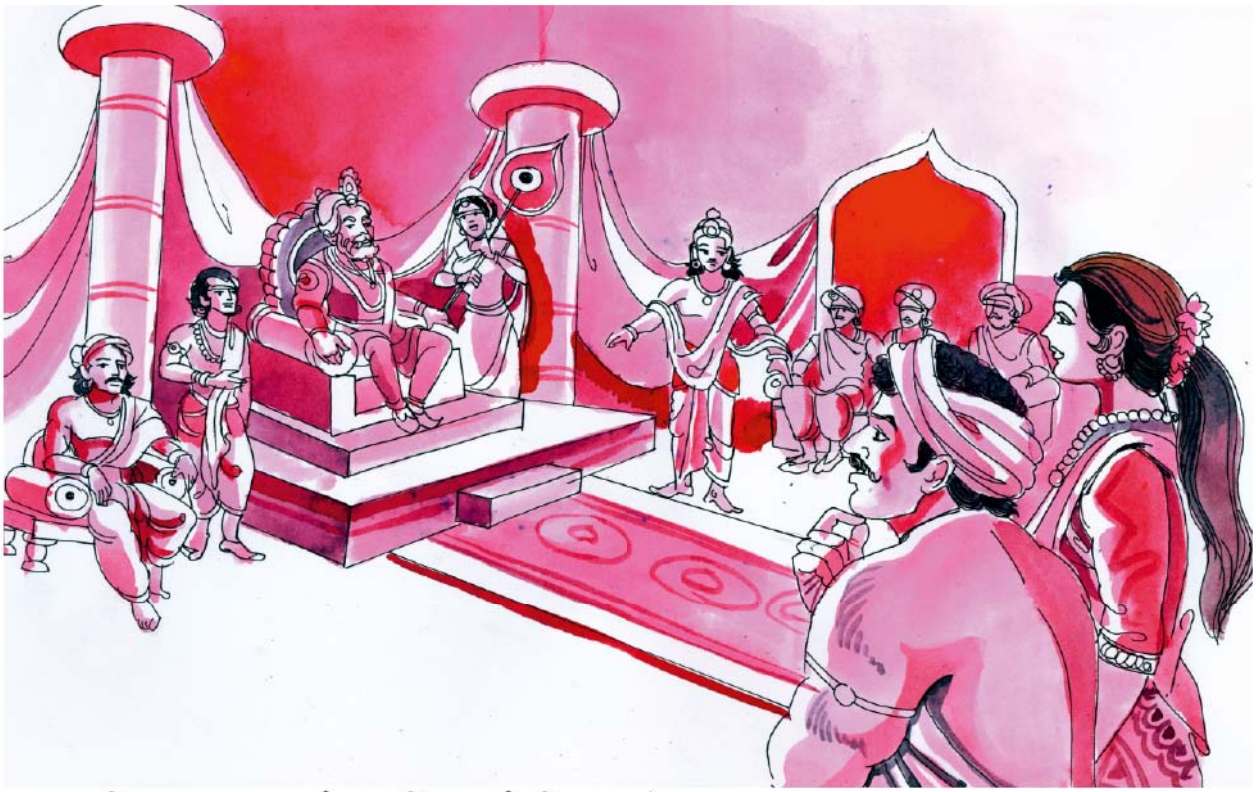

अभिमन्युः : अशस्त्रो मामभिगतस्ततोऽस्मि ग्रहणं गतः ।

राजा : त्वर्यतां त्वर्यताम् अभिमन्युः ।

बृहन्नला : इतः इतः कुमार । एषः महाराजः । उपसर्पतु कुमारः ।

अभिमन्युः : आः कस्य महाराजः ।

बृहन्नला : न, न, ब्राह्मणेन सहास्ते ।

अभिमन्युः : ब्राह्मणेनेति । (उपगम्य) भगवन् अभिवादये ।

भगवान् : एहि एहि वत्स ।

अभिमन्युः : अनुगृहीतः अस्मि ।

राजा : एहि एहि पुत्र ! (आत्मगतम्) कथं मां नाभिवादयति ? अहो उत्सिक्तः खलु अयं क्षत्रियकुमारः । अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि । (प्रकाशम्) अथ केनायं गृहीतः ?

भीमसेनः : महाराज मया बल्लवेन ।

अभिमन्युः : अशस्त्रेण इति कथ्यताम् ।

भीमसेनः : शान्तं पापम् । सहजौ मे प्रहरणं भुजौ । धनुः तु दुर्बलैः गृह्यते ।

अभिमन्युः : किं भवान् मम मध्यमः तातः, यः तत्तुल्यं वदति ।

राजा : पुत्र ! कः अयं मध्यमः नाम ।

अभिमन्युः : श्रूयताम् । यः खलु जरासन्धं पञ्चत्वम् अनयत् सः ।

(ततः प्रविशति उत्तरः ।)

उत्तरः : तात । अभिवादये ।

राजा : आयुष्मान् भव पुत्र । अपि पूजिताः कृतकर्माणः योधाः ।

उत्तरः : पूजिताः । पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा ।

राजा : पुत्र, कस्य ।

उत्तरः : इहात्रभवतः धनञ्जयस्य ।

राजा : कथं धनञ्जयस्य इति ।

उत्तरः : अथ किम् । अत्रभवता श्मशानात् निजधनुः तूणी चाक्षयसायके चादाय भीष्मादयः नृपाः भग्नाः वयं च परिरक्षिताः ।

राजा : एवम् एतत् ?

बृहन्नला : प्रसीदतु प्रसीदतु महाराजः ।

उत्तरः : व्यपनयतु शङ्काम् । अयम् एव धनुर्धरः धनञ्जयः ।

बृहन्नला : यदि अहम् अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः । अयं च राजा युधिष्ठिरः ।

अभिमन्युः : इह अत्रभवन्तः मे पितरः । तेन खलु –

न रुष्यन्ति मया क्षिप्ता हसन्तश्च क्षिपन्ति माम् ।
दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः ॥

(इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति । सर्वे तस्मै आशीर्वादान् वदन्ति ।)

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : विराटेश्वरः विराट देश का राजा **धार्तराष्ट्रः** धृतराष्ट्र का पुत्र, कौरव **बल्लवः** विराटनगर में अज्ञातवास के समय पाचक के रूप में रहने वाले भीमसेन का नाम **महानसः** रसोईघर **उत्तरः** राजकुमार उत्तर, विराट राजा का पुत्र **धर्मराजः** युधिष्ठिर **मातुलः** मामा **शरः** बाण **पदातिः** पैर से चलने वाले, पद-यात्री **योधः** सैनिक **धनञ्जयः** अर्जुन **भुजः** हाथ, बाहु **क्षेपः** अपमान

(स्त्रीलिंग) : बृहन्नला अज्ञातवास काल में विराटनगर में नर्तकी के रूप में रह रहे अर्जुन का नाम

(नपुंसकलिंग) : गोग्रहणम् गायों का (ग्रहण) पकड़ना **वाक्यशौण्डीर्यम्** बोलने का चातुर्य, वाणी-विलास, मात्र वाणी का शौर्य **प्रहरणम्** हथियार

विशेषण : अश्रद्धेय जिस पर विश्वास न किया जा सके **स्त्रीगत** स्त्री से सम्बन्धित, स्त्री-स्वभाव के विषय का **संसृष्ट** जुडा हुआ संबद्ध **उत्सिक्त** अभिमानी, अहंकारी **कृतकर्मा** जिसने विशिष्ट कर्म किया है वह **पूज्यतम** सबसे अधिक पूजा के योग्य **स्वन्त** (सु + अन्त) सुन्दर (सुखद) अंतवाला, सुखान्त

समास : विराटेश्वरः (विराटानाम् ईश्वरः विराटेश्वरः, षष्ठी तत्पुरुष) । गोग्रहणम् (गवां ग्रहणम् गोग्रहणम् । षष्ठी तत्पुरुष) । नरेन्द्रेण (नरेषु इन्द्रः नरेन्द्रः, तेन । सप्तमी तत्पुरुष) । देवकीपुत्रः (देवक्याः पुत्रः देवकीपुत्रः । षष्ठी तत्पुरुष) । युद्धपराजयः (युद्धे पराजयः युद्धपराजयः । सप्तमी तत्पुरुष) । आत्मद्बलाघा (आत्मनः द्बलाघा आत्मद्बलाघा, षष्ठी तत्पुरुष) रणभूमौ (रणस्य भूमिः रणभूमिः, तस्याम् । षष्ठी तत्पुरुष) । वाक्यशौण्डीर्यम् (वाक्येषु शौण्डीर्यम् वाक्यशौण्डीर्यम् । सप्तमी तत्पुरुष) । दर्पप्रशमनम् (दर्पस्य प्रशमनम् दर्पप्रशमनम् । षष्ठी तत्पुरुष) । तत्तुल्यम् (तेन तुल्यम् तत्तुल्यम् । तृतीया तत्पुरुष) । कण्ठद्बिलष्टेन (कण्ठे द्बिलष्टः कण्ठद्बिलष्टः, तेन । सप्तमी तत्पुरुष) ।

क्रियापद : प्रथम गण : (परस्मैपद) **नी (नयति)** ले जाना

(आत्मनेपद) **रम् (रमते)** खेलना, खुश होना

चतुर्थ गण : (परस्मैपद) **रुष् (रुष्यति)** रोष करना, गुस्सा करना

षष्ठ गण : (परस्मैपद) **प्रच्छ् (पृच्छति)** पूछना, प्रश्न करना (यहाँ अपवाद-स्वरूप यह धातु आत्मनेपद में प्रयुक्त हुई है । पृच्छ से) **क्षिप् (क्षिपति)** फेंकना, अपमान करना

दशम गण : (परस्मैपद) **अव + लोक् (अवलोकयति)** देखना

(आत्मनेपद) **नि + विद् (निवेदयते)** निवेदन करना **अभि + वद् (अभिवादयते)** अभिवादन करना, प्रणाम करना

विशेष

(1) शब्दार्थ : जयतु जय हो **अवजितम्** जीत लिया **अपयाताः** भाग गए हैं **निःशङ्कम्** शंका रहित, शंका या डर के बिना **विनियुक्तः** नियुक्त किया हुआ **सत्कृत्य** सत्कार करके **प्रवेश्यताम्** प्रवेश करवाइए, ले आइए **नामभिः** नाम के उच्चारण के द्वारा, नाम से **अभिभाष्यन्ते** बुलवाया जाता है, बुलाते है **पितृवत्** पिता की भाँति, बुजुर्ग की तरह **आक्रम्य** आक्रमण करके, हमला करके **स्त्रीगताम्** स्त्री-स्त्रियों से संबद्ध, स्त्री-स्वभाव से सम्बद्ध **कथाम्** कथा, बात, कहानी **सावज्ञम्** अवज्ञापूर्वक मजाक उड़ाते हुए, मश्करीपूर्वक **हस्यते** हँसा जा रहा है (उपहास किया जाता है ।) **अलं स्वच्छन्दप्रलापेन** स्वच्छन्द रूप

से न बोलें, यथेच्छ बोलना बंद कीजिए **आत्मश्लाघा** स्वयं की प्रशंसा **पदातिना** पदयात्री द्वारा, पैदल चलने वाले सैनिक के द्वारा **अशस्त्रः** शस्त्र रहित, निःशस्त्र **अभिगतः** सामने आया हुआ **त्वर्यताम्** शीघ्रता कीजिए, जल्दी कीजिए **उत्सिक्तः** घमंडी, अहंकारी **दर्पप्रशमनम्** गुस्से को शान्त करना, दर्प, गुस्से को समाप्त करना **कथ्यताम्** कहिए **शान्तं पापम्** पाप शांत हो (संस्कृत में क्रोधी व्यक्ति को या उग्र वातावरण को शांत करने हेतु प्रयुक्त यह एक रुढ़-प्रयोग (परंपरानुगत प्रयोग) है । जिस भाँति हिन्दी में बस करें, अब बस करें, अब बंद करें इत्यादि शब्द-विन्यास का प्रयोग होता है ।) **सहजौ** सहज, प्राकृतिक, दो साथ में जन्म लेने वाले (द्वि.) **प्रहरणम्** हथियार **निजधनुः** स्वयं का धनुष **तूणी अक्षयसायके** ऐसे दो तरकश जिनके बाण कभी कम न हो **आदाय** ले करें **भग्नाः** भगा दिया **परिरक्षिताः** बचाया **प्रसीदतु** कृपा कीजिए, प्रसन्न हो **व्यपनयतु** दूर करे **क्षिप्ता** आक्षेप किया हुआ **हसन्तः** हँसते हुए **दिष्ट्या** सौभाग्य से, सद्भाग्य से **गोग्रहणम्** गायों का ग्रहण, गायों का अपहरण **स्वन्तम्** सुखद अन्त वाला

(2) सन्धि : अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केनासि (अपूर्वः इव ते हर्षः ब्रूहि केन असि) । सौभद्रो ग्रहणम् (सौभद्रः ग्रहणम्) । किलैषः (किल एषः) । उत्तरेणाद्य (उत्तरेण अद्य) । यन्मां पितृवदाक्रम्य (यत् मां पितृवत् आक्रम्य) । अशस्त्रो मामभिगतस्ततोऽहम् (अशस्त्रः माम् अभिगतः ततः अहम्) । चाक्षयसायके (च अक्षयसायके) । चादाय (च आदाय) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) ब्रूहि केनासि विस्मितः । इति वचनं कस्य ?

(क) भटस्य (ख) विराटेश्वरस्य (ग) उत्तरस्य (घ) बृहन्नलायाः

(2) नरेन्द्रेण महानसे कः विनियुक्तः ?

(क) बल्लवः (ख) अर्जुनः (ग) भटः (घ) उत्तरः

(3) कथमिदानीम् ..... इव मां हस्यते ?

(क) अनभिज्ञम् (ख) सावज्ञम् (ग) अपरिचितम् (घ) निरवज्ञम्

(4) धनुः कैः गृह्यते ?

(क) दुर्बलैः (ख) सैनिकैः (ग) राक्षसैः (घ) योधैः

(5) पितरः केन दर्शिताः ?

(क) गोग्रहणेन (ख) उत्तरेण (ग) बल्लवेन (घ) भटेन

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायां लिखत ।

(1) भटः किं प्रियं निवेदयति ?

(2) अभिमन्युः केन गृहीतः ?

(3) बृहन्नला कस्य कस्य विषये अभिमन्युं पृच्छति ?

(4) भीमसेनस्य सहजं प्रहरणं किम् अस्ति ?

(5) उत्तरः कस्य पूजां कर्तुं कथयति ?

3. निम्नलिखितेषु वाक्येषु कः भावः प्रकटितः तत्प्रकोष्ठगतेभ्यः शब्देभ्यः विचित्य लिखत ।

(1) कथं कथम् । अभिमन्युः नाम अहम् । (आत्मप्रशस्तिः, दैन्यम्, अभिमानः)

(2) यन्मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां पृच्छसे कथाम् । (क्रोधः, विस्मयः, तिरस्कारः)

(3) धनुस्तु दुर्बलैः गृह्यते । (उत्साहः, शौर्यम्, अहङ्कारः)

(4) दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः । (हर्षः, धैर्यम्, निन्दा)

4. अधोलिखितानां धातुरूपाणां धातु-गण-पद-काल/लकार-पुरुष-वचननिर्देशकपूर्वकं परिचयं कारयत ।

(1) रुष्यन्ति ....

(2) वदति ....

(3) पृच्छसे ....

(4) भविष्यति ....

(5) प्रविशति ....

5. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) भट महाराज को क्या समाचार देता है ?

(2) स्वयं की माता के विषय में पूछे जाने पर अभिमन्यु की क्या प्रतिक्रिया होती है ?

(3) शस्त्र के बारे में भीम का क्या मत है ?

(4) धनंजय ने क्या किया था ?

(5) गोग्रहण की घटना से अभिमन्यु को क्या लाभ हुआ ?

6. क-विभागं ख-विभागेन सह संयोजयत ।

क	ख
(1) अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रो ग्रहणं गतः ।	(1) अभिमन्युः
(2) पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा ।	(2) भटः
(3) अशस्त्रेण इति कथ्यताम् ।	(3) बृहन्नला
(4) सुखमास्ते ते जननी ।	(4) भगवान्
(5) एहि एहि वत्स ।	(5) उत्तरः
	(6) बल्लवः

प्रवृत्ति

- भास के तेरह नाटकों के नाम लिखिए ।
- पञ्चरात्रम् पुस्तक प्राप्त करके उसका कथानक पढ़िए ।

14. हनुमद्वर्णितरामवृत्तान्तः

[संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि आदिकवि हैं । ऐसा माना जाता है कि संस्कृत साहित्य में व्यापक रूप से उपयोग किए गए और उपयोग हो रहे अनुष्टुप छंद के वे आविष्कर्ता हैं । आदिकवि होने के कारण उनका 'रामायण' संस्कृत का आदिकाव्य और उसी तरह ऋषि होने कारण आर्षकाव्य कहलाता है ।

रामायण में सात कांड हैं । पहला कांड आदिकांड और अंतिम कांड उत्तरकांड है । कुल मिलाकर रामायण में लगभग चौबीस हजार श्लोक हैं, इस कारण इसे 'चतुर्विंशति-साहस्री-संहिता' भी कहते हैं ।

प्राचीन काल में जब सभी ग्रंथ हाथ से लिखे जाते थे तब रामायण नामक ग्रंथ भी अनेक लिपियों में हाथ से लिखा जाता रहा है । देश-विदेश से ऐसे अनेक हस्तलिखित ग्रंथ एकत्रित करके उस पर से रामायण का एक शुद्ध सुंदर संस्करण प्राच्य विद्यामिंदिर, म. स. युनिवर्सिटी, वडोदरा में तैयार किया गया है ।

रामायण के सुंदरकांड में से प्रस्तुत पद्य लिए गए हैं । हनुमान लंका जाकर अशोकवाटिया में सीताजी से मिलते हैं । राम के दूत के रूप में गए हनुमान माता सीता को स्वयं पर विश्वास दिलाने के लिए राम की अँगूठी देते हैं और राम के जीवन की अब तक की सारी घटनाओं का संक्षेप में वर्णन करते हैं । इस दरम्यान हनुमान राम के गुणों का भी वर्णन करते हैं । इन्हीं गुणों के कारण राम महान हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारे अंदर भी ऐसे गुण होने चाहिए तभी हम महान बन सकते हैं, इसी वास्तविकता को प्रस्तुत पाठ के माध्यम से सीखना है ।]

राजा दशरथो नाम रथकुञ्जरवाजिमान् ।
पुण्यशीलो महाकीर्तिः ऋजुरासीन्महायशाः ।। 1 ।।
तस्य पुत्रः प्रियो ज्येष्ठस्ताराधिपनिभाननः ।
रामो नाम विशेषज्ञः श्रेष्ठः सर्वधनुष्मताम् ।। 2 ।।

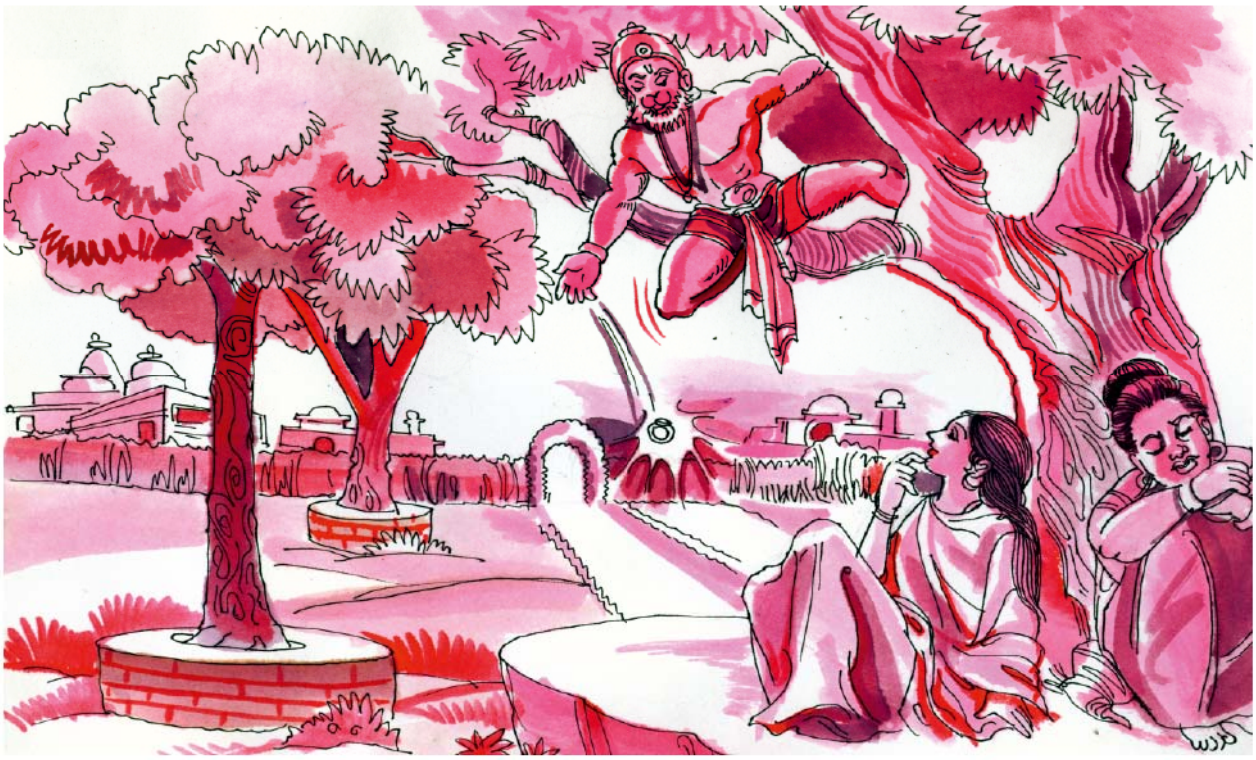

रक्षिता स्वस्य वृत्तस्य स्वजनस्यापि रक्षिता ।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य च परंतपः ।। 3।।
तस्य सत्याभिसन्धस्य वृद्धस्य वचनात् पितुः ।
सभार्यः सह च भ्रात्रा वीरः प्रव्रजितो वनम् ।।4।।
तेन तत्र महारण्ये मृगयां परिधावता ।
राक्षसा निहताः शूरा बहवः कामरूपिणः ।। 5।।
जनस्थानवधं श्रुत्वा निहतौ खरदूषणौ ।
ततस्त्वमर्षापहृता जानकी रावणेन तु ।। 6।।
वञ्चयित्वा वने रामं मृगरूपेण मायया ।
स मार्गमाणस्तां देवीं रामः सीतामनिन्दिताम् ।। 7।।
आससाद वने मित्रं सुग्रीवं नाम वानरम् ।
ततः स वालिनं हत्वा रामः परपुरंजयः ।। 8।।
आयच्छत्कपिराज्यं तु सुग्रीवाय महात्मने ।
सुग्रीवेणाभिसंदिष्टा हरयः कामरूपिणः ।। 9।।
दिक्षु सर्वासु तां देवीं विचिन्वन्तः सहस्रशः ।
अहं संपातिवचनाच्छतयोजनमायतम् ।। 10।।
तस्या हेतोर्विशालाक्ष्याः समुद्रं वेगवान् प्लुतः ।
विरामैवमुक्त्वा स वाचं वानरपुङ्गवः ।। 11।।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : कुञ्जरः हाथी **ताराधिपः** तारों का अधिपति (स्वामी) चंद्र **खरः** जनस्थान का एक राक्षस **दूषणः** रावण द्वारा नियुक्त जनस्थान का सैनिक **अमर्षः** क्रोध **सुग्रीवः** बन्दरों का राजा **हरिः** बंदर **संपातिः** गिद्धराज जटायु का बड़ा भाई

(स्त्रीलिंग) : अभिसंधा वचन **भार्या** पत्नी **मृगया** शिकार

(नपुंसकलिंग)) : आननम् मुख **वृत्तम्** सदाचार, व्यवहार

समास : जनस्थानवधम् (जनस्थाने वधः जनस्थानवधः, तम् । सप्तमी तत्पुरुष) । खरदूषणौ (खरः च दूषणः च, इतरेत्तर द्वन्द्व) । अमर्षापहृता (अमर्षेण अपहृता, तृतीया तत्पुरुष) । मृगरूपेण (मृगस्य रूपम् मृगरूपम्, तेन । षष्ठी तत्पुरुष) । कपिराज्यम् (कपीनाम् राज्यम्, षष्ठी तत्पुरुष) । संपातिवचनात् (संपातेः वचनम् संपातिवचनम्, तस्मात् । षष्ठी तत्पुरुष) । वानरपुङ्गवः (वानरेषु पुङ्गवः, सप्तमी तत्पुरुष) ।

कृदन्त : श्रुत्वा (श्रु + त्वा) । वञ्चयित्वा (वञ्च् – (ब्रौवछ) + त्वा) । हत्वा (हन् + त्वा) । उक्त्वा (वच् > उच् + त्वा) ।

विशेष

(1) शब्दार्थ : रथकुञ्जरवाजिमान् रथ, हाथी एवं घोड़ों से युक्त **पुण्यशीलः** पुण्य करने के स्वभाव वाला **ऋजुः** सरल **ताराधिप-निभ-आननः** चन्द्र के समान मुख वाला **स्वस्य** अपना **वृत्तस्य** व्यवहार का, आचरण का **परंतपः** पर अर्थात् शत्रुओं को पीड़ित करने वाला **सत्याभिसन्धस्य** सत्य (आचरण) के

संकल्प वाले का **सभार्यः** पत्नी के साथ **प्रव्रजितो वनम्** वन में गया **परिधावता** दौड़ते हुए **कामरूपिणः** स्वयं की इच्छानुसार रूप लेने वाला **जनस्थानवधम्** जनस्थान (नामक वन) में किए हुए वध को **अमर्षापहृता** ईर्ष्या से, क्रोध से किया हुआ अपहरण **वञ्चयित्वा** ठग कर **मार्गमाणः** ढूँढ़ते हुए, शोध में संलग्न **सीतामनिन्दिताम्** जिसकी निंदा न की जा सके ऐसी सीता को **आससाद** प्राप्त हुआ, पहुँचा, प्राप्त किया **परपुरंजयः** शत्रु के नगर को जीतने वाला **सुग्रीवेणाभिसंदिष्टाः** सुग्रीव के द्वारा दिए आदेश **विचिन्वन्तः** ढूँढ़ते हुए, खोज (शोध) करते हुए **सहस्त्रशः** हज़ारों **शतयोजनमायतम्** एक सौ योजन तक फैला हुआ (एक योजन अर्थात् लगभग चार माईल-मील) **विशालाक्ष्याः** विशाल नेत्रों वाली **प्लुतः** पार किया, लांघा **वानरपुङ्गवः** वानर श्रेष्ठ

(2) सन्धि : ऋजुरासीन्महायशाः (ऋजुः आसीत् महायशाः) । ततस्त्वमर्षापहृता (ततः तु अमर्षापहृता) संपातिवचनाच्छतयोजनमायतम् (संपातिवचनात् शतयोजनम् आयतम्) । विररामैवमुक्त्वा (विरराम एवम् उक्त्वा) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) रामवृत्तान्तं कः वर्णयति ?

(क) दशरथः (ख) सुग्रीवः (ग) हनुमान् (घ) सीता

(2) ताराधिपः कः ?

(क) सूर्यः (ख) रामः (ग) शुक्रः (घ) चन्द्रः

(3) कामरूपिणः के आसन् ?

(क) राक्षसाः (ख) देवाः (ग) वानराः (घ) अरण्यवासिनः

(4) 'कुञ्जरः' शब्दस्य पर्यायः कः ?

(क) गजः (ख) कूजनम् (ग) कंकरः (घ) काकः

(5) आयतम् शब्दस्य कः अर्थः ?

(क) दीर्घम् (ख) न्यूनम् (ग) विस्तृतम् (घ) सीमितम्

(6) जानकी केन अपहृता ?

(क) खरेण (ख) रावणेन (ग) दूषणेन (घ) विभीषणेन

2. अनुनासिकं परसवर्णत्वेन परिवर्त्य लिखत ।

उदाहरणम् : वर्गसहितम् अनुनासिकपदं लिखत ।

	क-वर्गः	पुंगवः		क-वर्गः	पुङ्गवः
(1)	कुंजरः	.....	(2)	अभिसंधः	.....
(3)	वंचयित्वा	.....	(4)	पुरंजयः	.....
(5)	संदिष्टः	.....			

3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) श्रुत्वा ..... (2) उक्त्वा .....

(3) हत्वा .....

4. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(केन, कः, कुत्र)

(1) दशरथः पुण्यशीलः आसीत् ।

(2) रामेण महारण्ये राक्षसाः निहताः ।

(3) सः वीरः वनं प्रव्रजितः ।

5. उदाहरणानुरूपं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

	शब्दरूपम्	मूलशब्दः	अन्तः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
उदा.	धर्मस्य	धर्म	अकारान्तः	पुल्लिङ्गम्	षष्ठी	एकवचनम्
(1)	मृगयाम्	.....	.....	.....	.....	.....
(2)	बहवः	.....	.....	.....	.....	.....
(3)	मायया	.....	.....	.....	.....	.....
(4)	विशालाक्ष्याः	.....	.....	.....	.....	.....
(5)	वृद्धस्य	.....	.....	.....	.....	.....

प्रवृत्ति

- रामायण के मुख्य पात्रों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कीजिए ।
- रामायण के मुख्य प्रसंगों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।
- राम के गुणों की सूची बनाइए ।

15. सुदुर्लभा सर्वमनोरमा वाणी

[बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पाश्चात्य भाषाओं के प्रभाव के तहत भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के अध्ययन में निबंधकला का प्रवेश हुआ और थोड़े ही समय में उसका व्यापक प्रसार हुआ । उस समय संस्कृत के विद्वानों ने परम्परागत विषयों के साथ आधुनिक विषयों पर अनेक निबंध लिखे । कुछ समय पश्चात् इस प्रकार के निबंधों को संस्कृत भाषा शिक्षा में भी स्थान मिला ।

संस्कृत निबंध लेखकों में पंडित चारुदत्त शास्त्री का नाम प्रसिद्ध है । उन्होंने 'प्रस्तावतरङ्गिणी' नामक संस्कृत भाषा में एक सुंदर सुललित निबंध ग्रंथ तैयार किया है । यहाँ उनके 'सुदुर्लभा सर्वमनोरमा वाणी' शीर्षक वाले विवेचनात्मक निबंध को संपादित करके रखा गया है ।

इस निबंध में यह तथ्य प्रस्तुत किया गया है कि जगत में विविध प्रकार के लोग हैं । सबके रस और रुचि एक समान नहीं होते हैं । परिणाम स्वरूप सबका मन मोह ले, ऐसी वाणी दुर्लभ है । वाणी के संदर्भ में भी ऐसा ही है । अतः सबको सुनना अच्छा लगे और सुनकर किसी की भावना को ठेस न पहुँचे, ऐसे वचन बोलने चाहिए । जबकि ऐसी वाणी बोलने वाले दुर्लभ होते हैं ।]

लोके यद्वस्तु एकस्मै रोचते, तदन्यस्मै न रोचते इत्यतः विचित्ररुचिरयं संसारः । एकस्मिन् परिवारे जातानां समानाचारविचाराणां जनानामपि भिन्ना भिन्ना रुचिर्भवति, किम्पुनः विभिन्नेषु परिवारेषु उत्पन्नानां जनानां वार्ता ? समानपितृकेषु पुत्रेषु कश्चित् मधुरं रोचयते, कश्चित् लवणं कश्चित् चाम्लं रसमिति । एवं हि कश्चित् काव्यं रसयति, कश्चित् नाट्यं, कश्चित् शिल्पं, कश्चित् च गणितम् । एवमेव कस्मैचित् शृंगारः प्रियो भवति, कस्मैचित् वीरः, कस्मैचित् करुणः, कस्मैचित् च हास्यरसः । विरलाय कस्मैचित् जनाय बीभत्सरसोऽपि रोचते इति नानात्वं रुचीनां व्यवस्थितं भवति ।

एवं सति, एका एव वाणी सर्वस्य मानसं संतोषयितुं नार्हति । यः खलु आर्षेण संस्कारेण संस्कृतो भवति, तस्मै मृद्वी ऋज्वी च वाणी रोचते, न तु कर्कशा कुटिला वा । अतः एतैः सह वार्तावसरे एतादृशी वाणी एव उचिता भवति । परंतु यः जडः दुर्व्यसनरतः अलसः च सेवकः भवति, तस्मै तस्याधिपः प्रायः कर्कशां वाणीं वदति, कार्ये च संयोजयति, स्वकीयं प्रयोजनं च संपादयति ।

यः खलु ईर्ष्याग्रस्तो भवति तस्मै परस्य दुर्गुणानुवादः रोचते स्वस्य च गुणानुवादः । यः खलु सज्जनो भवति तस्मै परापवादः कथमपि न रोचते । केचन असूयकाः भवन्ति ते हितमपि अनुशासनम् न सहन्ते । तथैव सर्वाङ्गं सुन्दरं सरसं सुभाषितमपि न संतोषयति अल्पज्ञान् ।

यदि सर्वस्य मनोरमा वाणी न शक्यते वक्तुम्, तदा सभामध्ये संगत्य, समितौ समुपस्थाय किं तूष्णीं स्थेयम् किं वा मिथ्या आख्येयम् इति प्रश्नः । अत्रोत्तरं ददाति महाराजः मनुः –

सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम् ।
अब्रुवन् विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्विषी ।। इति ॥

एवं व्यवहारेऽपि प्रवृत्ता वाणी सर्वान् समानरूपेण न संतोषयति । वस्तुतः सुदुर्लभा सर्वमनोरमा वाणी । सर्वेऽपि जनाः विचक्षणाः न भवन्ति । केचित् मन्दाः इति वा, केचित् अज्ञाः इति वा स्नेहपूर्णां वाणीमपि भावयितुं न पारयन्ति । एतादृशान् जनान् दृष्ट्वा किं व्यवहारे वाणीप्रयोगः परित्यक्तव्यः ? न

हि न हि । मृगाः सन्तीति यवाः नोप्यन्ते ? उप्यन्ते एव । भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रियन्ते ? अधिश्रियन्ते एव । अतः स्वकीयेन सुरुचिपूर्णेन व्यवहारेण जनान् आनन्दयितुं संस्कृता वाणी एव सततं प्रयोक्तव्या ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिग) : शृंगारः शृंगार, काव्य के नव रसों में से एक रस (इसी तरह **वीरः** वीर **करुणः** करुण **हास्यः** हास्य **बीभत्सः** बीभत्स भी काव्य के रस हैं ।) **सेवकः** नौकर, कर्मचारी **अधिपः** मालिक, स्वामी **परापवादः** पराये के लिए बुरा कथन **असूयकः** ईर्ष्या करने वाला, गुणों में भी दोष देखने वाला **अल्पज्ञः** अल्प जानकार **विचक्षणः** चतुर **मन्दः** धीमा, सुस्त, लापरवाह **अज्ञः** अज्ञानी **यवः** जौ

(स्त्रीलिंग) : समितिः सभा **स्थाली** रसोई करने का बर्तन, हंड़िया **संस्कृता** संस्कृत, सुसंस्कृत, शिष्ट विद्वानों में सम्मत

(नपुंसकलिंग) : शिल्पम् कला कारीगरी, हुन्नर **प्रयोजनम्** उद्देश्य, लक्ष्य **अनुशासनम्** नसीहत, उपदेश **सुभाषितम्** प्रिय बोल, मधुर वाणी, **समञ्जसम्** योग्य, उचित

सर्वनाम : एकस्मै एक के लिए **अन्यस्मै** दूसरे के लिए **कश्चित्** किसी **कस्मैचित्** किसी के लिए **एतैः** इन सब से (पुं.-नपुं.) **तस्मै** उनके लिए **परस्य** पराए का, दूसरे का **स्वस्य** अपना **केचन** कुछ **सर्वस्य** सबका **केचित्** कुछ

विशेषण : विचित्ररुचिः विचित्र रुचिवाला **समानपितृकः** समान हैं पिता जिसके वह **भिन्ना** भिन्न **एका** एक **आर्षः** ऋषियों को, ऋषियों ने, ऋषियों द्वारा प्रदत्त उपदेश, ऋषियों द्वारा स्वीकृत **जडः** मूर्ख **दुर्व्यसनरतः** दुर्व्यसन में तल्लीन, कुटेव में ओतप्रोत **अलसः** आलसी **मृदु** कोमल, नरम **ऋज्वी** सरल, सीधी **कर्कशा** कठोर, निर्दयी **कुटिला** कपटी, टेढ़ी **मनोरमा** मन को भाए ऐसी, आकर्षक, सुन्दर **सुदुर्लभा** बड़ी मुश्किल से प्राप्त होने वाली, विरल **सर्वमनोरमा** सबको आकर्षित करे ऐसी, सबको भाए ऐसी (यहाँ सभी विशेषणों का प्रयोग स्त्रीलिंग में किया गया है ।)

समास : वार्तावसरे (वार्तायाः अवसरः वार्तावसरः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । दुर्व्यसनरतः (दुर्व्यसनेषु रतः दुर्व्यसनरतः । सप्तमी तत्पुरुष) । ईर्ष्याग्रस्तः (ईर्ष्यया ग्रस्तः ईर्ष्याग्रस्तः । तृतीया तत्पुरुष) । दुर्गुणानुवादः (दुर्गुणानाम् अनुवादः दुर्गुणानुवादः । षष्ठी तत्पुरुष) । सभामध्ये (सभायाः मध्यः सभामध्यः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । सर्वमनोरमा (सर्वेभ्यः मनोरमा सर्वमनोरमा । चतुर्थी तत्पुरुष) । स्नेहपूर्णाम् (स्नेहेन पूर्णा स्नेहपूर्णा, ताम् । तृतीया तत्पुरुष) । वाणीप्रयोगः (वाण्याः प्रयोगः वाणीप्रयोगः । षष्ठी तत्पुरुष) ।

कृदन्तपद : संतोषयितुम् (सम् + तुष् - तोषि (प्रेरक क्रिया) + तुम्) वक्तुम् (वच् + तुम्) संगत्य (सम् + गम् + त्वा > य) समुपस्थाय (सम् + उप + स्था + त्वा > य) भावयितुम् (भू - भावि (प्रेरक क्रिया) + तुम्) दृष्ट्वा (दृश् + त्वा) आनन्दयितुम् (आ + नन्द् - नन्दि (प्रेरक क्रिया) + तुम्) ।

क्रियापद : प्रथम गण : (आत्मनेपद) **रुच् (रोचते)** रुचिकर होना, अच्छा लगना **सह् (सहते)** सहना, सहन करना

दशम गण : (परस्मैपद) **रस् (रसयति)** रुचि लेना, चखना **सम् + युज् (संयोजयति)** अच्छी तरह जोड़ना

विशेष

(1) शब्दार्थ : लोके लोक में, संसार में **विचित्ररुचिः** विचित्र रुचिवाला, भिन्न-भिन्न प्रकार की रुचियों वाला **समानाचारविचाराणाम्** एक समान आचार विचार वालों का **रोचते** अच्छा लगता है **नानात्वम्** भिन्न-भिन्न प्रकार की, अनेक प्रकार की **व्यवस्थितम्** व्यवस्थित होता है, स्थिर होता है **एवं सति** ऐसा है तब **तस्याधिपः** उसका मालिक **संपादयति** प्राप्त करता है, संपादन करता है **हितमपि** हित-कल्याण करने वाले को भी **स्थेयम्** खड़े रहना चाहिए, स्थिर रहना चाहिए **आख्येयम्** कहना चाहिए **वक्तव्यम्** बोलना चाहिए **अब्रुवन्** न बोलने वाला **विब्रुवन्** विरुद्ध-असत्य बोलने वाला **किल्विषी भावयितुम्** अनुभव करने के लिए, **न पारयन्ति** समर्थ नहीं बन सकते **नोप्यन्ते** बोए नहीं जाते **स्थाल्यः** तपेलियाँ **न अधिश्रियन्ते** क्या (चूल्हे पर) नहीं ? **आनन्दयितुम्** आनन्द प्रदान करने के लिए **प्रयोक्तव्या** उपयोग की जानी चाहिए, उपयोग में ली जानी चाहिए ।

(2) सन्धि : यद्वस्तु (यत् वस्तु) । रुचिर्भवति (रुचिः भवति) । बीभत्सरसोऽपि (बीभत्सरसः अपि) । तस्याधिपः (तस्य अधिपः) । सज्जनो भवति (सज्जनः भवति) । वापि (वा अपि) । व्यवहारेऽपि (व्यवहारे अपि) । सन्तीति (सन्ति इति) । नोप्यन्ते (न उप्यन्ते) । स्थाल्यो नाधिश्रियन्ते (स्थाल्यः न अधिश्रियन्ते) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कस्मैचित् विरलाय जनाय कः रसः रोचते ?

(क) हास्यरसः (ख) करुणरसः (ग) बीभत्सरसः (घ) शृंगाररसः

(2) आर्षेण संस्कारेण संस्कृताय जनाय कीदृशी वाणी रोचते ?

(क) कर्कशा (ख) ऋज्वी (ग) कुटिला (घ) स्पष्टा

(3) परस्य दुर्गुणानुवादः कस्मै रोचते ?

(क) ईर्ष्याग्रस्ताय (ख) दयाग्रस्ताय (ग) मानग्रस्ताय (घ) अपमानग्रस्ताय

(4) स्नेहपूर्णामपि वाणीं के भावयितुं न पारयन्ति ?

(क) मन्दाः (ख) पण्डिताः (ग) साधवः (घ) नीतिज्ञाः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) कर्कशां वाणीं कः कस्मै वदति ?

(2) ईर्ष्याग्रस्ताय स्वस्य किं रोचते ?

(3) के हितमपि अनुशासनं न सहन्ते ?

(4) सभायां कीदृशं वक्तव्यम् ?

(5) जनान् आनन्दयितुं कीदृशी वाणी प्रयोक्तव्या ?

3. अधोलिखितानि क्रियापदानि ह्यस्तनभूतकालस्य (लङ्लकारस्य) रूपत्वेन परिवर्तयत ।

(1) रोचते .....

(2) अर्हति .....

(3) सहन्ते .....

(4) पारयन्ति .....

4. निम्नलिखितानां पदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) हास्यरसः .....

(2) दुर्व्यसनरतः .....

(3) सुरुचिपूर्णः .....

(4) गुणानुवादः .....

(5) सर्वमनोरमा .....

5. शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	.....	.....	स्थाल्यः
(2)	मृगः	.....	.....
(3)	कर्कशाम्	.....	.....
(4)	परिवारे	.....	.....

6. वचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	.....	.....	रोचन्ते
(2)	रसयति	.....	.....
(3)	.....	भवतः	.....
(4)	.....	.....	पारयन्ति
(5)	रोचते	.....	.....

7. प्रदत्तान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) जो वस्तु एक को अच्छी लगती है ।
(यत् वस्तु एक रुच्)

(2) लोगों की रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती है ।
(जन भिन्ना भिन्ना रुचि भू)

(3) सुभाषित भी संतोष प्रदान नहीं कर सकता ।
(सुभाषित अपि न संतोषय)

(4) कुछ लोग असूयक होते हैं ।
(केचन जन असूयक भू)

(5) लोग विचक्षण नहीं होते ।
(जन विचक्षण न भू)

8. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) लोगों की रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती है, यह किस प्रकार ज्ञात होता है ?

(2) मृदु एवं ऋजु वाणी किसे अच्छी लगती है ?

(3) ईर्ष्याग्रस्त मनुष्य को किसकी क्या बात अच्छी लगती है ?

(4) सभा में किस प्रकार बोलना चाहिए ?

(5) स्नेहपूर्ण वाणी को भी कौन अनुभव नहीं कर सकती ?

प्रवृत्ति

- अपने सुने हुए वार्तालाप में से रुचिकर वार्तालाप के कारण बताइए ।
- वाणी के महत्त्व को बताने वाले श्लोक एकत्रित कीजिए ।

16. अजेयः स भविष्यति

[चाणक्य विरचित मुख्य रूप से राजनीति का उपदेश देने वाला नीतिसार नामक ग्रंथ से प्रस्तुत श्लोक लिए गए हैं । राजनीति को परिवार और समाज से अलग करके देखना चाणक्य को स्वीकार्य नहीं था । अतः वे राजनीति के उपदेश के साथ मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को सम्मिलित कर ले, ऐसे उपदेश देते रहे हैं ।

चाणक्य की यह बात भी हमेशा याद रखने जैसी है कि मानव यदि सतर्क बनकर विचारपूर्ण ढंग से दुनिया को देखना सीख जाए तो दुनिया की सभी वस्तुएँ एवं घटनाएँ उसे व्यवहारोचित और सुखी होने के लिए कर्मों का उपदेश देती रहती हैं । जिनका अनुकरण करके मानव अपने जीवन को उत्तम बना सकता है ।

अपने आसपास विचरण करने वाले प्राणियों को भले हम अच्छे और खराब की श्रेणी में विभाजित करते हों, परन्तु चाणक्य जैसे विद्वान उनके पास से सतत कुछ न कुछ सीखते रहते हैं । ऐसे ही एक प्रसंग में सिंह और बगुले से एक, कुत्ते से छः, गधे से तीन, कौवे से पाँच और मुर्गे से चार गुण सीखने की प्रेरणा देने वाले निम्नलिखित पद्य चाणक्य ने लिखे हैं ।

मनुष्य को अपने व्यक्तित्त्व विकास के लिए और जीवन सफल बनाने के लिए इन सभी बीस गुणों को जान लेना चाहिए तथा व्यवहार में उनका उपयोग करना चाहिए । प्राणियों की उपेक्षा करने के बदले उनसे भी मार्गदर्शन लेना चाहिए, यह भी इस पाठ से समझा जा सकेगा ।]

सिंहादेकं बकादेकं षट् शुनः त्रीणि गर्दभात् ।
वायसात्पञ्च शिक्षेच्च चत्वारि कुक्कुटादपि ॥ 1 ॥
प्रभूतमल्पकार्यं वा यो नरः कर्तुमिच्छति ।
सर्वारम्भेन तत्कुर्यात् सिंहादेकं प्रकीर्तितम् ॥ 2 ॥
सर्वेन्द्रियाणि संयम्य बकवत् पतितो जनः ।
कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ 3 ॥
प्राप्ताशी स्वल्पसंतुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः ।
प्रभुभक्तश्च शूरश्च ज्ञातव्याः श्वगुणा हि षट् ॥ 4 ॥
अविश्रामं वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति ।
ससन्तोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात् ॥ 5 ॥
गूढगार्हस्थ्यचातुर्यं काले चालयसंग्रहम् ।
अप्रमादमनालस्यं पञ्च शिक्षेत वायसात् ॥ 6 ॥
युद्धं च प्रातरुत्थानं भोजनं सह बन्धुभिः ।
स्त्रियमापद्गतां रक्षेत् चतुः शिक्षेत कुक्कुटात् ॥ 7 ॥
य एतान् विंशतिगुणान् आचरिष्यति मानवः ।
कार्यावस्थासु सर्वासु अजेयः स भविष्यति ॥ 8 ॥

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : गर्दभः गधा **वायसः** कौआ **कुक्कुटः** मुर्गा **बन्धुः** स्वजन

सर्वनाम : एतान् इन सबको (पुं. ब.व.) **सर्वासु** सब में (स्त्री. ब.व.)

विशेषण : सुनिद्रः अच्छी तरह सोने वाला **शीघ्रचेतनः** तुरन्त जागने वाले

अव्यय : प्रभूतम् अत्यधिक **बकवत्** बगुले की भाँति

समास : कालदेशोपपन्नानि (कालः च देशः च इति कालदेशौ, इतरेतर द्वन्द्वः । कालदेशाभ्याम् उपपन्नानि कालदेशोपपन्नानि । तृतीया तत्पुरुष) । स्वल्पसंतुष्टः (स्वल्पेन संतुष्टः स्वल्पसंतुष्टः । तृतीया तत्पुरुष) । प्रभुभक्तः (प्रभोः भक्तः प्रभुभक्तः । षष्ठी तत्पुरुष) । शीतोष्णम् (शीतम् च उष्णम् च शीतोष्णम् । समाहार द्वन्द्व) । आलयसंग्रहम् (आलयस्य संग्रहः आलयसंग्रहः, तम् । षष्ठी तत्पुरुष) । कार्यावस्थासु (कार्याणाम् अवस्था कार्यावस्था, तासु । षष्ठी तत्पुरुष)

कृदन्तपद : कर्तुम् (कृ + तुम्) । **संयम्य (सम् + यम् + त्वा > य)** ।

क्रियापद : छठा गण (परस्मैपद) : **विद् (विन्दति)** प्राप्त करना, पाना

विशेष

(1) शब्दार्थ : सिंहादेकम् सिंह से एक **बकादेकम्** बगुले से एक **शुनः** कुत्ते से **कुक्कुटादपि** मुर्गे से भी **प्रकीर्तितम्** कहा गया है **कुर्यात्** करना चाहिए **कालदेशोपपन्नानि** देश और काल के संदर्भ में प्राप्त हुआ **साधयेत्** सिद्ध करना चाहिए **प्राप्ताशी** मिला हुआ, आने वाला **श्वगुणाः** कुत्ते के गुण **ज्ञातव्याः** जानने चाहिए **अप्रमादम्** आलस्य रहित **स्त्रियमापद्गताम्** आपत्ति ग्रस्त स्त्री को

(2) सन्धि : सिंहादेकम् (सिंहात् एकम्) । बकादेकम् (बकात् एकम्) । कुक्कुटादपि (कुक्कुटात् अपि) । शूरश्च (शूरः च) । स्त्रियमापद्गताम् (स्त्रियम् आपद्गताम्) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) सिंहात् कति लक्षणानि शिक्षेत ? ◯

(क) एकं लक्षणम् (ख) द्वे लक्षणे (ग) त्रीणि लक्षणानि (घ) बहुलक्षणानि

(2) प्रभूतम् शब्दस्य विरुद्धार्थकः कः शब्दः । ◯

(क) शीतम् (ख) अल्पम् (ग) उष्णम् (घ) विभूतम्

(3) गर्दभः अविश्रामं किं वहति ? ◯

(क) गुणम् (ख) भारम् (ग) भागम् (घ) अन्नम्

(4) काकशब्दस्य कः पर्यायः ? ◯

(क) रासभः (ख) कोकिलः (ग) वायसः (घ) केसरी

2. उदाहरणानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

	शब्दरूपम्	मूलशब्दः	प्रकारः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
उदाहरणम् :	सिंहात्	सिंह	अकारान्तः	पुल्लिङ्गम्	पञ्चमी	एकवचनम्
(1) नरःउ१०४	.....	.....	.....	.....	.....	.....
(2) कार्याणि	.....	.....	.....	.....	.....	.....
(3) बन्धुभिः	.....	.....	.....	.....	.....	.....
(4) भारम्	.....	.....	.....	.....	.....	.....

3. गुर्जरभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) मनुष्य को बगुले और कौए से क्या सीखना चाहिए ?

(2) गधे में कौन-से गुण हैं ?

(3) किसी भी परिस्थिति में मनुष्य को अजेय बनने के लिए क्या करना चाहिए ?

4. श्लोकपूर्तिं कुरुत ।

(1) प्रभूतमल्पकार्यम् ..... प्रकीर्तितम् ।।

(2) प्राप्ताशी ..... शुनो गुणाः ।।

5. अनुवादं कृत्वा अर्थविस्तारं कुरुत, तस्य बोधं च लिखत ।

(1) सर्वेन्द्रियाणि संयम्य बकवत् पतितो जनः ।
कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्याणि साधयेत् ॥

(2) अविश्रामं वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति ।
ससन्तोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात् ॥

(3) युद्धं च प्रातरुत्थानं भोजनं सह बन्धुभिः ।
स्त्रियमापद्गतां रक्षेत् चतुः शिक्षेत कुक्कुटात् ॥

प्रवृत्ति

- पशु-पक्षियों के संस्कृत नामों की सूची तैयार कीजिए ।
- अपने मनपसंद पशु-पक्षियों का अवलोकन कर उनकी लाक्षणिकताएँ लिखिए ।
- शहर में या अन्यत्र प्राणी संग्रहालय का अवलोकन कीजिए ।
- विविध प्राणियों तथा पक्षियों के चित्रों का संग्रह कीजिए ।

17. आचार्यः चरकः

[प्राचीन भारत में विविध विद्याक्षेत्रों में कुछ विशिष्ट प्रदान करने वाले अनेक आचार्य हो गए हैं । उनमें से कई आचार्य अपने रचित ग्रंथों के रूप में आज भी हमारे बीच उपस्थित हैं । इन्हीं आचार्यों में से एक आचार्य चरक हैं ।

आचार्य चरक आयुर्वेदशास्त्र के महान विद्वान थे । उन्होंने औषधिविज्ञान की नींव डाली थी । अन्य विद्वानों की तरह उनके जीवन के विषय में भी कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है । परन्तु उनके द्वारा रचित ग्रंथ आज भी हमारे पास उपलब्ध हैं । संस्कृत भाषा में लिखे इस ग्रंथ का नाम 'चरकसंहिता' है । आयुर्वेदशास्त्र का अध्ययन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चरकसंहिता नामक इस ग्रंथ को पढ़ना ही पड़ता है ।

प्रस्तुत पाठ में आयुर्वेदशास्त्र के इस सुप्रसिद्ध विद्वान का परिचय प्राप्त करना है । उसी के साथ उनका एक उपदेश भी ग्रहण करने जैसा है । रोगविहीन शरीर सबसे मूल्यवान धन है, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति स्वयं किस तरह रोग रहित रह सकता है, यह भी जान लेना चाहिए । यह महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत पाठ के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है ।]

चरकनाम्ना प्रसिद्धः आचार्यः ख्रिस्तस्य प्रथमशताब्द्यां आयुर्वेदस्य महान् पण्डितः । सः कनिष्कनृपतेः राजवैद्यः आसीत् ।

अस्य आचार्यस्य चरकसंहितानामकः सुप्रसिद्धः ग्रन्थः वर्तते । आयुर्वेदस्य प्राचीनतमेषु विश्वविख्यातेषु च ग्रन्थेषु अस्य गणना भवति ।

अस्मिन् ग्रन्थे सूत्रस्थानम्, निदानस्थानम्, विमानस्थानम्, शारीरस्थानम्, इन्द्रियस्थानम्, चिकित्सास्थानम्, कल्पस्थानम्, सिद्धिस्थानम् चेति अष्टौ प्रकरणानि सन्ति । एतेषु सर्वेषु प्रकरणेषु सम्मिल्य विंशत्युत्तर-एकशतम्

(120) अध्याया: सन्ति । अस्य ग्रन्थस्य प्रमाणं द्वादशसहस्रश्लोका- त्मकं वर्तते । अत्र प्राय: सहस्रद्वयम् औषधयोगानां विस्तृतम् व्याख्यानमस्ति । अस्मिन् व्याख्याने ज्वर-रक्तपित्त-उन्माद-अतिसार-प्रमेहादीनाम् उदर-शिरो-हृदयादीनां च रोगाणां निवारकानि विनाशकानि च औषधानि उल्लिखितानि सन्ति । एवं हि मन्यते यत् भारते औषधविज्ञानस्य प्रवर्तक: अयमेवाचार्य: ।

निखिलमपि आयुर्वेदसाहित्यम् आचार्यस्य चरकस्य उच्छिष्टमस्ति । अथ च आयुर्वेदशास्त्रीयं यत् ज्ञानं चरकसंहितायां वर्तते तदेव सर्वत्र वर्तते, चरकसंहितायां यत् नास्ति, तत् कुत्रापि न वर्तते ।

अस्य केचन उपदेशा: स्मर्तव्या: सन्ति । तद्यथा - मनुष्य: केन प्रकारेण रोगरहित: भवितुम् अर्हतीति विषये उपदिशति आचार्य: -

नरो हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्त: ।

दाता सम: सत्यपर: क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगी ।।

अर्थात् य: नर: हितस्य आहारस्य विहारस्य च सेवनं करोति, सर्वं कार्यं समीक्ष्य करोति, विषयेषु नितरामासक्त: न भवति, य: दानं करोति, व्यवहारे समत्वं क्षमाभावं च आचरति, आप्तजनानां सेवां करोति तादृश: नर: अरोगी अर्थात् स्वस्थ: भवति ।

अत्र एक: प्रश्न: । 'किम् औषधं विना सम्यक् व्यवहारेणापि जन: रोगरहित: भवितुमर्हती' ति ? तस्येदमुत्तरम् । यदा रोग: शरीरे प्रविष्टो भवति, तदा औषधस्य आवश्यकता भवति । परन्तु शरीरे रोगस्य प्रवेश: एव न स्यात् एतदर्थं मानवेन सम्यक् व्यवहार: करणीय एव । व्यवहारस्यापि स्वास्थ्ये प्रभावो भवतीत्येष: चरकाचार्यस्य उपदेश: ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : ख्रिस्त: ईसा मसीहा **औषधयोग:** दवाई, औषधि (विविध वस्तुओं के संमिश्रण से तैयार की जाने वाली औषधि को औषधयोग कहते हैं ।) **ज्वर:** बुखार **रक्तपित्त:** रक्तपित्त नामक रोग **उन्माद:** एक मानसिक रोग जिसमें व्यक्ति को पागलपन आ जाता है । **अतिसार:** अतिसार, दस्त **प्रमेह:** पेशाब का रोग, डायाबिटीस **प्रवर्तक:** प्रवर्तन करने वाला, प्रवृत्ति का जनक

(स्त्रीलिंग) : प्रथम शताब्दी पहली सदी, प्रथम सौ वर्ष की अवधि **उक्ति:** कथन, पंक्ति

(नपुंसकलिंग) : तदानीन्तनम् उस समय का **उदरम्** पेट **निवारकम्** निवारण करने वाला, दूर करने वाला

सर्वनाम : अयम् यह (पुं.) **अस्य** इसका (पुं.) **एतेषु सर्वेषु** इन सभी में (पुं. और नपुं.) **अस्मिन्** इसमें (पुं.) **केन** किसके द्वारा (पु.) **य:** जो (पुं.)

विशेषण : प्राचीनतम अत्यन्त प्राचीन, अत्यधिक पुराना **प्रथमा** पहली **द्वितीया** दूसरी, दूसरे स्थान पर रही हुई **निखिल** पूरा, सम्पूर्ण **तादृश** उसके जैसा **प्रविष्ट** प्रवेश कर चुका, प्रवेश किया हुआ

अव्यय : प्राय: अधिकतर, अत्यधिक रूप से **इह** यहाँ, इस स्थान पर **अन्यत्र** कहीं और, किसी अन्य स्थान पर **क्वचित्** कहीं, कभी **कुत्रापि** कहीं भी **सर्वत्र** सब जगह, हर जगह **केचन** कुछ (पुं.) **तद्यथा** जिस तरह से, जैसेकि

कृदन्तपद : सम्मिल्य (सम् + मिल् + त्वा > य) अधिकृत्य (अधि + कृ + त्वा > य) भवितुम् (भू-भव् + तुम्) समीक्ष्य (सम् + ईक्ष् + त्वा > य) ।

समास : **राजवैद्यः** (वैद्यानाम् राजा राजवैद्यः अथवा राज्ञः वैद्यः राजवैद्यः, षष्ठी तत्पुरुष) **विश्वविख्यातेषु** (विश्वस्मिन् विख्यातः विश्वविख्यातः, तेषु । षष्ठी तत्पुरुष) **औषधयोगानाम्** (औषधानाम् योगः औषधयोगः, तेषाम् । षष्ठी तत्पुरुष) **औषधविज्ञानस्य** (औषधस्य विज्ञानम् औषधविज्ञानम्, तस्य । षष्ठी तत्पुरुष) **रोगरहितः** (रोगेण रहितः रोगरहितः । तृतीया तत्पुरुष)

विशेष

(1) शब्दार्थ : कनिष्कनृपतेः कनिष्क नामक राजा का **ग्रन्थस्य प्रमाणम्** ग्रन्थ का प्रमाण, ग्रन्थ का आकार (प्राचीन समय में ग्रन्थ के आकार को नापने की एक पद्धति थी । तदनुसार ग्रन्थ के सभी अक्षरों को गिनकर उन अक्षरों की संख्या को बत्तीस से (कभी 8 से) भाग देकर जो उत्तर प्राप्त हो उस उत्तर की संख्या को ग्रन्थ के आकार के रूप में स्वीकार किया जाता था ।) **द्वादशसहस्रश्लोकात्मकः** बारह हजार श्लोक वाला ग्रन्थ **सहस्रद्वयम्** दो हजार **निवारकानि** निवारण करने वाला **विनाशकानि** विनाश करने वाला **उच्छिष्टम्** जूठन, उपयोग के पश्चात अवशिष्ट **स्मर्तव्याः** स्मरण करने योग्य **हिताहारविहारसेवी** हितकारक भोजन तथा आचरण करने वाला **समीक्ष्यकारी** अच्छी तरह से सोचकर काम करने वाला, सोच समझकर व्यवहार करने वाला **दाता** दान करने वाला **समः** समता वाला, समान भावना वाला **आप्तोपसेवी** आप्त लोगों की सेवा करने वाला (यथार्थवक्ता अर्थात् जैसा है वैसा ही करने का व्रत रखने वाला तथा साक्षात् कृतधर्मा अर्थात् जिसने स्वयं के ज्ञान और कर्म से धर्म का साक्षात्कार किया है । वैसी महान आत्मा को आप्त कहा जाता है ।) अरोगी रोग रहित

(2) सन्धि : अयमेवाचार्यः (अयम् एव आचार्यः) । चाधिकृत्य (च अधिकृत्य) । यदिहास्ति (यत् इह अस्ति) । यन्नेहास्ति (यत् न इह अस्ति) । उक्तेरयमर्थः (उक्तेः अयम् अर्थः) । विषयेष्वसक्तः (विषयेषु असक्तः) । भवत्यरोगी (भवति अरोगी) भवितुमर्हतीति (भवितुम् अर्हति इति) । तस्येदमुत्तरम् (तस्य इदम् उत्तरम्) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) चरकसंहितायाः प्रकरणेषु कति अध्यायाः सन्ति ? ◯

(क) 120 (ख) 122 (ग) 100 (घ) 210

(2) हिताहारविहारसेवी नरः कीदृशो भवति ? ◯

(क) अरोगी (ख) विद्वान् (ग) आप्तसेवी (घ) बलवान्

(3) 'ज्वरः' शब्दस्य अर्थः कः ? ◯

(क) जवारे (ख) बुखार (ग) जरा सा (थोड़ा) (घ) जरा (बुढ़ापा)

(4) 'उचितः' शब्दस्य विरुद्धार्थः कः ?

(क) निश्चिंतः (ख) अरुचिः (ग) सूचितः (घ) अनुचितः

(5) 'रोगरहितः' शब्दस्य समासप्रकारं लिखत ।

(क) षष्ठी तत्पुरुष (ख) द्वितीया तत्पुरुष (ग) तृतीया तत्पुरुष (घ) पञ्चमी तत्पुरुष

(6) 'कुत्रापि' शब्दस्य योग्यसन्धिविच्छेदं दर्शयत ।

(क) कुत्रा + अपि (ख) कुत्र + अपि

(ग) कु + तत्र + अपि (घ) कु + त्रापि

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) आचार्यचरकस्य कः ग्रन्थः सुप्रसिद्धः वर्तते ?

(2) चरकस्य ग्रन्थे कस्य व्याख्यानं वर्तते ?

(3) औषधस्य आवश्यकता कदा भवति ?

(4) स्वास्थ्ये कस्य प्रभावो भवति ?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कस्य, केन, कः, कस्मै)

(1) चरकाचार्यस्य चरकसंहितानामकः सुप्रसिद्धः ग्रन्थः वर्तते ।

(2) चरकाचार्यः भारते औषधविज्ञानस्य प्रवर्तकः इति मन्यते ।

(3) मानवेन सम्यक् व्यवहारः करणीयः ।

4. वर्गसहितं अनुनासिकपदं लिखत ।

उदा. संजातः च वर्गः सञ्जातः

(1) परंतु .... (2) तदानींतनम् ....

(3) संमिल्य .... (4) अंगम् ....

5. स्वभाषायाम् अनुवादं कुरुत ।

(1) आयुर्वेदस्य प्राचीनतमेषु विश्वविख्यातेषु च ग्रन्थेषु अस्य गणना भवति ।

(2) अत्र प्रायः सहस्रद्वयम् औषधयोगानां विस्तृतं व्याख्यानमस्ति ।

(3) निखिलमपि आयुर्वेदसाहित्यम् आचार्यचरकस्य उच्छिष्टमस्ति ।

(4) यः नरः हितस्य आहारस्य विहारस्य च सेवनं करोति सः रोगरहितो भवति ।

(5) यदा रोगः शरीरे प्रविष्टो भवति तदा औषधस्य आवश्यकता भवति ।

18. बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

[संस्कृत साहित्य की अनुपम कृति और विश्वभर में प्रसिद्ध पंचतंत्र नामक कथा ग्रंथ में से प्रस्तुत कथा ली गई है । पंचतंत्र के रचयिता विष्णुशर्मा हैं । उन्होंने अमरशक्ति नामक राजा के पुत्रों को मात्र छः महीना के समय में राजनीति में निपुण बनाने के लिए इस ग्रंथ की रचना की थी । इसमें मित्रभेद, मित्रप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश और अपरीक्षितकारक पाँच तंत्र (प्रकरण) हैं, इसलिए इस ग्रंथ का नाम पंचतंत्र है ।

प्रत्येक तंत्र के आरम्भ में पहले एक कथा शुरू की जाती है और फिर उसकी उपकथाओं के रूप में अनेक कथाएँ आती रहती हैं । गद्य और पद्य दोनों शैली में रचित छोटी-छोटी सुंदर रसमय प्राणी कथाओं की अद्‌भुत संकल्पना इस ग्रंथ में है । प्रत्येक कथा में व्यक्ति का बुद्धिचातुर्य बढ़े, इसका विशेष ध्यान रखा गया है । कथा के अंतर्गत किसी एक विषय का प्रतिकूल तथा अनुकूल दोनों पक्ष सामने रखकर कथावस्तु को आगे बढ़ाया गया है । कथोपकथन की इस विशिष्ट शैली के कारण मनोरंजन के साथ-साथ जीवनोपयोगी मूल्यवान उपदेश भी पाठक को प्राप्त होते रहते हैं ।

आने वाली आपत्ति की जानकारी और फिर उससे बचने का उपाय सिखाने वाली इन कथाओं का अध्ययन करते समय पाठ में उपयोग किए गए अव्यय पदों का भी अध्ययन करेंगे ।]

कस्मिंश्चित् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म । सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं अलभत । ततः सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत् - ''नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति । अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि'' इति ।

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत् । स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा, न च बहिरागता अपश्यत् । शृगालः अचिन्तयत् - ''अहो विनष्टोऽस्मि । नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि । तत् किं करवाणि ?'' एवं विचिन्त्य दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः - ''भो बिल ! भो बिल ! किम् न स्मरसि यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि ? यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति ।''

अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत् - 'नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति । परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति ।' तदहम् अस्य आह्वानं करोमि । एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति । इत्थं विचार्य सिंहः

सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत् । सिंहस्य उच्चगर्जनस्य प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत् । अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन् । शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इममपठत् –

अनागतं यः कुरुते स शोभते
स शोच्यते यो न करोत्यनागतम् ।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा
बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता ।।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : (खरनखरः यह नाम है ।) **क्षुधार्तः** भूख से पीड़ित, भूखा **जीवः** प्राणी, जीव **निगूढः** छिपा हुआ (दधिपुच्छः यह सियार का नाम है ।) **शृगालः** सियार **रवः** ध्वनि, शब्द, आवाज **समयः** शर्त, नियम

(स्त्रीलिंग) : गुहा गुफा **सिंहपदपद्धतिः** सिंह के पद-चिह्न **प्रतिध्वनिः** प्रत्यावर्तित ध्वनि **जरा** वृद्धावस्था, बुढ़ापा

(नपुंसकलिंग) : बिलम् बिल, छिद्र **भयम्** भय, डर

सर्वनाम : एतस्याम् इसमें (स्त्रीलिंग) **एतस्मिन्** इसमें (पुल्लिंग) **अस्मिन्** इसमें (पुल्लिंग) **मया** स्वयं से, मेरे द्वारा, मुझसे **त्वया** तुमसे, तुम्हारे द्वारा **माम्** मुझे **एषा** यह (स्त्रीलिंग) **अस्य** इसका **अनेन** इससे, इसके द्वारा, इनसे **अन्ये** दूसरे **इमम्** इसे (पुल्लिंग) **मे** मेरा (यह मम षष्ठी एकवचन का वैकल्पिक रूप है, जो कभी भी वाक्य के आरम्भ में नहीं आता ।)

विशेषण : दूरस्थ दूर स्थित **कृत** किया हुआ **द्वितीय** दूसरा **अनागत** जो आया न हो वह, आने वाला

अव्यय : कस्मिंश्चित् किसी एक में, कोई **किञ्चिदपि** कुछ भी, थोड़ा भी **अत्रैव** यहाँ ही **बाह्यतः** बाहर की तरफ से **यदा** जब **तदा** तब **इत्थम्** इस प्रकार, **सहसा** अचानक **उच्चैः** जोर से

समास : क्षुधार्तः (क्षुधया आर्तः, तृतीया तत्पुरुष) । सूर्यास्तसमये (सूर्यस्य अस्तः सूर्यास्तः । सूर्यास्तस्य समयः सूर्यास्तसमयः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । सिंहपदपद्धतिः (सिंहस्य पदानि सिंहपदानि । सिंहपदानां पद्धतिः सिंहपदपद्धतिः । षष्ठी तत्पुरुष) भयभीताः (भयेन भीताः, तृतीया तत्पुरुष) अनागतम् (न आगतम् अनागतम्, नञ् तत्पु.)

कृदन्तपद : दृष्ट्वा (दृश् + त्वा) । **भूत्वा** (भू + त्वा) । **श्रुत्वा** (श्रु + त्वा) । **प्रविश्य** (प्र + विश् + त्वा > य) ।

क्रियापद : प्रथम गण : (परस्मैपद) **प्रति + वस् (प्रतिवसति)** निवास करना, रहना **स्मृ (स्मरति)** स्मरण करना, याद करना, **प्रति + आ + गम् – गच्छ्** (प्रत्यागच्छति) वापस आना **आ + ह्वे – ह्वय् (आह्वयति)** बुलाना **पठ् (पठति)** पढ़ना, पाठ करना, बाँचना

(आत्मनेपद) **शुभ्** (शोभते) शोभायमान होना

दशमगण : (परस्मैपद) **तर्क्** (तर्कयति) अनुमान करना, कल्पना करना, मानना

विशेष

(1) शब्दार्थ : परिभ्रमन् घूमते हुए, भ्रमण करते हुए, भटकते हुए **क्षुधार्तः** भूखा, भूख से पीड़ित **निगूढो भूत्वा** छिप कर **तर्कयामि** सोचता हूँ, समझता हूँ **किं करवाणि** क्या करूँ ? **दूरस्थः** दूर खड़ा हुआ **आकारयिष्यति** पुकारेगा, बुलाएगा **भोज्यम्** भोजन **आह्वानमकरोत्** आवाहन किया **उच्चगर्जनस्य** जोर से गरजने का **पलायमानः** भागते हुए, दूर जाते हुए **कुरुते** करता है **शोच्यते** शोक का, चिन्ता का पात्र बनता है **संस्थस्य** रहने वाले का, बसते हुए का **न कदापि मे श्रुता** मैंने कभी नहीं सुना

(2) सन्धि : इतस्ततः (इतः ततः) । कोऽपि (कः अपि) । अत्रैव (अत्र एव) । निगूढो भूत्वा (निगूढः भूत्वा) । बहिरागता (बहिः आगता) । विनष्टोऽस्मि (विनष्टः अस्मि) । यन्मया (यत् मया) । कृतोऽस्ति (कृतः अस्ति) । यदाहम् (यदा अहम्) । एतच्छ्रुत्वा (एतत् श्रुत्वा) । अन्येऽपि (अन्ये अपि) । शृगालोऽपि (शृगालः अपि) । करोत्यनागतम् (करोति अनागतम्)। वनेऽत्र (वने अत्र) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कीदृशः सिंहः वने इतः ततः परिभ्रमणम् अकरोत् । ◯

(क) तृषार्तः (ख) क्षुधार्तः (ग) भयार्तः (घ) निगूढः

(2) शृगालस्य नाम किम् आसीत् । ◯

(क) खरनखरः (ख) मदोन्मत्तः (ग) दीर्घपुच्छः (घ) दधिपुच्छः

(3) शृगालस्य गुहायां कः प्रविष्टः । ◯

(क) शृगालः (ख) सिंहः (ग) गजः (घ) शशकः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) सूर्यास्तसमये सिंहः किम् अपश्यत् ?

(2) शृगालः कस्य पदपद्धतिम् अपश्यत् ?

(3) शृगालस्य वचनं श्रुत्वा सिंहः किम् अकरोत् ?

(4) बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता - इति वाक्यं कः वदति ?

3. घटना-क्रमानुसारं वाक्यानि लिखत ।

(1) शृगालः अपि ततः दूरं पलायमानः इमम् अपठत् ।

(2) क्षुधार्तः सिंहः किञ्चिदपि आहारं न अलभत ।

(3) इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानम् अकरोत् ।

(4) भो बिल ! भो बिल ! किं न स्मरसि ।

(5) अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि ।

(6) यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि ।

4. कृदन्तप्रकारं लिखत ।

(1) दृष्ट्वा ..... (2) भूत्वा ..... (3) विचिन्त्य .....

(4) कर्तुम् ..... (5) प्रविश्य .....

5. स्म-प्रयोगेण क्रियापदानि परिवर्तयत ।

(1) अचिन्तयत् (2) अगच्छत् (3) अपठत् (4) अवसत्

6. समासप्रकारं लिखत ।

(1) सूर्यास्तः (2) पदपद्धतिः (3) भयभीताः (4) गर्जनप्रतिध्वनिः

7. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) सायं काल गुफा को देखकर सिंह ने क्या सोचा ?

(2) गुफा के स्वामी सियार ने गुफा के आगे पद-चिह्न देखकर क्या सोचा ?

(3) गुफा से दूर रहकर सियार ने कौन-सी शर्त याद करवाई ?

(4) इस कहानी से क्या बोध मिलता है ?

(5) सियार ने जाते-जाते क्या कहा ?

8. मातृभाषायाम् अनुवादं लिखत ।

(1) अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि ।

(2) नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः इति तर्कयामि ।

(3) यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि ।

(4) एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति ।

(5) अनेन अन्ये अपि पशवः भयभीताः अभवन् ।

(6) बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता ।

9. अव्ययपदानाम् अर्थं लिखत ।

(1) यदा ..... (2) तथा ..... (3) कुत्र .....

(4) इतः ..... (5) सर्वदा .....

प्रवृत्ति

- कोई एक प्राणी-कथा अपने शब्दों में लिखिए ।

19. विनोदपद्यानि

[संस्कृत भाषा की अनेक लाक्षणिकताएँ हैं । जैसेकि, पदान्वय, संधि, समास, शब्दों की अनेकार्थता आदि । इन सभी लाक्षणिकताओं का उपयोग करके संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवियों ने अपनी कविता में अनेक प्रकार के चमत्कार किए हैं । इस तरह इन कवियों ने अपनी रचनाओं से खूब यश प्राप्त किया है । कई कवियों ने तो ऐसे एकाद चमत्कारपूर्ण श्लोक की रचना करके स्वयं को अमर बना दिया है ।

ऐसी रचनाओं के अनेक संग्रह हैं । उन सभी संग्रहों में से यहाँ मात्र दस पद्य लिए गए हैं । जिनमें से प्रथम पाँच प्रहेलिका प्रकार के हैं । शेष पाँच पद्य संस्कृत की लाक्षणिकताओं का आश्रय लेकर भिन्न-भिन्न प्रकार की अनोखी चमत्कृति पैदा करते हैं ।

प्रस्तुत श्लोकों के अध्ययन से काव्यात्मक चमत्कृति का रसास्वाद तो करेंगे ही, साथ ही साथ जगत के कुछ पदार्थों की विशेषताएँ, कुछ ऐतिहासिक विवरण और कुछ नैतिक विषयों का बोध भी प्राप्त करेंगे ।]

कं संजघान कृष्णः का शीतलवाहिनी गङ्गा ।
के दारपोषणरताः कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ॥1॥
तातेन कथितं पुत्र लेखं लिख ममाज्ञया ।
न तेन लिखितो लेखः पितुराज्ञा न लोपिता ॥2॥
सीमन्तिनीषु का शान्ता राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः ।
विद्वद्भिः का सदा वन्द्या चात्रैवोक्तं न बुध्यते ॥3॥

व्रजन्ति पद्मानि कदा विकासम्
प्रिया गते भर्तरि किं करोति ।
रात्रौ च नित्यं विरहातुरा का
सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी ॥4॥

आदौ नकारः परतो नकारः मध्ये नकारेण हतो दकारः ।
एवं नकारत्रयसंयुतस्य का दानशक्तिः खलु नन्दनस्य ॥5॥

एको न विंशतिः स्त्रीणां स्नानार्थं सरयुं गताः ।
विंशतिः पुनरायाताः एको व्याघ्रेण भक्षितः ॥ 6 ॥
तुरोऽहं प्रथमं हित्वा चरोऽस्मि मध्यमं विना ।
आद्यमध्यान्तिमैर्युक्तः को भवामि वदन्तु भोः ॥ 7 ॥
अहं च त्वं च राजेन्द्र लोकनाथावुभावपि ।
बहुव्रीहिरहं राजन् षष्ठीतत्पुरुषो भवान् ॥ 8 ॥

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : लेखः निबंध, लेख **नकारः** वर्णमाला का **'न'** वर्ण **दकारः** वर्णमाला का **'द'** वर्ण **नन्दन** एक व्यक्ति का नाम इसमें आगे और पीछे न अर्थात् न निषेधार्थक) है, बीच में एक द (दान कर, दे, इस अर्थ का वाचक) था । वह भी (नन्दन - इस शब्द में) मध्य में प्रयुक्त न वर्ण के द्वारा मृत प्राय हो चुका है । इसलिए नन्दन के पास दान करने की शक्ति कहाँ होगी ? यही वह रहस्य है । **बहुव्रीहिः** समास का एक प्रकार **षष्ठी तत्पुरुषः** समास का एक प्रकार

(स्त्रीलिंग) : गङ्गा गंगा नदी **सीमन्तिनी** मांग भरी स्त्री, विवाहिता स्त्री **प्रिया** पत्नी, प्रियतमा **चक्रवाकी** चकवी **विंशति** बीस (संख्या) **सरयु** सरयू नदी (जिसके तट पर अयोध्या नगरी है ।)

(नपुंसकलिंग) : शीतम् ठंडक, ठंडी **पद्मम्** कमल

समास : गुणोत्तमः (गुणेषु उत्तमः । सप्तमी तत्पुरुष) । विरहातुरा (विरहेण आतुरा । तृतीया तत्पुरुष) सूर्योदये (सूर्यस्य उदयः सूर्योदयः, तस्मिन् । षष्ठी तत्पुरुष) । दानशक्तिः (दानस्य शक्तिः । षष्ठी तत्पुरुष) आद्यमध्यान्तिमैः (आद्यः च मध्यः च अन्तिमः च आद्यमध्यान्तिमाः, तैः । इतरेतर द्वन्द्व) । राजेन्द्रः (राज्ञाम् इन्द्रः, षष्ठी तत्पुरुष) । लोकनाथौ (बहुव्रीहिपक्षे - लोकाः जनाः नाथाः स्वामिनः यस्य सः - एवंविधः अहम् - निर्धनः, याचकत्वात् । षष्ठीतत्पुरुषपक्षे - लोकानाम् जनानाम् नाथः स्वामी - एवंविधः, त्वम् राजा, पालकत्वात् ।)

क्रियापद : प्रथम गण : (परस्मैपद) व्रज् (व्रजति) जाना, प्राप्त करना

(आत्मनेपद) **बाध् (बाधते)** परेशान करना, पीड़ा पहुँचाना

चतुर्थ गण : (आत्मनेपद) **बुध् (बुध्यते)** जानना, बोध होना

विशेष

(1) शब्दार्थ : कं संजघान किसका संहार किया (अन्य अर्थ में कंस जघान कंस का संहार किया ।) **का शीतलवाहिनी** शीतलता का वहन करने वाली कौन है ? (अन्य अर्थ में काशी नगरी के तल में बहने वाली) केदारपोषणरताः कौन परिवार का पोषण करने में रत है (अन्य अर्थ में) **केदारपोषणरताः** अर्थात् खेत के पोषण में रत **कं बलवन्तम्** किस बलवान को (अन्य अर्थ में कम्बलवन्तम् कम्बल वाले को **न तेन** उसके द्वारा नहीं (अन्य अर्थ में नतेन नम्र बने हुए) **सीमन्तिनीषु का शान्ता** विवाहिता स्त्रियों में कौन शान्त है ? (चरण के आदि एवं अन्त वर्ण को मिलाने से उत्तर स्पष्ट होता है - सीता । इसी प्रकार से शेष चरणों के उत्तर हैं - राम, विद्या) **अत्रैवोक्तम् न बुध्यते** यहाँ ही कहा गया है, फिर भी

ज्ञात नहीं होता ? **गते भर्तरि** पति के परलोक चले जाने पर **रोदिति** रोती है । **नकारत्रयसंयुतस्य नन्दनस्य** तीन नकार-युक्त नन्दन से **एको न विंशतिः स्त्रीणाम्** एक नर तथा बीस नारियाँ (अर्थ में एकोनविंशति स्त्रीणाम् - स्त्रियों में से उन्नीस स्त्रियाँ **तुरोऽहं प्रथमं हित्वा** प्रथम को छोड़कर **तुर** हूँ **चरोऽस्मि मध्यमं विना** मध्यम (बीच वाले) वर्ण के बिना मैं **चर** हूँ **आद्यमध्यान्तिमैर्युक्तः** आदि, मध्य और अन्तिम वर्णों से युक्त **कः भवामि** मैं कौन बनूँगा ? **वदन्तु** कहो **लोकनाथावुभावपि** हम दोनों लोकनाथ हैं ।

(2) सन्धि : चात्रैवोक्तम् (च अत्र एव उक्तम्) । तुरोऽहम् (तुरः अहम्) । को भवामि (कः भवामि) । लोकनाथावुभावपि (लोकनाथौ उभौ अपि) । बहुव्रीहिरहम् (बहुव्रीहिः अहम्) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

(1) कंसं कः जघान ?

(क) कृष्णः (ख) भीमः (ग) बलरामः (घ) उग्रसेनः

(2) केन कथितं पुत्र लेखं लिख इति ?

(क) कृष्णेन (ख) मित्रेण (ग) तातेन (घ) स्वयमेव

(3) राजा कः अभूत् गुणोत्तमः ?

(क) युधिष्ठिरः (ख) रामः (ग) कृष्णः (घ) विभीषणः

(4) व्रजन्ति पद्मानि कदा विकासम् ?

(क) सूर्योदये (ख) प्रातःकाले (ग) प्रभाते (घ) मध्याह्ने

(5) एकः केन भक्षितः ?

(क) सिंहेन (ख) व्याघ्रेण (ग) रोगेण (घ) ध्वनिना

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) पुत्रेण कस्य आज्ञा न लोपिता ?

(2) चक्रवाकी कदा विरहातुरा भवति ?

(3) प्रिया गते भर्तरि किं करोति ?

(4) नकारत्रयसंयुक्तस्य नन्दनस्य का नास्ति ?

(5) विद्वद्भिः का सदा वन्द्या ?

(6) शीतं कं न बाधते ?

3. निम्नलिखितानां पदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) गुणोत्तमः ..... (2) विरहातुरा ..... (3) सूर्योदयः .....

(4) दानशक्तिः ..... (5) लोकनाथः .....

4. प्रदत्तान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि विरचयत ।

(1) किस बलवान को सर्दी परेशान नहीं करती है ?

(किम् बलवत् शीत न बाध् ।)

(2) राजा राम गुणोत्तम हैं ।

(नृप राम गुणोत्तम अस् ।)

(3) कमल कब खिलता है ?

(पद्म कदा विकास व्रज् ?)

(4) आदि में नकार है और पीछे भी नकार है ।

(आदि नकार अस् परतः अपि नकार अस् ।)

(5) पहले को त्याग करके मैं तुर हूँ ।

(प्रथम वि + हा + त्वा > य अस्मद् 'तुर' अस् ।)

5. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) कं संजघान कृष्णः । इस वाक्य के दो अर्थ कौन-कौन से हैं ?

(2) नन्दन के पास दान शक्ति क्यों नहीं है ?

(3) स्नान के लिए वास्तव में कितने लोग गए थे ?

(4) राजा और रंक दोनों लोकनाथ किस प्रकार है ?

6. श्लोकाननुलक्ष्य यथायोग्यं संयोजयत ।

क	ख
(1) एको न विंशतिः स्त्रीणाम्	(1) चात्रैवोक्तं न बुध्यते ।
(2) बहुव्रीहिरहं राजन्	(2) स्नानार्थं सरयुं गता ।
(3) विद्वद्भिः सदा वन्द्या	(3) खलु नन्दनस्य ।
(4) तातेन कथितं पुत्र	(4) पाण्डवाः हर्षमागताः ।
(5) का दानशक्तिः	(5) षष्ठीतत्पुरुषो भवान् ।
	(6) लेखं लिख ममाज्ञया ।

प्रवृत्ति

- अन्य भाषा की पहेलियाँ एकत्रित कीजिए ।
- लोकनाथ शब्द जैसे द्विविध समास प्रयोगों को एकत्र कर, उनके अर्थों की सूची तैयार कीजिए ।
- एक से अधिक अर्थ वाले संस्कृत वाक्यों का संग्रह कीजिए ।

20. संस्कृतभाषायाः वैशिष्ट्यम्

[संस्कृत भाषा की अनेक विशेषताएँ हैं । एक तो यह हमारे भारत की प्राचीनतम भाषा है । साथ ही यह हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रभाषा भी है । यह भारतीय प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति की वाहक है । इसके उपरांत संस्कृत भाषा मात्र भारतीय भाषाओं की ही नहीं, अपितु वह विश्व की अनेक भाषाओं की भी जननी है ।

संस्कृत की ख्याति सर्वत्र है । परन्तु आज वह प्राचीन युग की तरह बोलचाल की भाषा नहीं रही, जिसके कारण उसके प्रति लोगों में आत्मीयता पैदा नहीं होती है । एक भाषा के रूप में संस्कृत की जो खूबियाँ हैं, उसे जनसमाज को जानना आवश्यक है । प्रस्तुत पाठ उस दिशा में प्रवृत्ति का उपक्रम और प्रयत्न है ।

यहाँ संस्कृत की भाषागत विशेषताओं के साथ उसकी अभिव्यक्ति के सामर्थ्य और अभिव्यक्ति के लिए विविध विकल्पों को समझाने का उपक्रम रखा गया है । इस उपक्रम में भाषा और भाव का दबाव बढ़ न जाए, उसका भी ध्यान रखा गया है ।]

वयं जानीमः यत् संस्कृतभाषा सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी वर्तते । अथ च संसारे याः भाषाः सन्ति तासु सा प्राचीनतमा भाषा । अस्याः भाषायाः अनेकविधं वैशिष्ट्यम् अस्ति । अत्र उदाहरणरूपेण किञ्चित् वैशिष्ट्यं प्रदर्शयामः ।

प्रथमं वैशिष्ट्यम् । संसारस्य समस्तेषु पुस्तकालयेषु प्राचीनतमः ग्रन्थः वर्तते ऋग्वेदः । अयमपि संस्कृतभाषायाः एव ग्रन्थः । एवं संसारस्य प्रथमं पुस्तकमपि संस्कृतस्यैव वर्तते न तु कस्याश्चित् अन्यस्याः भाषायाः ।

द्वितीयं वैशिष्ट्यम् । संस्कृतभाषायाः या वर्णमाला अस्ति, तत्र यः वर्णक्रमः निर्धारितः वर्तते, सः वैज्ञानिकः तार्किकः च अस्ति । प्रकृतितः सर्वेभ्यः मानवेभ्यः यत् उच्चारणतन्त्रं प्राप्तम् अस्ति, तस्य अनुसरणं कृत्वा अत्र वर्णमालायां वर्णानां क्रमः निर्धारितो वर्तते । उच्चारणतन्त्रस्य अनुसारम् अकारस्य उच्चारणम् प्रथमं भवति । अतः वर्णमालायाम् अकारः प्रथमः वर्तते । एवमेव व्यञ्जनवर्णेषु ककारस्य क्रमः पूर्वं चकारस्य च क्रमः पश्चात् वर्तते तस्यापि कारणमिदमेव । अन्यासु भाषासु याः वर्णमालाः सन्ति, तत्र एतादृशः तार्किकः वैज्ञानिकश्च क्रमः न मिलति ।

तृतीयं वैशिष्ट्यम् । आचार्येण पाणिनिना विरचितम् अष्टाध्यायीनाम्ना प्रसिद्धं संस्कृतव्याकरणं मानवमस्तिष्कस्य सर्वोत्तमा कृतिः वर्तते । एतादृशं व्याकरणम् अन्यत्र न उपलभ्यते ।

चतुर्थं वैशिष्ट्यम् । संस्कृतभाषायां महाभारतनाम्ना प्रसिद्धः एकः ग्रन्थः वर्तते । सः लक्षश्लोक-परिमितः । एतादृशः विशालकायः ग्रन्थः निखिलेऽपि संसारे नास्ति । इदमपि संस्कृतस्य अपरं वैशिष्ट्यम् ।

पञ्चमं वैशिष्ट्यम् । रामायणम् नाम सुप्रसिद्धम् आदिकाव्यम् अस्ति । पुरातने भारते अयं ग्रन्थः अनेकासु लिपिषु लिखितः । सम्प्रति सः नेवारी, मैथिली, बंगाली, देवनागरी, तेलगु, ग्रन्थ, मलयालम, शारदा इत्यादिषु लिपिषु लिखितः मिलति ।

संस्कृतभाषायाः एतादृशाः बहवो ग्रन्थाः सन्ति ये प्राचीनकाले अनेकासु लिपिषु लिखिताः । एतादृशः उपक्रमः अपि संस्कृतस्यैव वैशिष्ट्यम् वर्तते ।

षष्ठं वैशिष्ट्यम् । संस्कृतभाषायाः पञ्चतन्त्रनामकः ग्रन्थः प्रायः विश्वस्य सर्वासु भाषासु अनूदितः वर्तते । एतादृशं सौभाग्यम् अन्यस्याः कस्याश्चित् भाषायाः ग्रन्थेन अद्यावधि न प्राप्तम् ।

सप्तमं वैशिष्ट्यम् । संस्कृतसाहित्ये दशकुमारचरितनाम्ना प्रसिद्धम् कथापुस्तकम् वर्तते । तस्य सप्तमे उच्छ्वासे एकं पात्रं प-वर्गप्रयोगरहितानि वाक्यानि वदति । वर्णमालायाः अमुकान् वर्णान् विहाय संवादकरणं संस्कृते एव संभवति, नान्यत्र ।

अष्टमं वैशिष्ट्यम् । एकस्य वर्णस्य प्रयोगेण काव्यकरणम् संस्कृते एव संभवति । महाकविना माघेन विरचिते शिशुपालवधमहाकाव्ये दकारस्य नकारस्य च एकमात्रस्य वर्णस्य प्रयोगेण निर्मितानि पद्यानि अस्य प्रमाणानि सन्ति ।

एवम् संस्कृतस्य अनेकानि वैशिष्ट्यानि सन्ति ।

टिप्पणी

संज्ञा (पुल्लिंग) : अकारः अ अक्षर, वर्णमाला का प्रथम स्वर-अक्षर **ककारः क** अक्षर व्यंजनों में प्रथम वर्ण

(स्त्रीलिंग) : प्रकृतिः प्रकृति

(नपुंसकलिंग) : वैशिष्ट्यम् विशेषता, खासियत **मस्तिष्कम्** मस्तक, दिमाग

विशेषण : प्राचीनतम सबसे प्राचीन, अत्यन्त पुराना **तादृश** वैसा **एतादृश** ऐसा **एकाधिक** एक से अधिक

अव्यय : प्रायः अधिकांश, अधिकांश रूप से **अद्य** आज

समास : पुस्तकालयः (पुस्तकानाम् आलयः पुस्तकालयः । षष्ठी तत्पुरुष) । कथापुस्तकम् (कथानाम् पुस्तकम् कथापुस्तकम् । षष्ठी तत्पुरुष) । वर्णमाला (वर्णानां माला वर्णमाला । षष्ठी तत्पुरुष) । मानवमस्तिष्कम् (मानवस्य मस्तिष्कम् मानवमस्तिष्कम् । षष्ठी तत्पुरुष) । शिशुपालवधः (शिशुपालस्य वधः शिशुपालवधः । षष्ठी तत्पुरुष) ।

क्रियापद : छठा गण : (परस्मैपद) **मिल् (मिलति)** मिलता है ।

विशेष

(1) शब्दार्थ : सर्वासाम् सबका (स्त्री.) **उपलभ्यन्ते** प्राप्त होता है । **अनुदितः** अनुवाद किया हुआ **प-प्रयोगरहितानि** प-वर्ग (अर्थात् प, फ, ब, भ और म वर्ण) जिसमें न हो ऐसे शब्द वाले वाक्यों का प्रयोग **विहाय** छोड़कर **प्रकृतितः** प्रकृति से

(2) सन्धि : संस्कृतस्यैव (संस्कृतस्य एव) । निर्धारितो वर्तते (निर्धारितः वर्तते) । कारणमिदमेव (कारणम् इदम् एव) । वैज्ञानिकश्च (वैज्ञानिकः च) निखिलेऽपि (निखिले अपि) । बहवो ग्रन्थाः (बहवः ग्रन्थाः) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) संस्कृतभाषायां लक्षश्लोकपरिमितः ग्रन्थः कः ?

(क) महाभारतम् (ख) रामायणम् (ग) दशकुमारचरितम् (घ) विष्णुपुराणम्

(2) संसारस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः ..... वर्तते ?

(क) रामायणम् (ख) भागवतपुराणम् (ग) ऋग्वेदः (घ) यजुर्वेदः

(3) मुखतः उच्चारणकाले कस्य स्वर-वर्णस्य प्रादुर्भावः प्रथमं भवति ?

(क) एकारस्य (ख) उकारस्य (ग) ईकारस्य (घ) अकारस्य

(4) संस्कृतस्य वर्णमालायां वर्णानां क्रमः कस्य आधारेण निर्धारितः अस्ति ?

(क) व्यञ्जनस्य (ख) स्वरस्य (ग) उच्चारणतन्त्रस्य (घ) वर्णस्य

(5) दशकुमारचरितस्य कतमे उच्छ्वासे प-वर्गप्रयोगरहितानि वाक्यानि सन्ति ?

(क) सप्तमे (ख) पञ्चमे (ग) द्वितीये (घ) अष्टमे

(6) पाणिनिना रचितस्य व्याकरणस्य किं नाम ?

(क) पञ्चाक्षरी (ख) शताध्यायी (ग) अष्टाध्यायी (घ) अष्टाङ्गी

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत ।

(1) संस्कृतभाषायाः कः ग्रन्थः सर्वासु भाषासु अनूदितः वर्तते ?

(2) व्यञ्जनवर्णेषु कस्य क्रमः प्रथमः वर्तते ?

(3) माघेन रचितस्य काव्यस्य नाम किं वर्तते ?

(4) ऋग्वेदः कीदृशः ग्रन्थः वर्तते ?

(5) महाभारते कति श्लोकाः सन्ति ?

3. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(किम्, कस्मिन्, कः, कासाम्)

(1) संस्कृतस्य वैशिष्ट्यं प्रदर्शयामः ।

(2) ऋग्वेदः प्राचीनतमः ग्रन्थः वर्तते ।

(3) संस्कृतभाषा भारतीयभाषाणां जननी ।

(4) पञ्चतन्त्रनामकः ग्रन्थः सर्वासु भाषासु अनूदितः वर्तते ।

4. शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	ग्रन्थेन	.....	.....
(2)	.....	.....	वाक्यानि
(3)	.....	.....	सप्तमेषु
(4)	आचार्यः	.....	.....
(5)	.....	.....	भाषासु

5. प्रदत्तान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) संस्कृत भाषा में अनेक ग्रन्थ हैं ।

संस्कृतभाषा अनेक ग्रन्थ वृत् ।

(2) विश्व की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद है ।

संसार प्रथम पुस्तक ऋग्वेद अस् ।

(3) रामायण प्रसिद्ध आदिकाव्य है ।

रामायण प्रसिद्ध आदिकाव्य वृत् ।

(4) यह भी संस्कृत की विशेषता है ।

इदम् अपि संस्कृत वैशिष्ट्य वृत् ।

6. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) संस्कृत भाषा की कोई भी दो विशेषताएँ बताइए ।

(2) संस्कृत वर्णमाला की विशेषता बताइए ।

(3) दशकुमारचरितम् की विशेषता बताइए ।

प्रवृत्ति

- संस्कृत भाषा के ध्येय-वाक्यों का संग्रह कीजिए ।
- संस्कृत भाषा की पत्रिकाओं की सूची बनाइए ।

अभ्यास 1 : पुनरावर्तनम्

कर्तृ कारक और वर्तमान काल के क्रियापदों का पुनरावर्तन

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए -

(1) सः छात्रः वेदं पठति ।

(2) हे बालक, त्वं वेदं पठसि ।

(3) अहम् प्रातः वेदं पठामि ।

हम कक्षा आठ में इस प्रकार के क्रियापदों वाली रचनाओं के विषय में पढ़ चुके हैं । अतः आगे पढ़ें इससे पूर्व थोड़ा पुनरावर्तन कर लेते हैं ।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में 'पठ्' धातु (क्रिया शब्द) प्रयुक्त हुआ है । परन्तु धातु के जिन रूपों का प्रयोग किया गया है, वे एक दूसरे से अलग हैं । जैसे - प्रथम वाक्य में पठति है, द्वितीय वाक्य में पठसि है और तृतीय वाक्य में पठामि है । ये एक दूसरे से अलग क्यों है और कैसे है, यह जानना अत्यन्त आवश्यक है । उपर्युक्त वाक्यों को ध्यान से देखा जाए तो पता चलता है -

(1) जहाँ सः है, वहाँ पठति रूप का प्रयोग किया गया है ।

(2) जहाँ त्वम् है, वहाँ पठसि रूप का प्रयोग किया गया है, जबकि

(3) जहाँ अहम् है, वहाँ पठामि रूप का प्रयोग किया गया है ।

यहाँ प्रयुक्त सः, तद् का, त्वम् ये युष्मद् का, तथा अहम् ये अस्मद् प्रथमा एकवचन का रूप है । प्रथमा विभक्ति के द्विवचन और बहुवचन के रूपों में इस प्रकार की भिन्नता दिखाई देती है । जिसे नीचे दिये गए कोष्ठक के आधार पर जाना जा सकता है ।

वर्तमानकाल (लट्लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष)	अहम् पठामि	आवाम् पठावः	वयम् पठामः
मध्यम पुरुष (द्वितीय पुरुष)	त्वम् पठसि	युवाम् पठथः	यूयम् पठथ
अन्य पुरुष (तृतीय पुरुष)	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति

हमें यह स्मरण रखना है कि वाक्य में जब त्वम्, युवाम्, यूयम् (युष्मद् - प्रथमा) आये, तब क्रमशः पठसि, पठथः, पठथ और जब अहम्, आवाम्, वयम् (अस्मद् - प्रथमा) आए, तब क्रमशः पठामि, पठावः, पठामः जैसे क्रियापदों का प्रयोग किया जाता है । परन्तु इनके अतिरिक्त किसी भी संज्ञा का प्रयोग वाक्य में किया गया हो, तो वहाँ वचन के अनुसार क्रमशः पठति, पठतः, पठन्ति क्रिया रूपों का प्रयोग किया जाएगा । (अधिकांशतः संस्कृत भाषा के वाक्यों में सः इत्यादि पदों का संदर्भ तो होता है, परन्तु प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं होता । यथा - रामायणं पठामि । यहाँ अहम् (अस्मद् का) पद का प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं किया गया है । परन्तु रूप के आधार पर इस वाक्य में अहम् पद् का अर्थ लिया गया है । इसी तरह अन्य स्थानों पर भी समझ लेना चाहिए ।)

इस बार हम वर्तमानकाल के अतिरिक्त भूतकाल और भविष्यकाल के (परस्मैपदी और आत्मनेपदी दोनों की) क्रियापदों के विषय में सीखने वाले है । इन सभी क्रियापदों में इसी प्रकार की भिन्नता दिखाई देती है । अतः प्रत्येक वाक्य की रचना करते समय इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए । (भूतकाल और भविष्यकाल के रूपों को सीखते समय इस प्रकार के रूप भिन्नता का कोष्ठक आगे दिया गया है ।)

स्वाध्याय

1. समुचितेन क्रियापदेन रिक्तानां स्थानानां पूर्तिः करणीया ।

(1) देवगणाः मेधाम् ..... । (यच्छति, यच्छतः, यच्छन्ति)

(2) वयम् अग्निम् ..... । (पूजयामि, पूजयामः, पूजयति)

(3) अधीशः पाठशालाम् ..... । (गच्छति, गच्छामि, गच्छसि)

(4) हे छात्राः, यूयम् मन्त्रान् ..... । (लिखति, लिखथ, लिखथः)

(5) सामगाः ..... । (गायति, गायसि, गायन्ति)

2. सूचनानुसारं शब्दरूपं चिनुत ।

(1) हस्, अन्य-पुरुष-द्विवचनम् । (हसति, हसामः, हसतः)

(2) चल्, मध्यम-पुरुष-बहुवचनम् । (चलामि, चलथ, चलथः)

(3) खेल्, उत्तम-पुरुष-बहुवचनम् । (खेलति, खेलामः, खेलथ)

(4) खाद्, अन्य-पुरुष-बहुवचनम् । (खादसि, खादथ, खादन्ति)

(5) पा-पिब्, उत्तम-पुरुष-एकवचनम् । (पिबामि, पिबसि, पिबति)

(6) गम्-गच्छ्, मध्यम-पुरुष-द्विवचनम् । (गच्छन्ति, गच्छतः, गच्छथः)

3. योग्यं शब्दरूपं चिनुत ।

(1) ..... पश्यामि । (अहम्, वयम्, त्वम्)

(2) ..... तिष्ठावः । (तौ, आवाम्, वयम्)

(3) अहं गृहम् ..... । (गच्छति, गच्छतः, गच्छामि)

(4) ..... नश्यति । (सः, त्वम्, अहम्)

(5) वयम् ..... । (कथयन्ति, कथयामः, कथयामि)

4. मातृभाषायाम् अनुवदत ।

(1) भक्ताः स्तोत्रं पठन्ति ।

(2) छात्रा पत्रं लिखति ।

(3) अहं गृहं गच्छामि ।

(4) वयम् ईश्वरं नमामः ।

(5) सिंहः वने वसति ।

5. संस्कृतभाषायाम् अनुवदत ।

(1) अधीश पढ़ता है ।

(2) मृग घास खाता है ।

(3) त्रिशा पशु को देखती है ।

(4) तुम क्या खा रहे हो ?

(5) हम विद्यालय जा रहे हैं ।

विशेष : क्रियापद के साथ उनके कर्ता के साथ (पुरुष तथा वचन के संदर्भ में) जोड़ना सिखाइए । इसी तरह कर्तृपद को उचित क्रियापद के रूपों के साथ जोड़ना सिखाइए ।

अभ्यास 2 : कारक-विभक्ति परिचयः

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) त्वं यानेन गृहं गच्छसि ।

(2) शिक्षकात् छात्राः वेदस्य मन्त्रं पठन्ति ।

(3) छात्रः प्रद्धनस्य उत्तराणि लेखिन्या सञ्चिकायां लिखति ।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः चार, पाँच और छः पद हैं । इन सभी पदों को दो भागों में बाँटा जा सकता है - (1) कारक पद और (2) क्रियापद । प्रथम वाक्य में त्वम्, यानेन और गृहम् ये तीनों पद कारक पद हैं, जबकि 'गच्छसि' ये एकमात्र क्रियापद है । इसी तरह अन्य दोनों वाक्यों में भी 'पठन्ति' और लिखति ये दोनों क्रियापद हैं । बाकी अन्य कारक पद हैं । कारकपदों को संज्ञापद भी कहा जाता है ।

कारक शब्द का अर्थ है-करने वाला । (ऐसी वस्तु जिसका क्रिया को पूरी करने में काम पड़े ।) क्रिया को जन्म देने वाले पदार्थ-वस्तुओं को कारक कहा जाता है । इस प्रकार के कारकों की संख्या छः है । जैसे - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण । ये सभी कारक क्रिया के उत्पन्न होने में अधिकतर सहायक सिद्ध होते हैं । निम्नवत् चित्र के आधार पर इस बात को सहजता से समझा जा सकता है ।

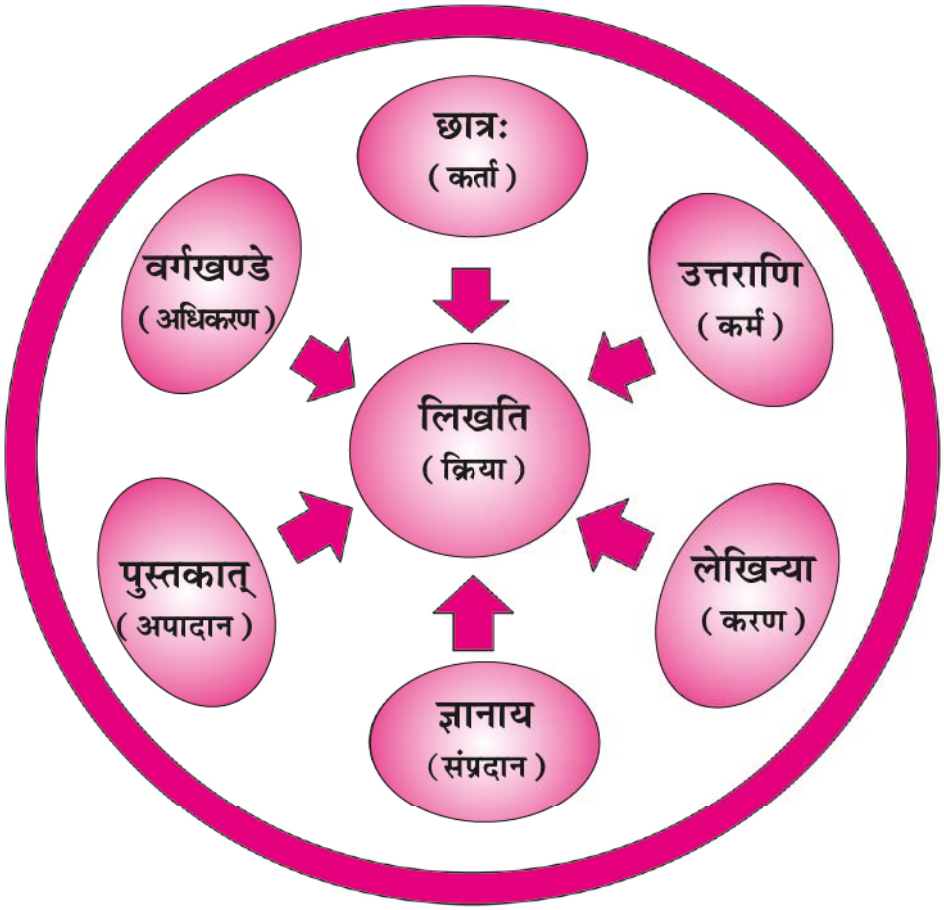

उपर्युक्त चित्र में 'लिख्' (लिखना) क्रियापद के भिन्न-भिन्न छः कारकों का एक साथ प्रयोग किया गया है । इन छः कारकों से सम्बन्धित पद वाक्य में कभी-कभी प्रयुक्त होते हैं । जैसे - छात्रः इस कर्ता के साथ 'गुरुकुलस्य' सम्बन्ध वाचक पद भी आ सकता है । इस प्रकार 'उत्तराणि' कर्म के साथ प्रश्नस्य लेखिन्या करण के साथ काष्ठस्य जैसे सम्बन्ध सूचक पद का प्रयोग भी किया जा सकता है । इस प्रकार अन्य कारकों के संदर्भ भी समझने चाहिए । नीचे के चित्र के आधार पर इस बात को सहजता से समझा जा सकता है ।

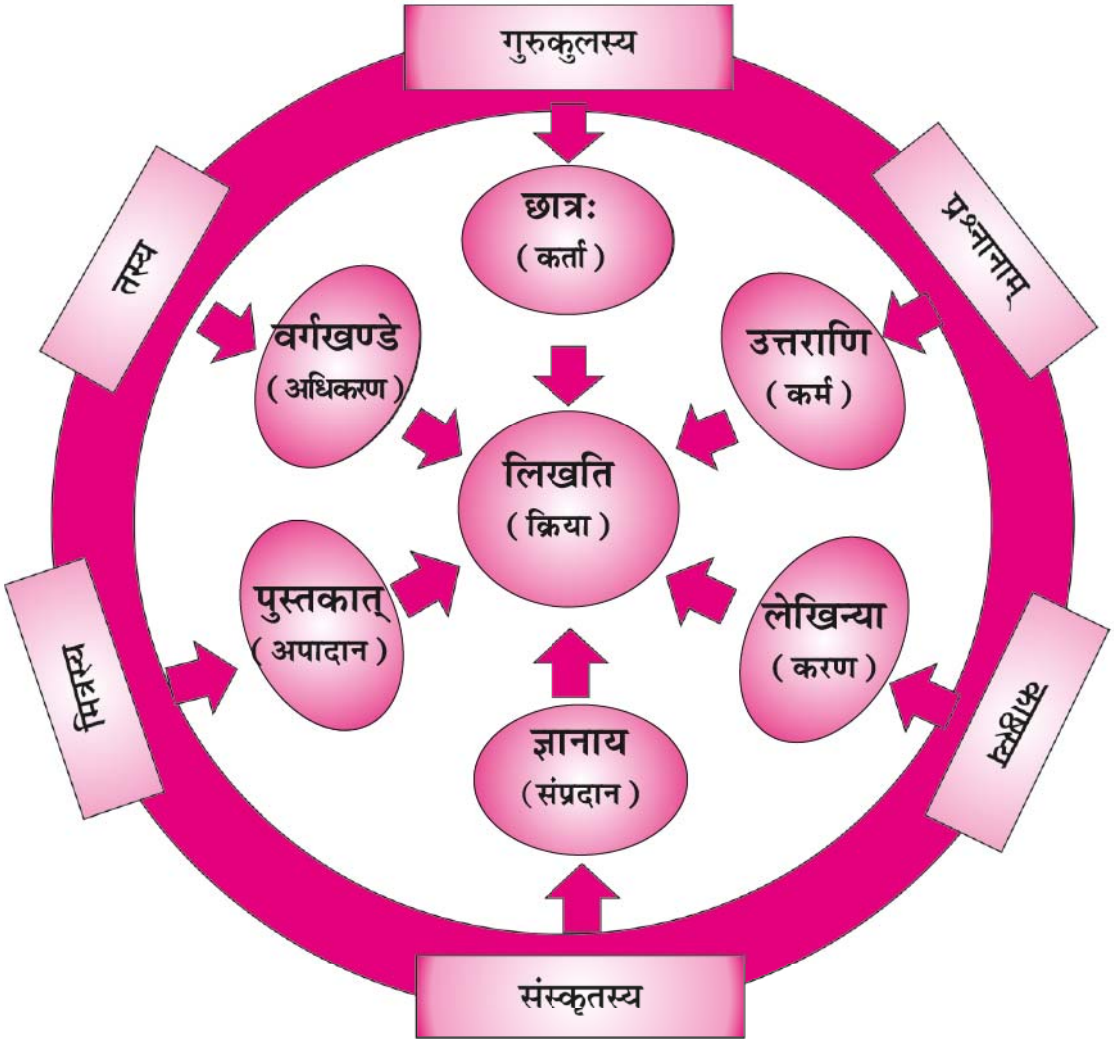

अतः संस्कृत भाषा में सरल से सरल वाक्य की रचना इस प्रकार हो सकती है । उपर्युक्त सभी पदों को योग्य क्रम में लिखेंगे । तो वाक्य इस प्रकार बनेगा । गुरुकुलस्य छात्रः काष्ठस्य लेखिन्या संस्कृतस्य ज्ञानाय मित्रस्य पुस्तकात् तस्य वर्गखण्डे प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखति । (गुरुकुल का छात्र लकड़ी की लेखिनी से संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए मित्र के पुस्तक में से अपनी कक्षा में प्रश्नों के उत्तर लिख रहा है ।) सम्पूर्ण वाक्य में भिन्न-भिन्न छः कारक और उन सभी (कारकों) के साथ एक-एक सम्बन्ध वाचक पद का उपयोग किया गया है ।

तदुपरान्त वाक्य में सम्बोधन पदों का भी प्रयोग किया होता है । जैसे – हे गुरो ! गुरुकुलस्य छात्रः .... उत्तराणि लिखति । (किसी व्यक्ति को अपनी ओर अभिमुख करने के लिए जिस पद का उपयोग किया जाता है, उसे सम्बोधन पद कहा जाता है । सम्बोधन पद के रूप प्रथमा विभक्ति के रूपों के अनुरूप होते हैं । मात्र एक वचन का रुप थोड़ा भिन्न होता है ।)

यहाँ आप देख सकते हैं उपर्युक्त वाक्य में कर्ता इत्यादि कारक से कहने के लिए मूल संज्ञा पद के साथ (हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होता है ठीक उसी तरह संस्कृत भाषा में भी) कुछ अन्य ध्वनियों का भी प्रयोग किया गया है । यथा: छात्रः (छात्र + :) उत्तराणि (उत्तर + आणि) इत्यादि । ये जो अतिरिक्त ध्वनियों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विभक्ति के नाम से जाना जाता है । इन विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग अलग-अलग कारकों का अर्थ बताने के लिए किया जाता है । (हिन्दी भाषा में जिस कारक का अर्थ बताने के लिए जिस विभक्ति प्रत्ययों का उपयोग किया जाता है, उसकी समझ निम्नवत कोष्ठक के आधार पर प्राप्त कीजिए । इस कोष्ठक के आधार पर संस्कृत भाषा के कारकों तथा विभक्ति प्रत्ययों को समझा जा सकता है ।

विभक्ति, कारक और उसके लिए हिन्दी भाषा में उपयोग किए जाने वाले प्रत्यय

विभक्ति	कारक	हिन्दी भाषा में उपयोग किये जाने वाले प्रत्यय
प्रथमा	कर्ता	० (शून्य)/ने
द्वितीया	कर्म	० (शून्य)/को
तृतीया	करण	से
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होने का संदर्भ)
षष्ठी	संबंध	का, की, के
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, हो, अरे

एक ही वस्तु किसी एक क्रिया के लिए अथवा विभिन्न क्रियाओं के अनुसंधान में अलग-अलग कारक के रूप में काम कर सकते हैं । जैसे नाम (संज्ञा) अलग-अलग क्रिया के अनुसंधान में कहीं कर्ताकारक तो कहीं कर्म कारक के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है । यथा -

(1) पुस्तकम् अस्ति ।

(2) छात्रः पुस्तकम् पठति ।

(3) पुस्तकेन ज्ञानं भवति ।

(4) पुस्तकाय स्थानम् अस्ति ।

(5) पुस्तकात् श्लोकम् लिखति ।

(6) पुस्तकस्य नाम रामायणम् अस्ति ।

(7) पुस्तके अष्टौ अध्यायाः सन्ति ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पुस्तक' संज्ञापद का प्रयोग भिन्न-भिन्न संदर्भ में किया गया है । अतः इस प्रकार के विविध रूप सहजता से ध्यान में रहें इसलिए संस्कृत में निम्नलिखित रूपावली प्रचलित है ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा विभक्तिः	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया विभक्तिः	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया विभक्तिः	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी विभक्तिः	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पञ्चमी विभक्तिः	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी विभक्तिः	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी विभक्तिः	देवे	देवयोः	देवेषु

इस प्रकार प्रत्येक संज्ञा पद की सात विभक्तियाँ और तीन वचन कुल मिलाकर 21 रूप बनते हैं । परन्तु

(1) बालिका हस्तेन श्लोकं लिखति ।

(2) पाचकः अग्निना ओदनं पचति ।

(3) देवगणः मेधया मेधाविनं करोति ।

उपर्युक्त वाक्यों में कर्ताकारक प्रथमा विभक्ति में, करण कारक तृतीया विभक्ति में और कर्मकारक द्वितीया विभक्ति में समान रूप से प्रयुक्त किये गए हैं । अत: यहाँ कारक और विभक्ति समान है, फिर भी प्रत्येक संज्ञा पद के रूपों में थोड़ा अन्तर दिखाई देता है । जैसे बालिका, पाचक:, देवगण: । ये तीनों रूप प्रथमा एकवचन के हैं । ध्यान से देखने पर पता चलता है कि 'बालिका' संज्ञा पद के पीछे विसर्ग (:) नहीं लगया गया है जबकि पाचक और देवगण इन दोनों संज्ञाओं के पीछे विसर्ग (:) का प्रयोग किया गया है । इसी प्रकार हस्तेन, अग्निना, मेघया ये तीनों तृतीया एक वचन के रूप हैं परन्तु हस्त संज्ञा के साथ एन, अग्नि संज्ञा के साथ ना तथा मेघा संज्ञा के साथ या ध्वनि जुड़ी हुई है । ये ध्वनियाँ वास्तव में विभक्ति प्रत्यय हैं । किस संज्ञा पद के साथ किस प्रकार के विभक्ति प्रत्यय जुड़ते हैं, उनका भी अभ्यास किया जाएगा । इस प्रकार के अभ्यास के लिए नीचे दिये गए कुछ बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए । जैसे :

(1) प्रत्येक संज्ञा पद के अन्तिम वर्ण के आधार पर ही उस संज्ञा को पहचाना जाता है । उदाहरण: वेद (व् ए द् अ) इस संज्ञा पद के अन्त में 'अ' आता है अत: इसे 'सुकारान्त', अग्नि संज्ञापद के अन्त में 'इ' आता है अत: इसे 'इकारान्त', गुरु संज्ञा पद के अन्त में 'उ' आता है अत: इसे उकारान्त संज्ञापद कहा जाता है । इस प्रकार अन्य संज्ञाओं के अन्त में आने वाले वर्ण के आधार इन्हें पहचाना जाता है ।

(2) उपर्युक्त अनुसार संज्ञा पद की पहचान करने के पश्चात् ये संज्ञापद पुल्लिंग हैं, स्त्रीलिंग हैं या नपुंसकलिंग है ये जानना जरूरी है । जैसे: 'अग्नि' संज्ञापद इकारान्त है और पुल्लिंग है । अत: अग्नि संज्ञापद को इकारान्त पुल्लिंग रूप में जाना जाएगा ।

इस प्रकार पद के अन्त में आने वाले वर्ण और लिंग की पहचान हो जाने के पश्चात् उनके आधार पर संज्ञा पदों के साथ जुड़ने वाली सातों विभक्तियों के विविध रूपों को सरलता से जाना जा सकता है । इन विभक्तियों के विविध रूप सरलता से याद रहे इस लिए संस्कृत भाषा में नीचे दी गई रूपावली प्रचलित हुई । इस रूपावली के आधार पर कौन सी विभक्ति में किस संज्ञा पद का क्या रूप बनेगा, ये सरलता से समझा और याद रखा जा सकता है । नीचे दिये गए कोष्ठक को देखिए :

(पाठ्यक्रम में आपको अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त पुं., आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त स्त्री. तथा आकारान्त, नपुं. इतने रूपों को सीखना है । अत: यहाँ नीचे कुछ रूप दिये जा रहे हैं ।)

(1) जन - (अकारान्त-पुल्लिङ्गशब्द)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा विभक्ति	जन: व्यक्ति	जनौ दो व्यक्ति	जना: बहुत से व्यक्ति
द्वितीया विभक्ति	जनम् व्यक्ति को	जनौ दो व्यक्ति को	जनान् (बहुत सारे) व्यक्तियों को
तृतीया विभक्ति	जनेन व्यक्ति से	जनाभ्याम् दो व्यक्तियों से	जनै: (बहुत सारे) व्यक्तियों से
चतुर्थी विभक्ति	जनाय व्यक्ति के लिए	जनाभ्याम् दो व्यक्तियों के लिए	जनेभ्य: (बहुत सारे) व्यक्तियों के लिए
पंचमी विभक्ति	जनात् व्यक्ति से	जनाभ्याम् दो व्यक्तियों से	जनेभ्य: (बहुत सारे) व्यक्तियों से
षष्ठी विभक्ति	जनस्य व्यक्ति का, के, की	जनयो: दो व्यक्तियों का, के, की	जनानाम् (बहुत सारे) व्यक्तियों का, के की
सप्तमी विभक्ति	जने व्यक्ति में, पर	जनयो: दो व्यक्तियों में	जनेषु (बहुत सारे) व्यक्तियों में
सम्बोधन	हे जन हे व्यक्ति !	हे जनौ हे दो व्यक्तियो !	हे जना: हो (बहुत सारे) व्यक्तियो !

(2) मुनि - (इकारान्त-पुल्लिङ्गशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुनयोः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुनयोः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः

इस प्रकार निधि (कोष), पदाति (पदयात्रा), हरि (विष्णु) (नृपति) राजा इत्यादि संज्ञा पदों के रूप इस प्रकार ही चलेंगे ।

(3) भानु - (उकारान्त-पुंल्लिङ्गशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

अतः गुरु (शिक्षक) साधु (सज्जन, भला) पशु (पशु) वायु (हवा) बन्धु (भाई) इत्यादि संज्ञाओं के रूप इस प्रकार ही चलेंगे ।

(4) लता - (आकारान्त-स्त्रीलिंगशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लताः

अतः मक्षिका (मक्खी), विक्रया (विकार), साधिका (कार्य सिद्ध करने वाली), मनोदशा (मन की दशा) मुद्रिका (अंगूठी) इत्यादि संज्ञाओं के रूप इस प्रकार ही चलेंगे ।

(5) भूमि - (इकारान्त-स्त्रीलिंगशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूमिः	भूमी	भूमयः
द्वितीया	भूमिम्	भूमी	भूमीः
तृतीया	भूम्या	भूमिभ्याम्	भूमिभिः
चतुर्थी	भूम्यै, भूमये	भूमिभ्याम्	भूमिभ्यः
पंचमी	भूम्याः, भूमेः	भूमिभ्याम्	भूमिभ्यः
षष्ठी	भूम्याः, भूमेः	भूम्योः	भूमीनाम्
सप्तमी	भूम्याम्, भूमौ	भूम्योः	भूमिषु
सम्बोधन	हे भूमे	हे भूमी	हे भूमयः

अतः वृष्टि (बरसात), संहति (संगठन), हानि (नुक्सान) इत्यादि संज्ञाओं के रूप इस प्रकार ही चलेंगे ।

(6) नदी - (ईकारान्त स्त्रीलिंगशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

तदनुसार शताब्दी (सौ वर्ष, सदी), तादृशी (समान), अङ्गुली (अंगुली) इत्यादि संज्ञा पदों के रूप भी चलेंगे ।

(7) धेनु - (उकारान्त स्त्रीलिंगशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

इसी तरह तनु (शरीर), रज्जु (रस्सी), रेणु (धूल) इत्यादि के रूप चलेंगे ।

(8) फल - (अकारान्त नपुंसकलिंगशब्दः)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

उपर्युक्त रूपों का आश्रय लेकर हिन्दी भाषा में दिए गए कुछ वाक्यों का संस्कृत भाषा में अनुवाद करने का प्रयास करेंगे ।

वाक्य में दिए गए अंक उन विभक्तियों को सूचित करते हैं । तदनुसार विभक्तियों का उपयोग करते हुए अनुवाद कीजिए ।

(1) बालक (1) दूध (2) पीता है ।

(2) कुंभार (1) हाथ से (3) काम (2) करता है, मशीन से (3) नहीं ।

(3) दीपावली के (6) दिन (7) बड़ा भाई (1) छोटे भाई को (4) भेंट (2) देता है ।

(4) मनुष्य (1) आँखों से (3) देखता है और पैर से (3) चलता है ।

(5) घर में (7) मैं (1) और मेरे (6) माता-पिता (2) रहते हैं ।

(6) आम के (6) वृक्ष ऊपर (7) आम (1) आते हैं ।

(7) आकाश से (5) पानी (1) बरसता है और पृथ्वी में (7) उतरता है ।

(8) कालिदास (1) उपमा अलंकार के (6) कवि (1) हैं ।

(9) पाणिनि व्याकरण के (6) सूत्र (1) भाषा के (6) नियम (2) सूचित करते हैं ।

(10) तिल में (7) तेल (1) दूध में (7) मक्खन (1) तथा संसार में (7) ईश्वर (1) होते हैं ।

सर्वनाम

वाक्य में कभी संज्ञापद के स्थान पर सर्वनाम पद का उपयोग किया जाता है । संस्कृत भाषा में इस प्रकार के सर्वनाम पदों की संख्या बहुत है परन्तु उनमें से सुनिश्चित किए गए मात्र निम्नलिखित सर्वनाम पदों और उनके रूपों का परिचय प्राप्त करेंगे :

अस्मद् (मैं)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

ये दोनों सर्वनाम-पदों के रूप तीनों लिंगों में समान रहते हैं । सर्वनाम पदों में सम्बोधन नहीं होता है ।

तद् (वह) पुल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (वह) स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (वह) नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

इस प्रकार यद् (जो), एतद् (यह), किम् (कौन या क्या) के रूप तीनों लिंगों में अलग-अलग चलते हैं ।

स्वाध्याय

1. समुचितेन रूपेण रिक्तस्थानानां पूर्तिः विधेया ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	.....	.....	देवाः
(2)	शालया	.....	.....
(3)	.....	.....	वृक्षेषु
(4)	कवेः	.....	.....
(5)	.....	.....	शक्तीनाम्
(6)	जनन्यै	.....	.....
(7)	.....	.....	भानून्
(8)	अग्निम्	.....	.....
(9)	.....	हे देव्यौ	.....

2. निर्देशानुसारं शब्दरूपाणि चिनुत ।

(1) तृतीया–एकवचनम् ।

(क) ज्ञानेन (ख) ज्ञाने (ग) ज्ञानाभ्याम् (घ) ज्ञानात्

(2) सप्तमी–द्विवचनम् ।

(क) हस्तानाम् (ख) हस्तौ (ग) हस्तयोः (घ) हस्तेन

(3) षष्ठी–द्विवचनम् ।

(क) देव्योः (ख) देव्यौ (ग) देवीभ्याम् (घ) देवीः

(4) प्रथमा–बहुवचनम् ।

(क) भक्ती (ख) नद्याः (ग) शक्तयः (घ) वनैः

(5) द्वितीया–द्विवचनम् ।

(क) भानौ (ख) मुनी (ग) भूमौ (घ) नदी

3. अधोलिखितानां पदानां विभक्तिः वचनं च लिखत ।

(1) उद्यमेन (2) देवान् (3) संसारे (4) छात्राणाम्

(5) हिमालयात् (6) देशेषु (7) छायायाम् (8) ऋषिभिः

(9) पङ्क्तौ (10) मालया

4. अर्थम् आधृत्य कोष्ठकात् योग्यं शब्दरूपं चिनुत ।

(1) विश्व में

(क) विश्वात् (ख) विश्वेन (ग) विश्वे (घ) विश्वम्

(2) वचन के द्वारा

(क) उक्तिभ्यः (ख) उक्तिः (ग) उक्त्या (घ) उक्तिभिः

(3) दो खेतों में से

(क) क्षेत्रात् (ख) क्षेत्रेण (ग) क्षेत्राभ्याम् (घ) क्षेत्रस्य

(4) राज्यों का (प्रदेश का)

(क) राज्यस्य (ख) राज्यानाम् (ग) राज्येषु (घ) राज्यैः

(5) विद्या का

(क) विद्याम् (ख) विद्यायाः (ग) विद्या (घ) विद्यया

5. कोष्ठकात् समुचितं रूपं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत ।

(1) ..... पुस्तकालये पठति । (छात्राः, छात्रौ, छात्रः)

(2) ..... क्रीडांगणे खेलतः । (क्रीडकः, क्रीडकाः, क्रीडकौ)

(3) ..... गुरुं नमामि । (त्वम्, अहम्, वयम्)

(4) ..... दर्शनाय गच्छन्ति । (भक्ताः, भक्तौ, भक्तः)

(5) ..... सरस्वतीं वन्दामहे । (आवाम्, वयम्, अहम्)

(6) ..... वने अवसन् । (मुनयः, मुनिः, मुनी)

(7) ..... राजकुलं सेवन्ते । (पण्डितः, पण्डितौ, पण्डिताः)

(8) ..... किं लिखति । (त्वम्, अहम्, सः)

6. कोष्ठकस्य मूल शब्दम् आधृत्य रिक्तस्थानं पूरयत ।

(1) शीतलेन ..... सन्तोषः भवति । (जल)

(2) पाण्डवाः ..... अवसन् । (विराटनगर)

(3) ..... कार्याणि सिद्ध्यन्ति । (उद्यम)

(4) वयं ..... सेवकाः स्मः । (राष्ट्र)

(5) शिवस्य ..... चन्द्रः विभाति । (मस्तक)

(6) विद्यया ..... भवति । (सुख)

(7) ..... वचनं पालनीयम् । (ज्येष्ठ)

(8) गुरोः ..... व्रजामि । (शरण)

(9) ..... हस्ते पद्मानि । (गुरु)

(10) वृक्षाः ..... भवन्ति । (भूमि)

अभ्यास 3 : क्रियापदानि

(1) वर्तमान काल : (लट्लकारः) कक्षा आठ में तथा आगे के पुनरावर्तन पाठ में आप वर्तमानकाल के क्रियापदों के विषय में सीख चुके हैं । उसी के संदर्भ में यहाँ एक विशेष बात पर आपको सविशेष ध्यान देना है । जैसे :

(1) अधीशः पठति ।

(2) तोषा नृत्यति ।

(3) त्रीशा लिखति ।

(4) हार्दी पूजयति ।

उपर्युक्त सभी वाक्यों में वर्तमानकाल के क्रियापदों का उपयोग किया गया है । प्रत्येक क्रियापद के अन्त में आने वाला 'ति' प्रत्यय एक समान है । परन्तु धातु और 'ति' प्रत्यय के मध्य आने वाले वर्ण (ध्वनियाँ) अलग-अलग हैं जैसे : पठति शब्द में पठ् + अ + ति इस प्रकार 'अ' वर्ण आया है । जबकि नृत्यति शब्द में नृत् - य - ति इस प्रकार 'य' वर्ण आया है । इसी तरह लिखित शब्द में लिख् - अ - ति इस प्रकार 'अ' वर्ण आया है । पूजयति शब्द में पूज् - अय - ति में 'अय' ध्वनि आई है । इस प्रकार बीच में आने वाले वर्ण ध्वनियों को 'विकरण' प्रत्यय कहा जाता है । ये विकरण धातु के गण के अनुसार होने के कारण अलग-अलग हैं । संस्कृत भाषा में जितनी धातुएँ हैं उन सभी धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है । इन सभी गणों के विकरण प्रत्यय अलग-अलग हैं । यहाँ आप पहला, चौथा, छठा और दसवाँ गण अर्थात् कुल चार गणों के धातुओं को ध्यान में रखना है । जैसे - पहले गण का विकरण प्रत्यय 'अ', चौथे गण का 'य', छठे गण का 'अ' और दसवें गण का विकरण प्रत्यय 'अय' है ।

इस प्रकार पता चलता है कि :

(1) प्रत्येक धातु को जब क्रियापद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, तब इन धातुओं के साथ प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।

(2) जब प्रत्यय जोड़े जाते हैं, तब काल, धातु का गण, पुरुष और वचन इन चार बातों का ध्यान रखा जाता है ।

अब निम्नलिखित अन्य कुछ वाक्यों को पढ़िए :

(1) विद्यया सुखं लभते ।

(2) बालकः हस्तेन खादति ।

(3) शिशुः मातरं वन्दते ।

इन वाक्यों में जिन क्रियापदों का उपयोग किया गया है, वे सभी वर्तमानकाल, अन्य पुरुष और एकवचन के हैं । इन सभी क्रियापदों में विद्यमान धातुएँ प्रथम गण की हैं । फिर भी पहले और तीसरे वाक्य में आने वाले क्रियापदों के अन्त में 'ते' प्रत्यय है और दूसरे वाक्य में प्रयुक्त क्रियापद के अन्त में

'ति' प्रत्यय परस्मैपद का है । जो 'ते' प्रत्यय है वह आत्मनेपद का है । कुछ धातुओं में परस्मैपद के प्रत्यय लगते हैं तो कुछ धातुओं में आत्मनेपद के प्रत्यय लगते हैं । जिन धातुओं में परस्मैपद के प्रत्यय लगते हैं, उन्हें परस्मैपदी धातु और आत्मनेपद के प्रत्यय जिन धातुओं में लगते हैं, उन धातुओं को आत्मनेपदी धातु के रूप में पहचाना जाता है । कुछ धातुओं में आत्मनेपद तथा परस्मैपद दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाए जाते हैं । अत: इस प्रकार की धातुओं को उभयपद धातु कहते हैं ।

इस प्रकार प्रत्येक वर्तमान काल के क्रियापदों में यदि धातु परस्मैपदी हो, तो उसमें परस्मैपदी के प्रत्यय और यदि धातु आत्मनेपदी हो तो आत्मनेपदी के प्रत्ययों को जोड़ा जाता है । परस्मैपदी और आत्मनेपदी के मूल प्रत्यय निम्नलिखित हैं :

वर्तमानकाल (परस्मैपद) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	मि	व:	म:
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	सि	थ:	थ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	ति	त:	अन्ति

वर्तमानकाल (आत्मनेपद) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	इ	वहे	महे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	से	इथे	ध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	ते	इते	अन्ते

सार रूप, वर्तमानकाल के क्रियापद में धातु + विकरण प्रत्यय + मूल प्रत्यय इस प्रकार कुल तीन भाग होते हैं । अत: जब आप किसी धातु पर से वर्तमानकाल के क्रियापद बनाएँ तब आप सर्व प्रथम धातु लेंगे तदुपरान्त धातु जिस गण का है, उसके अनुसार विकरण प्रत्यय जोड़ेंगे और अन्त में वक्ता की इच्छा के अनुसार पुरुष और वचन के (यदि परस्मैपदी धातु हो तो परस्मैपदी प्रत्यय और यदि आत्मनेपदी धातु है तो आत्मनेपद के प्रत्यय) मूल प्रत्यय जोड़े जायेंगे । इस प्रकार बनाए गए कुछ क्रियापदों के रूप नीचे दिये गए हैं :

(जिन सुनिश्चित धातुओं के विषय में अभ्यास करना है वे निम्नलिखित है । (गण 1) (परस्मै.) पठ्, हस्, चल्, खेल्, खाद्, पा-पिब्, गम्-गच्छ्, भू-भव्, दृश्-पश्य्, स्था-तिष्ठ्, वस् (आत्मने.), लभ्, भाष्, रम्, वन्द्, मुद्, शुभ् (गण 4) नृत्, कुप्, नश्, क्रुध्, द्रुह् (आत्मने.), विद्, बुध्, मन्, युध्, (गण 6) लिख्, प्र-विश् (आत्मने.), मिल्, मुच्, विद्, प्र + क्षिप् (गण 10) कथ्, गण्, रच्, स्पृह्, पूज्)

'पठ्' पढ़ना (प्रथम गण)

वर्तमानकाल (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	पठामि	पठावः	पठामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	पठसि	पठथः	पठथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	पठति	पठतः	पठन्ति

'लभ्' प्राप्त करना (प्रथम गण)

वर्तमानकाल (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	लभे	लभावहे	लभामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	लभसे	लभेथे	लभध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	लभते	लभेते	लभन्ते

'नृत्' नृत्य करना (चतुर्थ गण)

वर्तमानकाल (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति

'विद्' होना (चतुर्थ गण)

वर्तमानकाल (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते

'लिख्' लिखना (छट्ठा गण)

वर्तमानकाल (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	लिखामि	लिखावः	लिखामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	लिखसि	लिखथः	लिखथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति

'मिल्' मिलना (छट्ठा गण)

वर्तमानकाल (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	मिले	मिलावहे	मिलामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	मिलसे	मिलेथे	मिलध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	मिलते	मिलेते	मिलन्ते

'कथ्' कहना (दसवाँ गण)

वर्तमानकाल (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	कथयामि	कथयावः	कथयामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	कथयसि	कथयथः	कथयथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	कथयति	कथयतः	कथयन्ति

'कथ्' कहना (दसवाँ गण)

वर्तमानकाल (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	कथये	कथयावहे	कथयामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	कथयते	कथयेते	कथयन्ते

उपर्युक्त रूपों में से किसी रूप को पहचानना हो, तो धातु, गण, काल, पुरुष और वचन इन पाँच बातों को स्पष्ट करना पड़ता है । जैसे 'पठति' यदि इस क्रियापद को पहचानना है, तो 'पठ्' धातु, प्रथम गण, वर्तमानकाल, अन्य पुरुष और एकवचन इस तरह कुल पाँच बातों को स्पष्ट करना पड़ता है । (भूतकाल और भविष्यकाल के क्रियापदों के रूपों को पहचानने के लिए इन पाँच बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है ।)

(2) ह्यस्तन भूतकाल (लङ्लकारः)

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) ऋषिः गुरुकुले अपठत् ।

(2) रामलक्ष्मणौ गुरुकुले अपठताम् ।

(3) सर्वे छात्राः गुरुकुले अपठन् ।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त तीन क्रियापद 'पठ्' धातु के हैं । ये सभी क्रियापद ह्यस्तन (अनद्यतन) भूतकाल के हैं । बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं । 'ह्य' अर्थात् भूतकाल । भूतकाल में की गई क्रियाओं के लिए इस प्रकार के क्रियापदों का प्रयोग किया जाता है । इसे 'लङ्' लकार भी कहा जाता है ।

ह्यस्तन भूतकाल (लङ् लकार) के सभी क्रियापदों की धातुओं के आगे 'अ' लगाया जता है, इसे याद रखिए । ('अ' धातु के आगे लगाया जाता है । परन्तु जिस धातु के साथ उपसर्ग जोड़ा जाता है, उसमें उपसर्ग के आगे 'अ' नहीं लगाया जाता, अपितु धातु से पूर्व ही 'अ' लगाया जाता है । जैसे 'अविशत' उपसर्ग विहीन क्रियापद है, परन्तु प्र+अविशत्-प्राविशत् उपसर्ग युक्त क्रियापद है ।) अन्य सभी नियम वर्तमानकाल के रूपों के समान ही रहेंगे । यहाँ सर्व प्रथम ह्यस्तन भूतकाल के परस्मैपदी और आत्मनेपदी के मूल प्रत्यय दिए गए हैं तदुपरान्त चारों गणों के एक-एक धातु के परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी के रूप दिए गये हैं ।

ह्यस्तन भूतकाल (परमैपद) के मूल प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अम्	व	म
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	स् (:)	तम्	त
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	त्	ताम्	अन्

ह्यस्तन भूतकाल (आत्मनेपद) के मूल प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	इ (ए)	वहि	महि
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	थास् (:)	इथाम्	ध्वम्
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	त	इताम्	अन्त

(वर्तमानकाल के क्रियापदों के समान ह्यस्तन भूतकाल के क्रियापदों में भी अ + धातु + विकरणप्रत्यय + प्रत्यय इन चारों का समायोजन किया जाता है । जैसे : अ + पठ् + अ + त् - अपठत् । इस प्रकार बनने वाले कुछ अन्य रूप नीचे दिये गए हैं । ह्यस्तन-भूतकाल को अद्यतन भूतकाल भी कहा जाता है, इसका ध्यान रखिए ।)

'पठ्' पढ़ना, (प्रथम गण) ह्यस्तन भूतकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम
प्रथम पुरुष	मैंने पढ़ा ।	हम दोनों ने पढ़ा ।	हमने पढ़ा ।
मध्यमपुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
मध्यम पुरुष	तुमने पढ़ा ।	तुम दोनों ने पढ़ा ।	तुम सबने पढ़ा ।
अन्यपुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
अन्य पुरुष	उसने पढ़ा ।	उन दोनों ने पढ़ा ।	उन सबने पढ़ा ।

'लभ्' प्राप्त करना, (प्रथमगण) ह्यस्तन भूतकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अलभे	अलभावहि	अलभामहि
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त

'नृत्' नृत्य करना (चतुर्थगण) ह्यस्तन भूतकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्

'विद्' होना (चतुर्थगण) ह्यस्तन भूतकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त

'लिख्' लिखना (षष्ठगण) ह्यस्तन भूतकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्

'मिल्' मिलना (षष्ठगण) ह्यस्तन भूतकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अमिले	अमिलावहि	अमिलामहि
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अमिलथाः	अमिलेथाम्	अमिलध्वम्
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अमिलत	अमिलेताम्	अमिलन्त

'कथ्' कहना (दसमगण) ह्यस्तन भूतकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्

'कथ्' कहना (दसवाँ गण) ह्यस्तन भूतकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त

विशेष : संस्कृत भाषा में भूतकाल की क्रिया को बताने के लिए एक विशेष व्यवस्था भी की गई है । उसके अनुसार वर्तमान काल के क्रियापद के साथ यदि 'स्म' शब्द का प्रयोग किया जाए तो, ये क्रियापद भूतकाल का अर्थ देने लगते हैं । जैसे :

(1) पशुः घासं खादति । (पशु घास खाता है ।)

(2) पशुः घासं खादति स्म । (पशु घास खाता था ।)

आप देख सकते हैं कि दोनों वाक्यों में 'खादति' वर्तमानकाल के क्रियापद समान रूप से प्रयुक्त किए गए हैं । परन्तु जब 'खादति' क्रियापद का प्रयोग 'स्म' के साथ किया गया तो वे भूतकाल का अर्थ देने लगे ।

यदि आप चाहें तो 'व्यासः कथाम् अकथयत् ।' कहने के स्थान पर 'व्यासः कथां कथयति स्म ।' का प्रयोग कर सकते हैं । इसी तरह 'मुनिः भाषते स्म' के स्थान पर 'मुनिः अभाषत् ।' का प्रयोग किया जा सकता है । सभी क्रियापदों के संदर्भ में इस प्रकार की व्यवस्था है, इसे याद रखिए ।

(3) सामान्य भविष्यकाल (लृट्लकारः)

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) सः प्रातः दुग्धं पास्यति ।

(2) मयूरः नर्तिष्यति ।

(3) दीपावलिः आगमिष्यति ।

उपर्युक्त वाक्यों में जिन तीन क्रियापदों का प्रयोग किया गया है वे सभी सामान्य भविष्यकाल के हैं । आने वाले समय को भविष्यकाल कहा जाता है । इसे लृट् लकार भी कहा जाता है । सामान्य भविष्यकाल (लृट् लकार) के सभी क्रियापदों की संरचना में निम्नलिखित कुछ बातों को याद रखना आवश्यक है । जैसे:

(1) (सभी गण के) धातु में विकरण प्रत्यय के रूप में 'स्य' लगाया जाता है । (पा–स्य–ति–पास्यति ।)

(2) कुछ धातुओं में प्रयुक्त 'स्य' विकरण के आगे 'इ' लगाया जाता है । (गम्–इ स्य–ति–गमिष्यति ।)

(3) जब 'स्य' विकरण के आगे 'इ' लगाया जाता है, तब 'स्य' में प्रयुक्त (दनत्य) 'स्' (मूर्धन्य) 'ष्' में परिवर्तित हो जाता है । (ऊपर दिए गए दोनों क्रियापदों को देखिए । 'पास्यति' शब्द में 'स्य' के आगे 'इ' नहीं है, अतः यहाँ (दन्त्य) 'स्' का उपयोग किया गया है । परन्तु गमिष्यति शब्द में 'स्य' के आगे 'इ' लगते ही 'ष्' में परिवर्तित हो गया है ।

सामान्य भविष्यकाल के परस्मैपदी और आत्मनेपद के मूल प्रत्यय वर्तमान काल के प्रत्ययों के समान ही हैं । मात्र उपर्युक्त अनुसार धातु के साथ 'स्य' विकरण प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है । अतः यहाँ सामान्य भविष्यकाल के मूल प्रत्ययों को देने की आवश्यकता नहीं है ।

कुछ धातुओं के सामान्य भविष्यकाल के परस्मैपदी और आत्मनेपदी के निम्नलिखित रूप हैं ।

'पठ्' पढ़ना (प्रथम गण) भविष्यकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति

'लभ्' प्राप्त करना (प्रथम गण) भविष्यकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते

'नृत्' नृत्य करना (चतुर्थ गण), भविष्यकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति

'विद्' होना (चतुर्थ गण), भविष्यकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते

'लिख्' लिखना (षष्ठ गण), भविष्यकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति

'मिल्' प्राप्त करना (षष्ठ गण), भविष्यकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	मेलिष्ये	मेलिष्यावहे	मेलिष्यामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	मेलिष्यसे	मेलिष्येथे	मेलिष्यध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	मेलिष्यते	मेलिष्येते	मेलिष्यन्ते

'कथ्' कहना (दशम् गण), भविष्यकाल, परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति

'कथ्' कहना (दशम गण), भविष्यकाल, आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष (प्रथम पुरुष)	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे
मध्यमपुरुष (मध्यम पुरुष)	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
अन्यपुरुष (अन्य पुरुष)	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते

स्वाध्याय

1. वर्तमानकालस्य क्रियापदानां स्थाने भूतकालस्य योग्यं क्रियापदं लिखत ।

(1) समीरः जनन्याः समीपं व्रजति वदति च ।

(2) वयं तु मेघजलम् एव पिबामः ।

(3) तडागजलं पातुं गच्छामि ।

(4) तं धनस्यूतं तत्रैव त्यजामि ।

(5) अहं तु कुलाचारं न पालयामि ।

2. भूतकालस्य क्रियापदस्य अनुरूपं भविष्यकालस्य क्रियापदं लिखत ।

(1) तमवलोक्य सः अचिन्तयत् ।

(2) कपोतराजः परिवारेण सह गगने व्यसर्पत् ।

(3) कपोतराजः कपोतान् अकथयत् ।

(4) कश्चित् कपोतः सदर्पमवदत् ।

3. उदाहरणानुसारं रूपस्य परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् : भवति । भू धातु, प्रथम गण, परस्मैपद, वर्तमानकाल, अन्य पुरुष, एकवचन

(1) अबोधयत् (2) प्रविशति (3) अपिबत् (4) प्रणमति

(5) वदन्ति (6) गमिष्यामः

4. अधोलिखितेषु वाक्येषु प्रयुक्तस्य स्म-प्रयोगस्य स्थाने ह्यस्तनभूतकालस्य रूपं लिखत ।

(1) छात्राः स्वात्मानं धन्यं मन्यन्ते स्म ।

(2) देशात् जनाः अध्ययनाय आगच्छन्ति स्म ।

(3) गुप्तकाले अत्र वेदाध्ययनमपि प्रचलति स्म ।

(4) पठनं पाठनं च भवति स्म ।

(5) कथाकारः कथां कथयति स्म ।

अभ्यास 4 : कृदन्तपदानि

संबंधक भूतकृदंत और हेत्वर्थकृदंत

(1) संबंधक भूतकृदंत

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

(1) विनीता भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छति ।

(1) विनीता भोजनं करोति, ततः विद्यालयं गच्छति ।

(2) छात्राः सरस्वतीं स्मृत्वा पुराणं पठन्ति ।

(2) छात्राः सरस्वतीं स्मरन्ति तत्पश्चात् पुराणं पठन्ति ।

(3) भक्तः मन्दिरं गत्वा ईश्वरं भजति ।

(3) भक्तः मन्दिरं गच्छति, अनन्तरम् ईश्वरं भजति ।

ऊपर दो-दो प्रकार के वाक्यों को एक साथ दिया गया है । उन वाक्यों में जो रेखांकित पद हैं, वे सभी क्रिया-पद हैं । आप देख सकते हैं कि प्रत्येक वाक्य में दो-दो क्रियापद हैं । परन्तु एक वाक्य जिस अर्थ की अभिव्यक्ति कर रहा है, उसी अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दूसरे वाक्य का प्रयोग किया गया है । यदि वक्ता चाहे तो एक वाक्य के स्थान पर समान अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दूसरे वाक्य का प्रयोग कर सकता है । इस प्रकार के वाक्य के संदर्भ में चार बातों को याद रखना आवश्यक है । जैसे :

(1) जो प्रथम क्रियापद है, वह उपक्रिया होती है । वाक्य में जो दूसरा क्रियापद है, वह मुख्य क्रिया होती है ।

(2) दोनों क्रियाओं के कर्ता एक ही हैं ।

(3) मुख्य क्रिया बनने से पूर्व उपक्रिया बन जाती है और ये उपक्रिया सदैव भूतकाल की होती है ।

इस प्रकार की विशेषता से युक्त वाक्य में (पूर्व क्रिया के) उपक्रिया के लिए संस्कृत में (एक तरफ 'करोति' जैसे तिङन्तपद का प्रयोग किया जा सकता है, तो दूसरी ओर) धातु के साथ क्त्वा > त्वा प्रत्यय जुड़ते हैं । इस 'क्त्वा' प्रत्यय को जोड़कर जिस पद की रचना की जाती है उसे संबंधक भूतकृदंत कहा जाता है ।

निम्नलिखित कुछ संबंधक भूतकृदंत रूपों को देखिए :

(1) कृ + क्त्वा > त्वा = कृत्वा ।

(2) भू + क्त्वा > त्वा = भूत्वा ।

(3) पा + क्त्वा > त्वा = पीत्वा ।

(4) खाद् + क्त्वा > त्वा = खादित्वा ।

(5) गम् + क्त्वा > त्वा = गत्वा ।

(6) दा + क्त्वा > त्वा = दत्वा ।

ऊपर के रूपों को देखने से पता चलता है कि (1) कुछ पदों में मूल धातु के साथ क्त्वा > त्वा जोड़े गये हैं । जैसे : कृ + क्त्वा > त्वा = कृत्वा । (2) कभी-कभी क्त्वा > त्वा प्रत्यय से पूर्व 'इ' ध्वनि जोड़ी जाती है । यथा खाद् + क्त्वा > त्वा = खादित्वा । और (3) कभी-कभी धातु के मूल रूप में थोड़ा परिवर्तन भी होता है । जैसे : पा + क्त्वा > त्वा = पीत्वा । गम् + क्त्वा > त्वा = गत्वा इत्यादि ।

तदुपरान्त इस प्रकार के रूपों के लिए एक विशेष बात का ध्यान रखना चाहिए कि जब कोई धातु उपसर्ग के साथ प्रयुक्त हो, तब उस धातु में जुड़े 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'य' का प्रयोग किया जाएगा । यथा-

(1) अनु + भू + क्त्वा > य = अनुभूय ।

(2) वि + कृ + क्त्वा > य = विकृत्य ।

(3) आ + गम् + क्त्वा > य = आगत्य ।

उपर्युक्त रुपों को देखने से पता चलता है कि (1) उपसर्ग के साथ जुड़ी धातु में क्त्वा > य प्रत्यय के रूप मुख्यत: अपने मूल रूप में ही रहते हैं । (2) जिस धातु का अन्तिम वर्ण स्वर हो और ह्रस्व हो, तो उस धातु और क्त्वा प्रत्यय के बीच 'त' ध्वनि का प्रयोग किया जाता है । जैसे, आ + गम् + क्त्वा > य, गम् त् य = आगत्य ।

आगे के पाठों में जहाँ इस प्रकार के पदों का प्रयोग किया गया है उसमें उपर्लिखित नियमों में से किस नियम का प्रयोग किया गया है, उसे ढूँढ़िए और इस प्रकार के अन्य रूपों के विषय में सीखिए ।

(2) हेत्वर्थ कृदंत

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

(1) छात्रा: पठनाय विद्यालयं गच्छन्ति ।

(1) छात्रा: पठितुं विद्यालयं गच्छन्ति ।

(2) अशोक: दानाय फलं नयति ।

(2) अशोक: दातुं फलं नयति ।

(3) प्रेक्षक: हसनाय नाटकं पश्यति ।

(3) प्रेक्षक: हसितुं नाटकं पश्यति ।

यहाँ दो प्रकार के वाक्य एक साथ दिए गए हैं । इन वाक्यों में रेखांकित पद क्रियापद हैं । उपर्लिखित वाक्यों के समान इन सभी वाक्यों में भी दो-दो क्रियापद हैं । परन्तु दोनों वाक्यों के अर्थ समान हैं । इसलिए यदि वक्ता चाहे तो एक वाक्य के स्थान पर दूसरे वाक्य का प्रयोग कर सकता है । इस प्रकार के वाक्यों के संदर्भ में तीन बातों को याद रखना अतिआवश्यक है । जैसे :

(1) प्रथम क्रियापद उपक्रिया होती है परन्तु दूसरा क्रियापद मुख्य क्रिया होती है ।

(2) उपक्रिया मुख्य क्रिया का हेतु होती है ।

(3) उपक्रिया और मुख्य क्रिया का कर्ता एक ही होता है ।

ऐसी विशेषतावाले वाक्य में उपक्रिया को बताने की दो रीतियाँ हैं : (1) पठन, दान, हसन 'जैसी क्रियावाचक संज्ञाओं में चतुर्थी जोड़कर और (2) जिस क्रिया के वाचक धातु (जैसे - पठ्, दा, हस् इत्यादि) के साथ तुमुन् > तुम् प्रत्यय लगाकर पद बनाया जाता है । तुमुन् उसे हेत्वर्थ कृदंत कहा जाता है । नीचे दिये गये कुछ हेत्वर्थ कृदंत पदों को देखिए :

(1) पा + तुमुन् > तुम् = पातुम् ।

(2) दा + तुमुन् > तुम् = दातुम् ।

(3) भू + तुमुन् > तुम् = भवितुम् ।

(4) खाद् + तुमुन् > तुम् = खादितुम् ।

(5) कृ + तुमुन् > तुम् = कर्तुम् ।

(6) गम् + तुमुन् > तुम् = गन्तुम् ।

उपर्युक्त पदों के देखने से पता चलता है कि (1) कुछ पदों के मूल धातु में सीधे तुमुन् > तुम् प्रत्यय जोड़ा जाता है । जैसे (1) पा + तुमुन् > तुम् = पातुम् । (2) कभी-कभी इन तुमुन् > तुम् प्रत्यय के आगे 'इ' आगम लगाया जाता है । जैसे खाद् + तुमुन् > तुम् = खादितुम् । और (3) कभी-कभी धातु के मूल रूप में थोड़ा परिवर्तन भी होता है । जैसे कृ + तुमुन् > तुम् = कर्तुम् । गम् + तुमुन् > तुम् = गन्तुम् इत्यादि ।

उपसर्ग के साथ वाली धातुओं में जब तुमुन् > तुम् लगाया जाता है, तब कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे

(1) अनु + भू + तुमुन् > तुम् = अनुभवितुम् ।

(2) वि + कृ + तुमुन् > तुम् = विकर्तुम् ।

(3) आ + गम् + तुमुन् > तुम् = आगन्तुम् ।

पठित पाठों में जहाँ इस प्रकार के पदों का प्रयोग किया गया है, उसमें उपर्युक्त किस नियम का प्रयोग किया गया है, उसे ढूँढ़िए तथा इस प्रकार के अन्य रूपों को सीखिए ।

विशेष : उपर्युक्त दोनों प्रकार के संबंधक भूतकृदंत और हेत्वर्थ कृदंत पद अव्यय होते हैं अत: उनका उपयोग जहाँ भी किया जाता है, वहाँ उनका रूप एक समान ही होता है । उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आता है ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितानां कृदन्तपदानां प्रकारं लिखत ।

(1) गत्वा (2) पातुम् (3) रक्षितुम् (4) समागत्य

2. अधोलिखितेषु पदेषु संबंधकभूतकृदन्तपदानां चयनं कुरुत ।

(1) अवलोक्य (2) ज्ञातुम् (3) भूत्वा (4) विहस्य

(5) पराजेतुम्

3. निम्नलिखितानां कृदन्तानां प्रत्ययनिर्देशपूर्वकं प्रकारं लिखत ।

(1) क्षन्तुम् (2) विहाय (3) परित्यज्य (4) गन्तुम्

(5) उपसृत्य (6) गृहीत्वा

4. कोष्टकात् योग्यं पदं चित्वा रेखांकितं पदं परिवर्त्य वाक्यं पुन: लिखत ।

(प्रविश्य, पानाय, आगन्तुम्, अनुभूय, पठितुम्, भूत्वा)

(1) सिद्धार्थ: दु:खम् अनुभवति । संसारं परित्यजति ।

(2) मृग: जलं पातुम् इत: तत: धावति ।

(3) त्रीशा पठनाय विद्यालयं गच्छति ।

(4) शिशव: गृहम् आगमनाय यतन्ते ।

(5) शृगाल: गुहां प्रविशति । शयनं करोति ।

5. अधोलिखितानां पदानां स्थाने योग्यं कृदन्तपदं लिखत ।

(1) पानाय .....

(2) गमनाय .....

(3) दर्शनाय .....

(4) पठनाय .....

(5) लेखनाय .....

अभ्यास 5 : समास-परिचयः

तत्पुरुष और द्वन्द्व समास

संस्कृत भाषा में समास मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं : (1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष (3) बहुव्रीहि (4) द्वन्द । परन्तु इनमें से आप तत्पुरुष (कर्मधारय सिवाय) और द्वन्द समास के विषय में सीखेंगे ।

समास सीखने से पूर्व समास किसे कहते हैं ? यह जानना जरूरी है । समसनं समासः । समसन अर्थात् संक्षिप्तीकरण (दो या दो से अधिक पद आपस में मिलकर एक हो जाते हैं ।) जैसे, मेघस्य जलम् । इस वाक्य में दो अलग-अलग संज्ञापद हैं परन्तु जब इन्हें समास में बदला जाता है तब 'मेघजलम्' एक संज्ञा पद की रचना होती है । इसी तरह ब्रह्मा च वरुणः च इन्द्रः च रुद्रः च मरुत च । इस वाक्य में एक से ज्यादा संज्ञा पद हैं । इन सभी संज्ञा पदों को समास में परिवर्तित किया जाए तो ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः तो ये सब मिलकर एक संज्ञापद बन जाते हैं । अतः दो या दो से अधिक पदों का संक्षिप्तिकरण ही समास कहलाता है ।

उदाहरण :

(1) समास सदैव संज्ञापदों का संज्ञापद के साथ होता है ।

(2) अलग-अलग दो या दो से अधिक पदों का समास बन सकता है ।

(3) जब संज्ञापद समास में परिवर्तित हो जाते हैं तब संज्ञापदों से जुड़ी हुई विभक्ति प्रत्ययों का लोप हो जाता है । परन्तु अन्तिम संज्ञापद विभक्ति-प्रत्यय से युक्त होता है ।

(4) अलग-अलग उपयोग किए जाने वाले संज्ञापद और समास हो करके उपयोग किए जाने वाले संज्ञापद का अर्थ समान ही होता है ।

(5) किसी समास (मेघजलम्) को तोड़कर जब उसका पहले का रूप दे देना 'विग्रह' कहलाता है । 'विग्रह' का अर्थ है तोड़ना ।

इस प्रकार समास से सम्बन्धित प्राथमिक समझ प्राप्त करने के पश्चात् अब हम क्रमशः तत्पुरुष और द्वन्द्व समास का परिचय प्राप्त करेंगे ।

(1) तत्पुरुष समास

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) सः दशरथस्य पुत्रः रामः गच्छति ।

(1) सः दशरथपुत्रः रामः गच्छति

यहाँ प्रथम वाक्य में जिन दो संज्ञापदों को रेखांकित किया गया है, उन्हीं संज्ञापदों को दूसरे वाक्य में समास के रूप में प्रयुक्त किया गया है (अर्थात् संक्षिप्त रूप) आप समझ सकते हैं कि प्रथम वाक्य में दशरथस्य और पुत्र दो अलग-अलग संज्ञाएँ हैं, और इनके साथ अलग-अलग विभक्ति प्रत्यय जुड़े हुए हैं । परन्तु दूसरे वाक्य में दोनों संज्ञाएँ मिलकर 'समासिक शब्द' में परिवर्तित हो गई । (दशरथ पुत्रः) इसमें अन्तिम पद में विभक्ति प्रत्यय जुड़ा हुआ है । इसका कारण समास है । ऊपर बताये गए चार समासों में से यह तत्पुरुष समास है । (जिन दो या दो से अधिक शब्दों के बीच में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी विभक्तियाँ छिपी रहती हैं उनमें तत्पुरुष समास होता है ।) तत्पुरुष समास के पाँच (भेद हैं) प्रकार हैं । (1) विभक्ति तत्पुरुष (2) कर्मधारय तत्पुरुष (3) द्विगु तत्पुरुष (4) उपपद तत्पुरुष और (5) नञ् तत्पुरुष । इन सभी तत्पुरुष समासों में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता रहती है ।

(I) विभक्ति तत्पुरुष : निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) कृषकः मरणासन्नः अस्ति ।

(2) मेघजलं वर्षति ।

(3) गर्वपूर्णा वाणी वर्तते ।

(4) कुलोचितं कर्म अस्ति ।

(5) दशरथपुत्रः गच्छति ।

इन वाक्यों में रेखांकित सभी पद सामासिक पद (समास) हैं । यदि इन सामासिक शब्दों का विग्रह करें तो (मरणासन्नः) मरणम् आसन्नः, (मेघजलम्) मेघस्य जलम्, (गर्वपूर्णाम्) गर्वेण पूर्णा, ताम्, (कुलोचितम्) कुलाय उचितम्, (दशरथपुत्रः) दशरथस्य पुत्रः दो पद प्राप्त होते हैं विग्रह किए गए सभी पदों को आप ध्यान से देखिए । आपको पता चलेगा कि –

(1) विग्रह किए गए दो पदों में (प्रथम पद) जो पूर्वपद है, उनमें अलग-अलग विभक्तियों का प्रयोग किया गया है ।

(2) परन्तु उत्तर पद (दूसरे पद) में एक समान प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया गया है ।

इस प्रकार पूर्व पद में द्वितीया इत्यादि विभक्तियों का परन्तु उत्तरपद में प्रथमा विभक्ति का उपयोग किया जाता है । इन पदों से बने समास को **'विभक्ति तत्पुरुष'** समास कहा जाता है । उपर्युक्त सभी उदाहरण विभक्ति तत्पुरुष समास के हैं ।

विभक्ति तत्पुरुष समास के विग्रह वाक्य में पूर्वपद से जो विभक्ति जुड़ी होती है, उस विभक्ति के आधार पर ही उस समास को पहाचाना जाता है । जैसे : मरणम् आसन्नः = मरणासन्नः । यही मरणम् प्रथम पद द्वितिया विभक्ति का है अतः इस तत्पुरुष समास को 'द्वितिया तत्पुरुष' के नाम से जाना जाता है । इस प्रकार यदि पूर्वपद में तृतीया विभक्ति हो (जैसे गर्वेण पूर्णा = गर्वपूर्णा), तो ये समास तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी विभक्ति हो तो (कुलाय उचितम् = कुलोचितम्) चतुर्थी तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में पंचमी विभक्ति (जैसे – चोरात् भयम् = चोरभयम्) है तो पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठी विभक्ति है (दशरथस्य पुत्रः = दशरथपुत्रः) तो षष्ठी तत्पुरुष और यदि पूर्वपद सप्तमी विभक्ति (जैसे – वचने कुशलः = वचनकुशलः) में है तो सप्तमी तत्पुरुष कहा जाएगा ।

उस प्रकार विभक्ति तत्पुरुष के द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी तत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष और सप्तमी तत्पुरुष कुल छः प्रकार होते हैं ।

(II) उपपद तत्पुरुष समास : निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) रोगः दोषात् जायते ।

(2) रोगः दोषजः (भवति) ।

यहाँ प्रथम वाक्य में दोषात् जायते दो पदों का उपयोग किया गया है । इसमें प्रथम पद संज्ञापद है, जबकि (दूसरा पद) उत्तरपद क्रियापद है । दोनों पद दूसरे वाक्य में (सामासिक शब्द) समास बनकर 'दोषजः' के रूप में प्रयुक्त हुआ है । आप देख सकते हैं कि मूल में स्थित 'जायते' क्रियापद समास में 'जः' के रूप में प्रयुक्त हुआ है । इस प्रकार के समास को उपपद तत्पुरुष समास कहा जाता है ।

(III) नञ् तत्पुरुष समास : निम्नलिखित प्रयोगों को ध्यान से पढ़िए :

(1) अधर्मः । (2) असत्यम् ।

ऊपर दिए गए उदाहरण भी तत्पुरुष समास के हैं । यदि अधर्म का विग्रह किया जाए तो न धर्मः = अधर्मः, असत्यम् पद का विग्रह न सत्यम् = असत्यम् होता है । समास बनने के पश्चात् पूर्व पद के रूप में प्रयुक्त 'न' पद में से 'न्' का लोप हो जाता है फिर मात्र 'अ' बाकी रह जाता है । परन्तु यदि उत्तर पद किसी स्वर से प्रारम्भ हो, तो वहाँ 'न' पद में से 'न्' का लोप होते ही 'अ' शेष रह जाता है । उसके बाद 'न्' लगाया जाता है । सहजता के लिए ऐसा भी कहा जा सकता है कि स्वर से प्रारम्भ होने वाले पदों के पूर्व 'अन्' लगाया जाता है । जैसे न उचितम् = अनुचितम् और न आगतम् = अनागतम् । इस प्रकार

के समास को नञ् तत्पुरुष समास कहा जाता है । (जब तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द 'न' रहे और दूसरा पद कोई संज्ञा या विशेषण पद रहे तो उसे नञ् तत्पुरुष कहा जाता है । 'न' व्यंजन से पूर्व 'अ' में और स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है । 'न' शब्द एक प्रकार का विशेषण है ।)

(2) द्वन्द्व समास

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति ।

(2) रामलक्ष्मणौ वनं गच्छतः ।

ऊपर दिए गए वाक्य में ब्रह्म-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः और रामलक्ष्मणौ ये दोनों पद समास हैं । इन दोनों पदों का विग्रह वाक्य क्रमशः ब्रह्मा च वरुणः च इन्द्रः च रुद्रः च मरुतः च (= वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः) और रामः च लक्ष्मणः च (= रामलक्ष्मणौ) होते हैं । इस प्रकार जिस समास का विग्रह करने पर दो पदों के बीच 'च' शब्द का प्रयोग किया गया हो उसे द्वन्द्व समास कहा जाता है । (जब दो या अधिक संज्ञाएँ इस प्रकार जुड़ी रहती है कि उनके बीच में 'च' (और) छिपा रहे तो उसमें द्वन्द्व समास होता है ।)

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) विवेकः पाणिपादम् प्रक्षालयति ।

(2) समीरः वीणामृदङ्गम् वादयति ।

इन वाक्यों में प्रयुक्त और वीणामृदङ्गम् दोनों द्वन्द्व समास के उदाहरण हैं । उनका विग्रह क्रमशः इस प्रकार होगा । पाणि च पादौ च (= पाणिपादम्) । वीणा च मृदङ्गः च (= वीणामृदङ्गम्) । आप देख सकते हैं कि यहाँ भी समास का विग्रह ऊपर के अनुरूप ही है परन्तु समास में परिवर्तित होने के पश्चात् दोनों में एकवचन का प्रयोग किया गया है । (जब उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः द्विवचन और बहुवचन का प्रयोग किया गया है ।)

सामासिक शब्द बनने के पश्चात् वचन की भिन्नता के कारण द्वन्द्व समास दो प्रकार के होते हैं । (1) इतरेतर द्वन्द्वः । और (2) समाहार द्वन्द्वः । जिन प्रयोगों (सामासिक शब्द) में द्विवचन या बहुवचन का प्रयोग किया जाता है उन्हें इतरेतर द्वन्द्वः समास कहा जाता है । परन्तु जिन (सामासिक शब्दों) प्रयोगों में एक वचन का प्रयोग किया जाता है, उन्हें समाहार द्वन्द्व समास कहा जाता है । (समाहार द्वन्द्व समास सदैव नपुंसकलिंग में होता है । इस बिन्दु पर विशेष ध्यान दीजिए ।)

स्वाध्याय

1. अधोलिखितानां पदानां समासनाम लिखत ।

(1) कुलाचारः (2) तातपुत्रौ (3) मरणासन्नः (4) भोजयुवकौ

(5) धाराधिपतिः (6) शाल्मलीतरुः (7) विपत्कालः (8) वापीजलानि

2. निम्नलिखितानि पदानि संयोज्य योग्यं समासं विरचयत ।

(1) सूर्य + अस्तकालम् (2) सर्व + अङ्गः (3) पृष्ठ + भागः (4) कार्य + साधिका

(5) विचार + मुद्रा (6) जन + समूहः (7) दुर्ग + अध्यक्षः

3. क-विभागं ख-विभागेन सह संयोजयत ।

क	ख
(1) विचारमुद्रा	(1) इतरेतरद्वन्द्वसमासः
(2) वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः	(2) समाहारद्वन्द्वः
(3) चलाचलम्	(3) षष्ठीतत्पुरुषः
(4) आपद्गतः	(4) द्वितीयातत्पुरुषः
	(5) तृतीयातत्पुरुषः

अभ्यास 6 : सन्धिः

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) अहं जलं पातुम् इच्छामि ।

(2) तडागं गन्तुं निर्गच्छति ।

ऊपर दिए गए वाक्य में प्रयुक्त अहं, जलं, तडागं तथा गन्तुं पदों में आपने कुछ वर्णों के ऊपर बिन्दु देखा होगा, इन बिन्दुओं को 'अनुस्वार' कहा जाता है । संस्कृत साहित्य में इसे एक स्वतंत्र वर्ण माना जाता है । इसका उच्चारण मुख और नाक दोनों के साथ किया जाता है । (अनुनासिक) सामान्यतः इसका उच्चारण 'म्' के समान किया जाता है ।

इन अनुस्वार वाक्यों में दो प्रकार दिखाई देते हैं : (1) वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अन्त में जैसे बालिकः पुस्तकं पठति । और (2) शब्द के मध्य में जैसे दंडः । इन दोनों प्रकार के अनुस्वार के संदर्भ में संधि के मुख्य नियम इस प्रकार हैं :

(1) वाक्य में प्रयुक्त शब्द (पद) के अन्त में यदि 'म्' आए और उसके तुरन्त बाद कोई व्यंजन वर्ण से प्रारम्भ होने वाला वर्ण आए तो ऐसे 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) किया जाता है । जैसे, अहं जलं पातुम् इच्छामि । जैसे, अहं, जलं, पातुम् इच्छामि । इस वाक्य में आप देख सकते हैं कि अहम् पद के अन्त में 'म्' वर्ण है, इसके तुरन्त बाद प्रयुक्त पद (जल) व्यंजन वर्ण से प्रारम्भ होता है । अतः 'म्' के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है । परन्तु 'पातुम्' पद में 'म्' के स्थान पर अनुस्वार का उपयोग नहीं किया गया है, परन्तु इस पद (इच्छामि) का प्रारम्भ व्यंजन से न होकर स्वर से हुआ है । (यदि यहाँ व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले किसी शब्द का प्रयोग होता, तो अनुस्वार किया जाता) उदाहरण : अहं जलं पातुं गच्छामि । अतः यहाँ अनुस्वार का उपयोग न करते हुए 'म्' का उपयोग किया गया है ।

(2) पद (शब्द) के मध्य भाग में अनुस्वार के बाद यदि कोई व्यंजन (श्, ष्, स्, ह् ऊष्माक्षर और य्, र्, ल्, व् अन्तःस्थ वर्णों के अतिरिक्त आए तो अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग के पाँचवें (अनुनासिक) वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न् ही म्) में परिवर्तित हो जाता है । जैसे, दंडः यहाँ द पर जो बिन्दु दिखाई दे रहा है, वह अनुस्वार है । उसके बाद 'ड' वर्ण है अतः यहाँ 'ड' अपने वर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण् - ट वर्ग) के पाँचवें वर्ण में (ण्) परिवर्तित हो जाएगा । जैसे दण्डः ।

ध्यान रखिए : क-वर्ग अर्थात् क् ख् ग् घ् ङ् , च-वर्ग अर्थात् च् छ् ज् झ् ञ्, ट-वर्ग अर्थात् ट् ठ् ड् ढ् ण्, त-वर्ग अर्थात् त् थ् द् ध् न् और प-वर्ग अर्थात् प् फ् ब् भ् म् । इस प्रकार यदि अनुस्वार के बाद क् ख् ग् घ् में से कोई भी वर्ण आए तो अनुस्वार के स्थान पर अपने वर्ग के पाँचवें वर्ण (ङ) में परिवर्तित हो जाएगा । जैसे - अंकः > अङ्कः । पंखः > पङ्खः । गंगा > गङ्गा । संघ > सङ्घः । ऐसे ही अन्य वर्ग के वर्णों की संधि प्रक्रिया भी समझिए ।

स्वाध्याय

1. उदाहरणानुसारं पदेषु अनुनासिकं लिखत ।

उदाहरणम् : शंभु (प-वर्ग) शम्भुः ।

(1) पंडितः (2) अहंकारः (3) चंपा (4) भंजयितुम्

2. निम्नलिखितानि वाक्यानि अनुस्वारप्रयोगपूर्वकं पुनः लिखत ।

(1) प्रतीक्षाम् कर्तुम् अर्हसि त्वम् ।

(2) पूर्वम् अत्र अष्टादशविद्यायाः पठनम् पाठनम् च भवति स्म ।

(3) अहम् त्वाम् कस्यचित् गुप्तचरम् मन्ये ।

(4) सत्यम् तपो ज्ञानम् अहिंसताम् च विद्वत्प्रणामम् च सुशीलताम् च ।

3. उदाहरणानुसारं वाक्येषु अनुनासिकं परसवर्णत्वेन परिवर्त्य लिखत ।

उदाहरणम् : फलं खादामि । — फलङ् खादामि ।

(1) भद्रमिदं न पश्यामि ।

(2) अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रः ग्रहणं गतः ।

(3) स्वकीयं प्रयोजनं च संपादयति ।

(4) अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति ।

अभ्यास 7 : अव्ययपदानि

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि ।

(2) परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति ।

(3) नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्ति इति तर्कयामि ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में जिन पदों का उपयोग किया गया है उनमें से कुछ संज्ञापद, कुछ क्रियापद (तिङत क्रियापद) हैं । इन दोनों प्रकार के पदों के विषय में आप सीख चुके हैं । अतः आप इन्हें सरलता से पहचान सकते हैं । परन्तु जिन पदों को रेखांकित किया गया है, उन्हें ध्यान से पढ़िए, वे सभी अव्यय पद हैं ।

अव्यय पद की पहचान करते हुए बताया गया है कि

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

अर्थात् जिस पद का तीनों लिंग, सभी विभक्तियों में तथा सभी वचनों में व्यय न हो अर्थात् परिवर्तन न हो, उसे अव्यय कहते हैं । 'अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जिनके रूप में कोई विकार न उत्पन्न हो, जो सदा एक सा रहे । इन पदों पर लिंग, वचन, विभक्ति और काल के परिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं होता ।' आप जानते हैं कि संज्ञा पद किसी एक लिंग में होता है और ये संज्ञापद सात विभक्तियों और तीन वचनों में अलग-अलग रूप होते हैं । अभ्यास तीन में आप सीख चुके हैं । वक्ता अपनी आवश्यकता अनुसार उनका उपयोग करते हैं । जैसे -

(1) छात्रः अत्र पठति ।

(2) त्वम् अत्र छात्रान् पश्यसि ।

(3) छात्राय अत्र पुस्तकं ददाति ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'छात्र' संज्ञा पद का अलग-अलग रूपों में उपयोग किया गया है । परन्तु तीनों वाक्यों में प्रयुक्त 'अत्र' पद का समान रूप से प्रयोग किया गया है । अतः एक समान प्रयुक्त शब्द अव्यय है । रूप से प्रयोग किया गया है । अतः एक समान प्रयुक्त शब्द अव्यय है ।

प्रत्येक पाठ के अन्त में दी जाने वाली टिप्पणी में पाठ में प्रयुक्त अव्ययों का अर्थ दिया गया है ।

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) नूनम् (निश्चयेन) अस्मिन् बिले सिंहः अस्ति ।

(2) छात्रः अत्र (अस्मिन् स्थाने) पठति ।

(3) वर्षा कदा (कस्मिन् काले) भवति ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में जो रेखांकित पद हैं वे अव्यय पद हैं । इन अव्यय पदों का जो अर्थ है, वही अर्थ देने के लिए विभक्ति और वचन से युक्त संज्ञापद कोष्ठक में दिए गए हैं । अतः आप ध्यान रखिए कि कुछ पद ऐसे भी हैं कि जिनके स्थान पर विभक्ति-वचन से युक्त संज्ञा पदों का उपयोग भी किया जा सकता है । कुछ अव्यय निम्नलिखित प्रकार से हैं :

अद्य (अस्मिन् दिने), **श्वः** (आगामी दिवसः), **ह्यः** (गतः दिवसः), **इदानीम्** (अस्मिन् काले), **अधुना** (अस्मिन् काले), **सम्प्रति** (अस्मिन् काले), **यदा** (यस्मिन् काले), **तदा** (तस्मिन् काले), **कदा** (कस्मिन् काले), **सर्वदा** (सर्वस्मिन् काले), **यत्र** (यस्मिन् स्थाने), **तत्र** (तस्मिन् स्थाने), **कुत्र** (कस्मिन् स्थाने), **सर्वत्र** (सर्वस्मिन् स्थाने), **यतः** (यस्मात् कारणात्), **ततः** (तस्मात् कारणात्), **अतः** (अस्मात् कारणात्), **कुतः** (कस्मात् कारणात्), **यथा** (येन प्रकारेण), **तथा** (तेन प्रकारेण)

(**विशेष :** आगे आप अभ्यास 5 में संबंधक भूतकृदन्त और हेत्वर्थ कृदन्त पदों के विषय में सीख चुके हैं । वे भी अव्यय ही हैं ।)

स्वाध्याय

1. अधोलिखितानाम् अव्ययानाम् अर्थं लिखत ।

(1) कुत्र (2) तदा (3) प्रातः

(4) श्वः (5) न (6) वा

2. रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(1) ..... राजा तथा प्रजा । (यथा, तदा, कदा)

(2) सूर्यप्रकाशः ..... अस्ति । (सर्वत्र, कस्य, यतः)

(3) पिता ..... प्रवासं गमिष्यति । (यतः, कदा, यत्र)

(4) मम समीपम् ..... आगच्छ । (तत्र, यत्र, अत्र)

(5) ..... नर्मदा वहति ततः गङ्गा न वहति । (यत्र, तत्र, यतः)

3. अधोलिखितानाम् अव्ययानाम् उपयोगेन वाक्यानि रचयत ।

उदाहरणम् : अत्र-तत्र । अत्र पुस्तकम् अस्ति तत्र आसन्दः अस्ति ।

(1) यदा-तदा .....

(2) यतः-ततः .....

(3) सर्वत्र .....

(4) कदा .....